Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 नवंबर 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 11, नवंबर 2023

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चो,

साल भर में नवम्बर का महीना हम सब के लिए उत्सव व उमंग से भरा होता है. इस माह हम हमारे राज्य की स्थापना दिवस के साथ साथ देश के महान विभूति मदन मोहन मालवीय, पंडित जवाहरलाल नेहरू,रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गांधी, कवि कालिदास, एवं गुरुनानक जी का जयंती मानते है।

इस बरस तो नवम्बर महीने में ही खुशियों का उत्सव दीपावली भी हैं. आप घर में परिवार जनों के साथ मिलकर दिवाली की साफ सफाई में मदद भी कर रहे होंगे. बाजार में अपने मन पसंद की खरीदी ने आपके उत्साह को दोगुनी कर दिया होगा. दीपावली का त्योहार हमें अंधकार से प्रकाश को ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है. इस अवसर पर हम एक दूसरे को दीप एवं मिठाई भेंट दीपावली की बधाई देते हैं।

इष्ट मित्रों व परिवार जनों से मिलने गाँव भी जाते है। बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलता है तो हमारी खुशियां दोगुनी हो जाती है। पर ध्यान रहे इन सब के बीच हमें अपनी पढ़ाई की तारतम्यता बनाये रखना है. दिवाली अवकाश पर मिले गृह कार्य को भी समय पर पूरा करें.

और हाँ ! एक बात और किलोल में रचनायें भेजना व किलोल पढ़ना न भूलें.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

संपादक 2

गाँव का मेला 9

श्रमदान 10

रेडियो के विस्तार पर सभी को बधाईयां हो 11

पंचतंत्र की कहानी 12

चन्द्रयान तीन 14

किताब 15

विज्ञान 16

अधूरी कहानी पूरी करो 17

बाज की उड़ान 17

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 17

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 19

प्रिया राजपूत, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, जिला मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 19

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 21

किसान और दो घड़ों की कहानी 21

भाषा हमारी 22

सृजन का प्रतीक विश्वकर्मा 24

एक नया संविधान 26

चित्र देख कर कहानी लिखो 27

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 27

हमारा परिवार संयुक्त परिवार 27

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 30

माही बंजारे, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 31

मेरा परिवार 31

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 32

गौ माता से भी करो प्यार 33
जय गनेश देवता 35
डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन 36
गीता की महिमा 38
विश्व गुरु भारत 40
दीपावली 41
सच्चाई को लेखनी से सलाम करते हैं 42
सफलता की राह 44
नवरात्रि 46
असली भगवान और असली मंदिर 48
माँ की ममता , पिता का प्यार 50
बंदर ने पहली बार बनाया घर 51
ओ कान्हा 53
मेरी माटी मेरा देश 55
चंद्रयान 57
स्वच्छता रैली 59
नारी 60
एकता की पहचान है हिन्दी 62
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी 63
एक दोस्त ऐसा भी 65
हमारे बुजुर्ग 67
दीवाली का त्योहार 68
वीर गाथा 69
जनऊला 71
माँ की याद 73
देश के प्यारे बच्चों 75
चिड़िया और दाल का दाना 77
नारी 79
पेड़ 81

जुनून पर कविता 82
आकर्षक खिलौने 83
हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी धरोहर 85
हरतालिका तीजा के दिन आगे 87
तीजा के तिहार 88
घनघोर वर्षा 90
तीजा-पोरा 91
दोहे 92
बेजुबान पशु पक्षी 94
कोशिश कर 96
1 से 10 तक गिनती 97
हमारी सेना 98
अपना पराया 99
सीख 101
होली 102
पंछी 103
समय 104
तुझपे कुर्बान मेरी जान 106
सतत चलना ही जीवन 107
गुरु की कीजै नित सम्मान 108
नये सपने सजायेंगे 110
मेरा स्कूल 111
ताला 113
भालूजी 115
टी . वी 116
खटमलजी 117
तितली 120
विद्या मंदिर 122
चिंता और गुस्सा 123

बोझ नही हैं,आशीर्वाद हैं- वृद्ध 125
कहाँ नन्दा गे घिरनी,खड़खड़िया 127
उपकारी वृक्ष 128
पढ़ाई में रुचि कैसे जागृत करें ? 129
मैं हूं पेड़ 131
चंदा मामा 132
विलुप्त होती गिद्ध प्रजाति के संरक्षण से रुकेगा संक्रमण का फैलाव 134
सुना नोनी कर गोएठ 137
उठा बिहनिया 139
पहेलियाँ 140
विरह 142
जाइ म 144
दिपावली 146
ददू भईया 147
अंतिम साँस तक लड़ना होगा 148
शरद ऋतु 149
गूगल बनाम हृदय 150
विश्व गुरु 151
मुनिया रानी 153
सलिल की माँ और पत्तलें 154
हरियर हे धानी दाई 156
मोबाइल 158
तीजा के करुभात 160
नूतन भोर हुआ है 162
दो पड़ोसियों की कहानी 163
गाँधी जी 164
बापू जी 165
गनपति बबा 167
कान्हा 168

शिक्षक और शिक्षा 169
शिक्षक दिवस आ गए 170
आई है राखी..... 171
चंद्रयान- 3 172
राखी के दिन आगे 173
आबे मोर दूवरिया 174
तिरंगा का सम्मान 175
मौज मनाओ जी 176
अलबेले पेड़..... 177
चिड़िया बोली 178
बरगद..... 179
स्वतंत्र राज्य - मोर छत्तीसगढ़ 180
सुकून की चाह..... 182
जल 184
मेरे प्यारे दादा जी..... 185
शिक्षा है अनमोल..... 186
शिक्षा बहुत ज़रूरी है 188
देवारी तिहार 190
कुत्ते हुए व्याकुल..... 191
प्रकाश के घेरे में..... 192
गुब्बारे वाला..... 194
आगे बढ़ते जाना..... 195
चाचा नेहरू 196
लो फिर से आ गई दिवाली 198
बंटी की जिद..... 200
आओ पेड़ लगाए हम 202
खा ले मिठाई 204
माता रानी..... 206
पसंद अपनी अपनी 208

चीकू 210
किस्मत की क्या बात है 212
जगमग दीप जले 213
मुनिया रानी 215
दूर नही अब चंदा मामा 216
दीपावली 218
बहुत कुछ है 220
दुविधा 222

गाँव का मेला

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

गुमसुम क्यों बैठे हो भैया,
चलो देखें गाँव का मेला.

मेला में है चरखी-झूला,
खेल- खिलौने वाला ठेला.

लगी हुई है बहुत दुकानें,
बड़ी भीड़ है रेलम- रेला.

किताब घर में बहुत किताबें,
लो खरीद, मत करो झमेला.

सस्ता- महंगा फल लेकर ही,
भूख मिटाओ, खाओ केला.

जलेबी छान रहा हलवाई,
खा मत लेना चुप्प अकेला.

गुब्बारे भी लेकर चलना,
बेच रहा है कालू चेला.

हुई शाम अब चल रे भैया,
बढ़िया लगा गाँव का मेला.

*****

श्रमदान

रचनाकार- श्रीमती ज्योति बनाफर, बेमेतरा

आवव संगी चलव मितान
हम सब करबोन अब श्रमदान.

कचरा के अब हो ही निदान
स्वच्छ भारत म करबो अभिमान.

जम्मो मिलके करबो श्रमदान
झन छूटे मोहल्ला अउ गौठान.

सबले बड़े हे श्रमदान
भारत के अब बढ़गे मान.

बापू के संदेश पहुंचाना हे
हर घर स्वच्छ बनाना हे.

गंदगी ला दूर भगाना हे
निरोगी जीवन बिताना हे.

सुन लो नोनी बाबू सियान
सफल बनाबो स्वच्छता अभियान.

हम सब कारबोन अब श्रमदान
आवव संगी चलव मितान.

*****

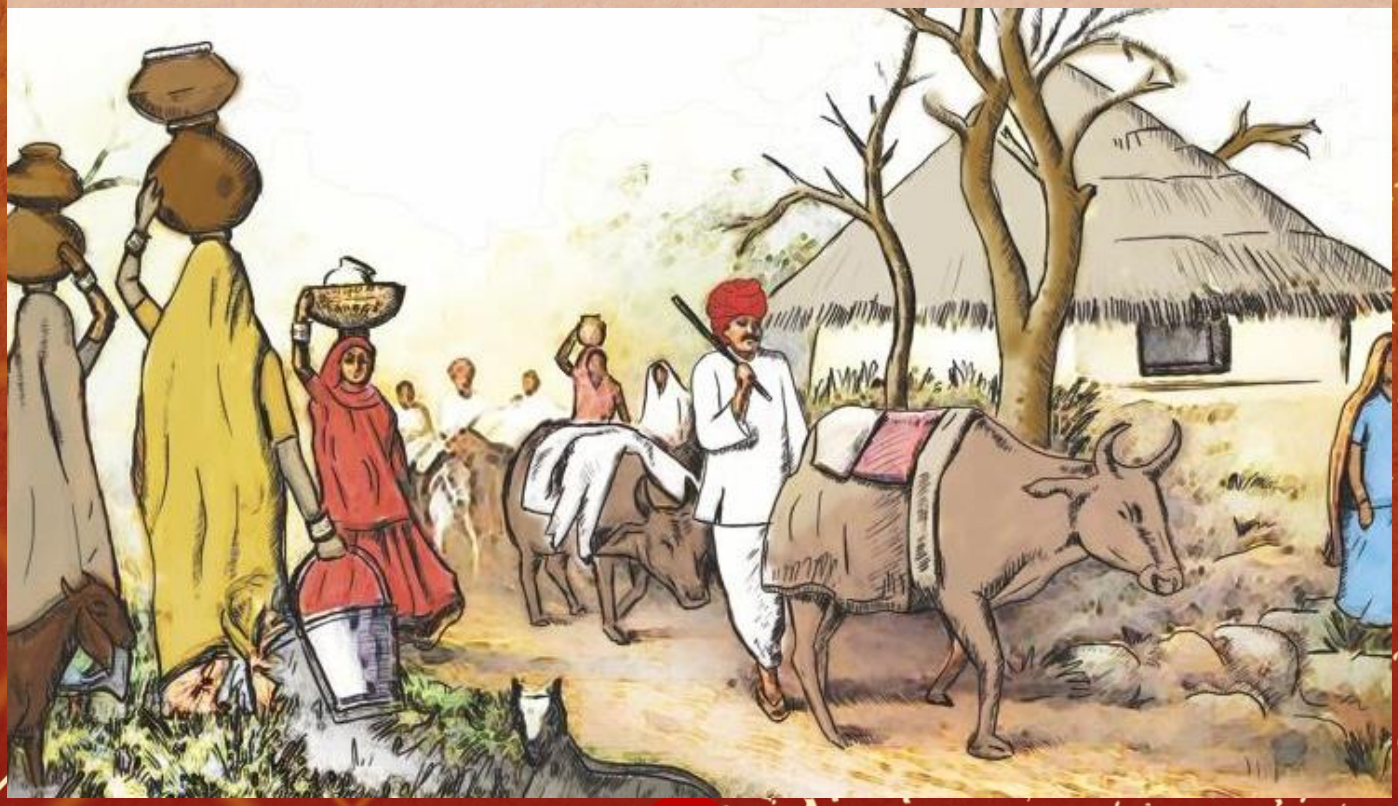

रेडियो के विस्तार पर सभी को बधाईयां हो

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

रेडियो के शौकीन बड़े बुजुर्गों को सैल्यूट हो
सभी साझा करता है चाहे गीत या मन की बात हो
रेडियो के विस्तार पर सभी को बधाईयां हो
मन की बात से पीएम रेडियो से जुड़े बधाईयां हो

रेडियो जैसे उत्कृष्ट माध्यम को अपनी प्रतिभा
रचनाओं से समृद्ध करने वालों को रेडियो
फिर से रफ्तार में आने पर लख़ लख़ बधाईयां हो
रेडियो प्रेमियों की रेडियो से कभी जुदाई नां हो

रेडियो सकारात्मक साझा करने की बधाईयां हो
जीवनमें गुणात्मक परिवर्तन लाभकी बधाईयां हो
परेशानी में गीत मेरे मीत रेडियो को बधाईयां हो
आपस में जोड़ने अद्भुत साधन की बधाईयां हो

*****

पंचतंत्र की कहानी

मूर्ख ऊंट की कहानी

एक घना जंगल था, जहां एक खतरनाक शेर रहता था. कौआ, सियार और चीता उसके सेवक के रूप में हमेशा उसके साथ रहते थे. शेर रोज शिकार करके भोजन करता और ये तीनों उस बचे हुए शिकार से अपना पेट भरते थे.

एक दिन उस जंगल में एक ऊंट आ गया, जो अपने साथियों से बिछड़ गया था. शेर ने कभी ऊंट नहीं देखा था. कौवे ने शेर को बताया कि यह ऊंट है और यह जंगल में नहीं रहता. शायद पास के गांव से यह यहां आ गया होगा. आप इसका शिकार करके अपना पेट भर सकते हो. चीता और सियार को भी कौवे की बात अच्छी लगी.

तीनों की बात सुनकर शेर ने कहा कि नहीं यह हमारा मेहमान है. मैं इसका शिकार नहीं करूंगा. शेर, ऊंट के पास गया और ऊंट ने उसे सारी बात बताई कि वो किस प्रकार अपने साथियों से बिछड़कर जंगल में पहुंचा. शेर को उस कमजोर ऊंट पर दया आई और उससे कहा कि आप हमारे मेहमान हैं, आप इस जंगल में ही रहेंगे. कौआ, चीता और सियार इस बात को सुनकर मन ही मन ऊंट को कोसने लगे.

ऊंट ने शेर की बात मान ली और जंगल में ही रहने लगा. जल्दी ही जंगल की घास और हरी पत्तियां खाकर वह तंदुरुस्त हो गया.

इस बीच एक दिन शेर की जंगली हाथी से लड़ाई हो गई और शेर बुरी तरह से घायल हो गया. वह कई दिन तक शिकार पर नहीं जा सका. शिकार न करने पर शेर और उस पर निर्भर कौआ, चीता व सियार कमजोर होने लगे.

जब कई दिनों तक उन्हें कुछ भी खाने को नहीं मिला, तो सियार ने शेर से कहा कि महाराज आप बहुत कमजोर हो गए हैं और अगर आपने शिकार नहीं किया, तो हालत और ज्यादा खराब

हो सकती है. इस पर शेर ने कहा कि मैं इतना कमजोर हो गया हूं कि अब कहीं भी जाकर शिकार नहीं कर सकता. अगर तुम लोग किसी जानवर को यहां लेकर आओ, तो उसका शिकार करके मैं अपना और तुम तीनों का पेट भर सकता हूं.

इतना सुनते ही सियार ने तपाक से कहा कि महाराज अगर आप चाहें तो हम ऊंट को यहां लेकर आ सकते हैं, आप उसका शिकार कर लीजिए. शेर को यह सुनकर गुस्सा आ गया और बोला कि वह हमारा मेहमान है, उसका शिकार मैं कभी नहीं करूंगा.

सियार ने पूछा कि महाराज अगर वो स्वयं आपके सामने खुद को समर्पित कर दे तो? शेर ने कहा तब तो मैं उसे खा सकता हूं.

फिर सियार ने कौवे और चीते के साथ मिलकर एक योजना बनाई और ऊंट के पास जाकर बोलने लगा कि हमारे महाराज बहुत कमजोर हो गए हैं. उन्होंने कितने दिनों से कुछ नहीं खाया है. अगर महाराज हमें भी खाना चाहें, तो मैं खुद को उनके सामने समर्पित कर दूंगा. सियार की बात सुनकर कौआ, चीता और ऊंट भी बोलने लगे कि मैं भी महाराज का भोजन बनने के लिए तैयार हूं.

चारों शेर के पास गए और सबसे पहले कौवे ने कहा कि महाराज आप मुझे अपना भोजन बना लीजिए, सियार बोला कि तुम बहुत छोटे हो, तुम भोजन क्या नाश्ते के लिए भी ठीक नहीं हो. फिर चीता बोला कि महाराज आप मुझे खा जाइए, तब सियार ने कहा कि अगर तुम मर जाओगे तो शेर का सेनापती कौन होगा? फिर सियार ने खुद को समर्पित कर दिया, तब कौआ और चीता बोले कि तुम्हारे बाद महाराज का सलाहकार कौन बनेगा.

जब तीनों को शेर ने नहीं खाया, तब ऊंट ने भी सोचा कि महाराज मुझे भी नहीं खाएंगे, क्योंकि मैं तो उनका मेहमान हूं. यह सोचकर वो भी बोलने लगा कि महाराज आप मुझे अपना भोजन बना लो.

इतना सुनते ही शेर, चीता और सियार उस पर झपट पड़े. इससे पहले कि ऊंट कुछ समझ पाता, उसके प्राण शरीर से निकल चुके थे और चारों उसे अपना भोजन बना चुके थे.

कहानी से सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें बिना सोचे किसी की बातों में नहीं आना चाहिए. साथ ही चालाक व धूर्त लोगों की मीठी-मीठी बातों पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए.

*****

चन्द्रयान तीन

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

भारत के मित्र है जो,
शुभता के चित्र है जो.
उनका नमन किया,
मान में सम्मान में.

हार कहाँ सकते है,
हम कहाँ रुकते है.
हम ही तो विश्व गुरु,
विविध विधान है.

प्रज्ञान विक्रम संग,
चाँद पे जमाये रंग.
विश्व को किया है दंग,
भारती की शान में.

चाँद पे जमाके पैर,
देश कर रहा शैर.
रच दिया इतिहास,
आज चन्द्रयान में.

*****

किताब

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

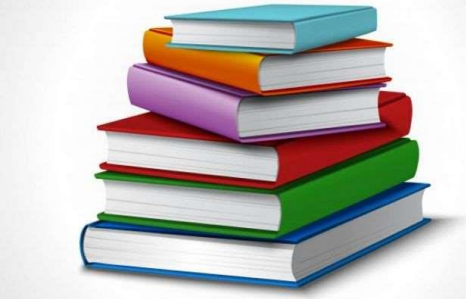

किताबों में लिखेंगे हम,
हमारी प्यार की बातें.
छुपाएं छुप नहीं सकती,
कभी दिलदार की बातें.
तेरी मैं मांग भर दूँगा,
सितारों की छटा लेकर,
मेरी आगोश में आओ,
छोड़ संसार की बातें.

महज है उम्र थोड़े से,
चलो जी भर इसे जी ले.
दिए है ज़ख्म दुनिया ने,
उसे भी आज हम सी ले.
नहीं चिंता कर जग की,
जगत ने क्या दिया हमको.
बहाकर धार अश्कों से,
प्यार के नाम में पी ले.

*****

विज्ञान

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा - आठवीं

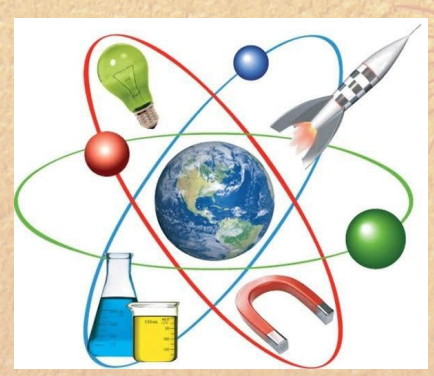

विज्ञान है हमारे जीवन का आधार,
इसके बिना हम ना कर पाए कुछ भी आसानी से आर - पार.
विज्ञान ने ही है किया हर मुश्किल आसान,
विज्ञान नहीं दिया है दुनिया को एक नया जीवनदान.

ऑक्सीजन है हमारा प्राण दाता,
नाइट्रोजन है रोकता आग को.
कैल्शियम है जोड़ता हड्डियों को,
क्लोरीन करता है जल को शुद्ध.

ईश्वर ऐसा करो कि,
मैं भी बन जाऊं वैज्ञानिक.
नई-नई खोजों द्वारा,
मैं बना जग को महान.

हमारी तो पहचान ही है विज्ञान,
इसी विज्ञान से मिला है जीवन को वरदान.
विज्ञान है हमारे जीवन का आधार,
इसके बिना हम ना कर पाए कुछ भी आसानी से आर - पार.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

बाज की उड़ान

एक बार की बात है कि एक बाज का अंडा मुर्गी के अण्डों के बीच आ गया.

कुछ दिनों बाद उन अण्डों में से चूजे निकले, बाज का बच्चा भी उनमें से एक था .

वो उन्ही के बीच बड़ा होने लगा. वो वही करता जो बाकी चूजे करते, मिट्टी में इधर-उधर खेलता, दाना चुगता और दिन भर उन्हीं की तरह चूँ-चूँ करता .

बाकी चूजों की तरह वो भी बस थोड़ा सा ही ऊपर उड़ पाता ,और पंख फड़-फड़ाते हुए नीचे आ जाता .

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

फिर एक दिन उसने एक बाज को खुले आकाश में उड़ते हुए देखा, बाज बडे शान से बेधड़क आसमान की ऊंचाईयों को मापते हुए एक राजा की तरह उड़ान भर रहा था.

तब बच्चा बाज ने बाकी चूजों से पूछा-"इतनी ऊंचाईयों को छूने वाला वो शानदार पक्षी कौन हैं ?"

तब चूजों ने कहा- "अरे वो बाज है, पक्षियों का राजा, वो बहुत ही ताकतवर और विशाल है,लेकिन तुम उसकी तरह नहीं उड़ सकते क्योकि तुम तो एक चूजे हो."

वह थोड़ी देर के लिए चुप रहा, लेकिन उनके मन में हलचल होने लगी.बच्चा बाज ने मन ही मन सोचने लगा-मैं चूजा नहीं हूँ.मैं भी बाज का बच्चा हूँ.मैं बाज की तरह उड़ सकता हूँ.ऐसा सोच कर रोज उन्होंने उड़ने का अभ्यास करने लगा.साथी चूजे उसे उड़ते हुए देखकर उसकी हंसी उड़ाने लगता है लेकिन बाज उनकी बातों को ध्यान न देते हुए अपना कार्य में सतत अभ्यास करते रहता है.

एक दिन वह बच्चा बाज पुनः बाज को आकाश में राजा की तरह उड़ते हुए देखा.वह अपने आप को रोक नहीं सका और पूरी शक्ति के साथ आकाश में उड़ने की कोशिश करने लगा.जैसे-जैसे वह बाज आकाश में उड़ान भरता था.वैसे-वैसे बाज बच्चा भी आकाश में उड़ान भरने लगा.कुछ समय पश्चात स्वतंत्र रूप से वह बाज की तरह आकाश में उड़ने लगा.वह समझ गया कि मैं चूजा नहीं बाज का ही बच्चा हूँ.अपनी उड़ान भरने के बाद पुनः साथी चूज़े के पास आया और उनसे कहा- मैं चूजा नहीं बाज का बच्चा हूँ. हाँ भाई! तुम ठीक बोल रहे हो हमने भी आपका उड़ान देखा है.आप वास्तव में बाज के ही बच्चे हो.आपने सतत अभ्यास एवं लगन से उड़ने का अभ्यास किया. जिसके फलस्वरूप राजा बाज की तरह आसमान में उड़ सके.

बच्चों इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि-बच्चा बाज की तरह अपने हौसलों को बुलंद रखना चाहिए.सतत अभ्यास के द्वारा कठिनाइयों को दूर कर,सफलता प्राप्त किया जा सकता है.

कहा गया है कि -

मंजिल उन्हीं को मिलती है,

जिनकी सपनों में जान होती है.

पंखों से कुछ नहीं होता,

हौसलों से उड़ान होती है.

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

जब बाकी चूंजों की तरह बाज का बच्चा भी बस थोड़ा सा ही उड़ पाता और पंख फड़फड़ाते हुए नीचे आ जाता तो उसे लगता था कि मैं ज्यादा ऊपर नहीं उड़ पाऊंगा. लेकिन उसने एक दिन अपने जैसे पक्षी को आसमान में उड़ते देखा तो वह अपनी माँ से जाकर पूछा माँ हम आसमान में क्यों नहीं उड़ पाते तब माँ ने जवाब दिया.भगवान ने हर पक्षी को अलग-अलग बनाया है उन्होंने हमें थोड़ा ही उड़ने वाला पक्षी बनाया है हम जमीन पर ही रहते हैं वह मान गया और बाकी चूंजों के पास खेलने के लिए चला गया. अगले दिन जब मुर्गी अपने बच्चों के लिए दान ढूंढने गई उस वक्त वह छोटा बाज आसमान में उड़ रहे अपने सामान पक्षी को पुनः देखने के लिए गया.जब वह गया तो इस बार आसमान से एक बाज़ नीचे जमीन पर आया उसने देखा यह बाज का बच्चा जमीन से ऊपर उड़ने की कोशिश कर रहा है लेकिन थोड़ा ही उड़ने के बाद फिर नीचे आ जा रहा है. तब उसने उस बाज के बच्चे से पूछा तुम इतनी ही ऊंचाई पर उड़कर पुनः नीचे क्यों आ जा रहे हो बाज के बच्चे ने ठीक वैसा ही जवाब दिया जैसा की मुर्गी ने बताया था की हर पक्षी अलग-अलग होते हैं और मैं इतना ही उड़ सकता हूं मैं आसमान में नहीं उड़ सकता. लेकिन तुम तो मेरी तरह ही दिखती हो तुम इतने ऊंचे आसमान में कैसे उड़ लेती हो उसने कहा.तब बाज ने जवाब दिया तुम भी ऐसा कर सकते हो चाहो तो मैं तुम्हें उड़ना सिखा दूं. बाज का बच्चा उड़ना चाहता था इसलिए वह बहुत खुश हुआ और बोला ठीक है उस दिन से बाज उसे उड़ना सिखाने लगा जैसे-जैसे वह उड़ना सीखने लगा उसके पंख फड़फड़ाने लगे और अधिक ऊंचाई तक जाने लगा वह बहुत खुश हो रहा था. एक दिन ऐसा आया जब वह ऊंचे आसमान में स्वतंत्र रूप से आसानी से उड़ रहा था.

प्रिया राजपूत, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, जिला मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

धीरे-धीरे समय गुजरता गया.एक दिन बच्चा बाज ने खुले आकाश में उड़ते हुए दूसरे बाज को देखकर,चूजों से कहा-देखो तो बाज बड़े शान से आसमान में उड़ रहा है.मेरी इच्छा है कि मैं भी इस बाज की तरह आकाश में उड़ना चाहता हूँ.ऐसा कहकर वह मन ही मन मुस्कुराने लगा.थोड़ी देर पश्चात बाज की तरह उड़ने के लिए अभ्यास करने लगा.वह बच्चा बाज,बार-बार उड़ता,कुछ दुर उड़ने के बाद,पेड़ की डाल पर जाकर बैठ जाता.दिन भर यह कार्य चलता रहा.उसे देखकर चूजें ने बच्चा बाज को हंसते हुए कहा-"तुम उस डाल पर बैठना बंद करोगे,तभी उस बाज की तरह उड़ सकते हो."बच्चा बाज ने कहा-हाँ भाई!मैं जब भी उड़ने की कोशिश करता हूँ.मुझे वह पेड़ की डाल ही नजर आती है.जिसकी वजह से मैं लंबी उड़ान भर नहीं सकता.

वे दोनों की बातें पेड़ के नीचे बैठे किसान सुन रहा था.वह समझ गया कि जब तक यह डाल रहेगा,तब तक वह बच्चा बाज उड़ नहीं सकता.उन्होंने कुल्हाड़ी उठाई और उस डाल को काट दिया.

थोड़ी देर पश्चात बच्चा बाज ने पुनः पूरी हिम्मत के साथ आसमान में उड़ते-उड़ते उस डाल के पास पहुँच गया,जहाँ वह बैठते थे.लेकिन वह डाल कट जाने के कारण वहाँ बैठ नहीं पाया और वह आगे आकाश की ओर बढ़ते गया.उन्होंने देखा कि बाज आसमान में फिर से उड़ान भर रहा है.जैसे-जैसे बाज आसमान में उड़ रहा था.वैसे-वैसे बच्चा बाज भी आसमान में उड़ान भरने लगा.अब बच्चा बाज भी राजा की तरह की उड़ान भरने लगा.कुछ समय आकाश में उड़ने के पश्चात नीचे चूजों के पास आया कहा-मैं भी अब आकाश में उड़ सकता हूँ.हाँ भाई!आप राजा बाज की तरह उड़ान भर रहे थे.आपको उड़ने से रोकने वाला वह डाल ही था,जिसके वजह से आसमान में नहीं उड़ पा रहे थे.

साथियों इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि बच्चा बाज,उस डाल पर बैठने का आदी हो गया था.जिसके कारण उड़ नहीं सकता था.इसी प्रकार हम लोग जो भी कार्य करते हैं.उनमें नकारात्मक या अनावश्यक बातें आ जाती है और अपनी आदत से मजबूत भी हो जाते हैं,जो ऊंची उड़ान भरने में रुकावट पैदा करती है.जिसके कारण हम लोग अपने कार्य में असफल हो जाते हैं.हमें उन अनावश्यक बातों को ध्यान न देते हुए,अपने कार्य को निरंतर करते रहना चाहिए जिससे कि हम अपने कार्य में सफल हो जायें.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

किसान और दो घड़ों की कहानी

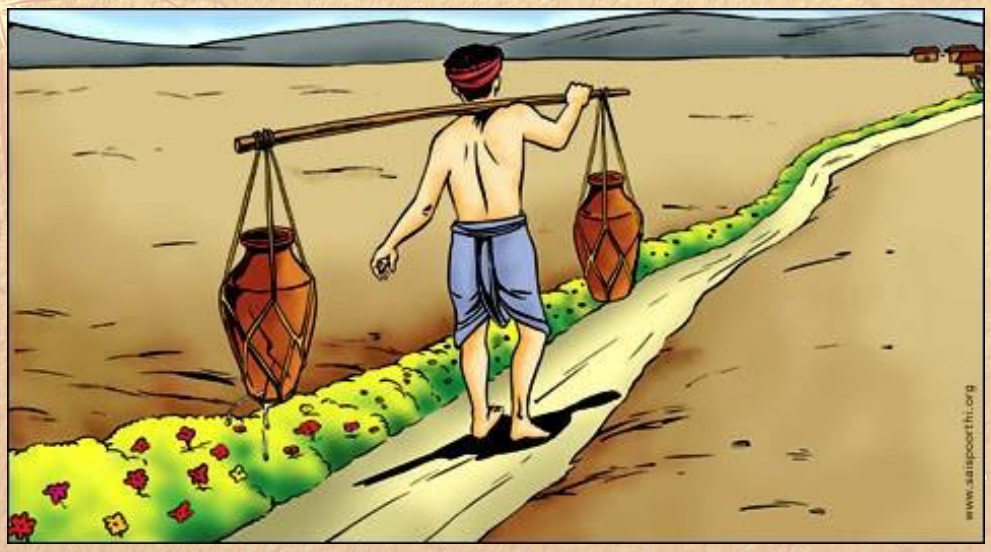

एक गाँव में एक किसान रहता था.

वह रोज सुबह-सुबह उठकर दूर झरनें से साफ पानी लेने जाया करता था.

इस काम के लिए वह अपने साथ दो बड़े घड़े ले जाया करता था. जिन्हें वह एक डण्डे में बाँधकर अपने कन्धे पर दोनों तरफ लटका कर लाया करता था.

उनमें से एक घड़ा कहीं से थोड़ा-सा फूटा था और दूसरा एकदम सही. इसी वजह से रोज़ घर पहुँचते-पहुँचते किसान के पास डेढ़ घड़ा ही पानी बच पाता था.

ऐसा होना नई बात नहीं थी इसको दो साल बीत चुके थे.

सही घड़े को इस बात का बहुत घमण्ड था, उसे लगता था कि वह पूरा का पूरा पानी घर पहुँचता है और उसके अन्दर कोई भी कमी नहीं है. वहीं दूसरी तरफ फूटा हुआ घड़ा इस बात से बहुत शर्मिंदा रहता था कि वह आधा पानी ही घर पहुँचा पाता है और किसान की मेहनत बेकार चली जाती है.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें KILOLMAGAZINE@GMAIL.COM पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

भाषा हमारी

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

सबसे प्यारा भारत देश हमारा.
हिन्दी इसकी शान है.

भारत के जन-जन बोले,
हिन्दी को सलाम है.

भारत के सारे भाषाएँ श्रेष्ठ है.
पर हिन्दी सबसे महान है.

देखो इसकी वर्णमाला को,
अधुरे को पूरा करने के लिए रहते तैयार है.

सुख दुःख को प्रकट करे.
यह भाषा प्रिय हमारी.

दादी की कहानियाँ भी लगती हिन्दी में प्यारी.
प्राचिन युग से आई ये भाषा हमारी.

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी.
बन्धे है संस्कारो मे, हिन्दी की मिठी वाणियो मे.

बचपन मे बोला जो शब्द,
पहला वो था माँ का.

फिर भी अंग्रेजी बोलकर अभिमान दिखाते है.
भारत के ही कुछ लोग हिन्दी बोलने से कतराते है.

बोलो सर्व भाषाएँ पर हिन्दी से नाता न तोड़ो.
हिन्दी भाषा की उन्नती हो, उन्नती हो.

*****

सृजन का प्रतीक विश्वकर्मा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

सृजन का तू ही प्रतीक है
शिल्पकला में तू सटीक है.

देव-शिल्पी तू विश्वकर्मा है
विश्व का तू निर्माणिकर्ता है.

मेहनत,श्रम का तू मूल है
रचना करने में तू अतुल है.

सर्जन का तू ही आधार है
कर्मठता तूझमे आपार है.

नव-निर्माण में तू अग्रणी
तू जगत का मंगलकरणी.

देवलोक का निर्माणिकर्ता है
मृत्युलोक का सृजनकर्ता है.

तू आदि-विज्ञान का दाता है
तू जड़-चेतन का रचयिता है.

तू ब्रह्मपुत्र स्वर्ग का सर्जक है
तू जीव-योनियों का पालक है.

तेरे चरणों में ये शीश नमन है
तुझको शत-शत मेरा वंदन है.

*****

एक नया संविधान

रचनाकार- दिलकेश मधुकर, कोरबा

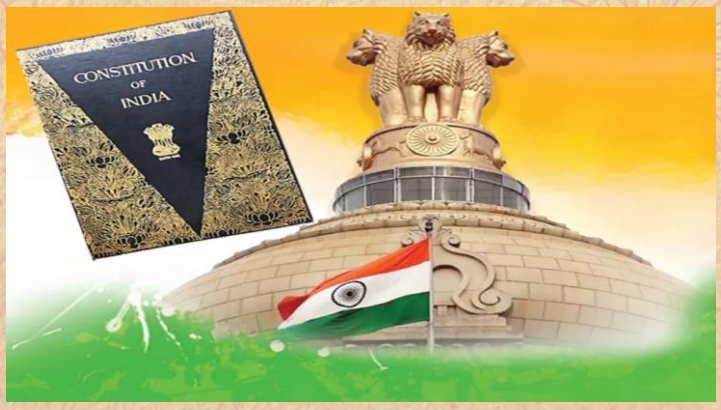

माँ मुझको एक लेखनी दे,
मैं नया इतिहास रचूँगा.
बनकर मैं बाबा अंबेडकर,
एक नया विधान लिखूँगा.

हिन्दू-मुस्लिम न हो कोई,
छूत-अछूत न जात कोई.
ऊँच-नीच का भाव मिटाने,
एक नया विधान रचूँगा.

शिक्षा का अधिकार मिले,
नारी को सम्मान मिले.
नई पीढ़ी को पहचान मिले,
ऐसा विधि-विधान लिखूँगा.

सब का अपना धाम हो,
ऊँचा देश का नाम हो.
सबको मिलता काम हो,
ऐसी मैं आवाज बनूँगा.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

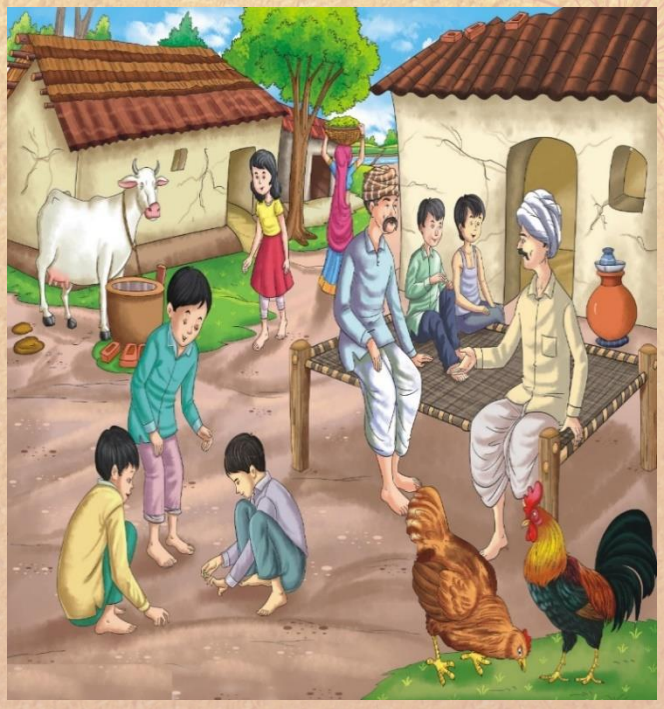

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

हमारा परिवार संयुक्त परिवार

परिवार एक ऐसी सामाजिक संस्था है,जो आपसी सहयोग व समन्वय से क्रियान्वित होती है और जिसके समस्त सदस्य आपस में मिलकर अपना जीवन प्रेम,स्नेह एवं भाईचारे से निर्वाह करते हैं.संस्कार,मर्यादा,सम्मान, समर्पण,आदर,अनुशासन आदि किसी भी सुखी-संपन्न एवं खुशहाल परिवार के गुण होते हैं.कोई भी व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है,उसी से उसकी पहचान होती है और परिवार से ही अच्छे-बुरे लक्षण सीखता है.परिवार सभी लोगों को जोड़े रखता है और दुख-सुख में सभी एक-दूसरे का साथ देते हैं.

कहते हैं कि परिवार से बड़ा कोई धन नहीं, पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं,माँ के आंचल से बड़ी कोई दुनिया नहीं, भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं, बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं होता,इसलिए परिवार के बिना जीवन की कल्पना करना ही कठिन है.एक अच्छा परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.परिवार-एकल परिवार हो या संयुक्त परिवार हो.अपनी अपनी विशेषताएं होती है.आज हम"हमारा परिवार संयुक्त परिवार" को कहानी के माध्यम से समझते हैं.--

मीरा की शादी एक भरे पूरे घर में हुई थी,सास ससुर,जेठ जेठानी और एक छोटा देवर."मीरा के ससुराल में सबमे बेहद स्नेह और प्रेम था.सभी एक दूसरे का आदर करते थे.

एकल परिवार में जन्मी और अपनी माता-पिता की इकलौती संतान मीरा को हमेशा ही संयुक्त परिवार आकर्षित करते थे और उसकी इस इच्छा को जान कर ही उसके पिता ने इस परिवार से रिश्ता जोड़ा था.मीरा भी अपने ससुराल में बेहद खुश थी.

मीरा शादी से पहले जॉब के लिए फॉर्म भरी थी.कुछ महीनों बाद मीरा को ऑफिस में ज्वाइन करने का कॉल आने लगा तो मीरा ने अपनी जेठानी से कहा,"भाभी मेरे ऑफिस से ज्वाइन करने का कॉल आ रहा है, क्या जवाब दूँ?

तब जेठानी ने कहा-"ये तो बहुत अच्छी बात है.कल मैं और माँ जी यही तो बात कर रहे थे की तुम्हें अब ऑफिस ज्वाइन कर लेना चाहिये।"

तब मीरा ने कहा-"वो तो ठीक है भाभी लेकिन अब इस घर की जिम्मेदारी मेरी भी है सब कुछ आप पे अकेली छोड़ मैं कैसे जाऊँ."

ऐसे क्यों सोच रही हो मीरा घर के कामों का क्या है?वो तो पहले भी होते थे और आगे भी हो जायेंगे लेकिन इतनी पढ़ाई करने के बाद तुम्हारा यूं घर पे बैठना उचित नहीं तुम आराम से जाओ यहाँ माँ जी और मैं है ना,सब संभल जायेगा।"अपनी जेठानी की बातें सुन मीरा के दिल में उनके लिये मान सम्मान दुगना हो गया.

अब मीरा हर सुबह नाश्ते में अपनी जेठानी की मदद कर ऑफिस निकल जाती और शाम को भी वापस आ खाना बनाने में मदद कर देती.मीरा के ससुराल में खाना सब साथ ही खाते थे.अगर कभी किसी दिन मीरा को देर भी होती तो सब उसका इंतजार करते, ऐसा प्यारा परिवार पाकर मीरा बेहद ख़ुश थी.

सब कुछ बहुत अच्छे से चल रहा था इतने में मीरा के मायके में उसके चाचा जी के बेटे की शादी की ख़बर आयी.मीरा की शादी के बाद उसके मायके की पहली शादी थी तो मीरा बेहद उत्साह से तैयारी कर रही थी.चाचा जी भी मीरा के पापा के साथ उसके ससुराल आ सबको विवाह में शामिल होने का स्नेह भरा निमंत्रण दे गए थे.

मीरा ने कहा-"माँ जी, भाभी आप सब का इंतजार रहेगा मुझे, आप जल्दी आना शादी में।"

"हाँ-हाँ,मीरा हम सब आयेंगे और तुम भी मायके जा खुब मज़े करना",जेठानी की बातें सुन मीरा ख़ुश हो गई।"

अगले दिन मीरा के चाचा जी आकर मीरा को ले गए.इतने दिनों बाद सबका साथ पा मीरा बहुत ख़ुश थी.वहाँ जाते माँ के गले लग गई,"कैसी हो माँ?"

मैं तो तुझे देखकर ही खुश हो गई,तू बता मीरा खुश है ना बेटा?" माँ ने अपनी लाडो को प्यार से गले लगाते हुए पूछा।

हाँ माँ मैं बहुत ख़ुश हूँ.अभी मीरा अपनी माँ से बातें कर ही रही थी. कि तभी मीरा की मुंहफट और तेज़तर्रार बुआ वहाँ आ गई और उसका हाथ पकड़ अंदर रूम में ले गई वहाँ सारे भाई बहन बुआ, चाची सब मीरा को घेर कर बैठ गये बस फिर क्या था मीरा की बुआ ने मीरा को कुरेद उसके ससुराल की बातें करनी शुरू कर दिया. उसने पूछने लगा-"बता मीरा तेरे ससुराल का हाल.तेरी सास का स्वभाव कैसा है? और वो तेरी जेठानी तेरे साथ अच्छे से तो रहती है ना? मुझे तो तेरी जेठानी बहुत घमंडी लगी."

तभी मीरा ने कहा-"हाँ बुआ!सब बहुत अच्छे है और मुझे बहुत प्यार भी करते है." मीरा को अपनी बुआ का यूं सबके सामने पूछना बिलकुल अच्छा नहीं लगा क्योंकि अपनी बुआ के स्वभाव से मीरा भलीभांति परिचित थी.

मीरा की बुआ बहुत ही तेज़ स्वभाव की महिला थी.जो खुद अपने ससुराल में कभी एडजस्ट नहीं कर पायी और अपने पति को भी उनके परिवार से दूर कर दिया था."

बुआ की मंशा जानते हुए भी मीरा ने उस वक़्त ज्यादा कुछ कहना उचित ना समझ उन्हें शांति से ही जवाब दिया.लेकिन बुआ कहाँ मानने वाली थी वो वापस शुरू हो गई...."चल मीरा अब ज्यादा झूठ ना बोल.क्या मैं जानती नहीं..." संयुक्त परिवार का मतलब ही जी का जंजाल होता है" ना मन का खा पाओ,ना मन का कुछ कर पाओ.हर वक़्त सब सिर पे बैठे रहते है.ऐसे जेल से तो अकेला रहना ही भला है.अब मुझे देखो अकेली मज़े से रहती हूँ और जब जो जी करता है करती हूँ.जाने भैया को क्या सूझी तेरे जैसी पढ़ी लिखी लड़की की इतने बड़े परिवार में शादी कर दी.आजाद लड़की के जैसे बेड़ियाँ ही डाल दी पैरों में.इतना कह बुआ हँसने लगी."

मीरा को बहुत बुरा लगा अपने ससुराल की बुराई सुन और अब उसने बुआ को जवाब देने की ठान ली.

उन्होंने कहा"आप ऐसा इसलिए बोल रही है बुआ क्योंकि आप संयुक्त परिवार में कभी रही ही नहीं.या यूं कहो रहना चाहा ही नहीं संयुक्त परिवार में."

"माफ़ करना बुआ संयुक्त परिवार तो आशीर्वाद के समान होता है. जहाँ हर वक़्त बड़ों का आशीष मिलता है तो छोटों का प्रेम और सम्मान भी मिलता है.कोई तकलीफ हो या कोई दुःख पूरा परिवार चट्टान की तरह मेरे सामने खड़ा रहता है.क्या अकेली रहती तो मैं नौकरी कर पाती?जब

तक बच्चे नहीं है तक तक तो शायद कर भी लेती लेकिन बच्चे होने के बाद तो बिलकुल भी नहीं कर सकती थी.मेरी नौकरी पे जाने से वहाँ कोई मुँह नहीं बनाता उल्टा मेरी जेठानी जो आपको घमंडी लगती है उन्होंने बिना चेहरे पे शिकन लाये मेरे हिस्से के काम भी अपने नाम कर लिया ताकि मैं नौकरी कर सकूँ.और हाँ बुआ हमारे घर में किसी बात की रोक नहीं,ना खाने की और ना ही पहनने की.हम अपने ससुराल में बहुएँ नहीं बेटियों के सामान ही रहते है.मेरा ससुराल जेल नहीं मंदिर है बुआ."

काश बुआ, आपने भी इस आशीर्वाद को स्वीकार किया होता. तब आप समझते संयुक्त परिवार कभी श्राप नहीं होता बल्कि रिश्तों का आधार होता है."

बुआ के पास एक शब्द नहीं था कहने को और वहाँ मौजूद सभी ने मीरा की बातों का समर्थन किया.दरवाजे के पास खड़ी मीरा की माँ के चेहरे पे सुकून भरी मुस्कान तैर गई उनकी बिटिया को उनसे भी ज्यादा प्यार करने वाला ससुराल जो मिल गया था.

कहानी का सार यही है की संयुक्त परिवार में शायद बहुत आजादी ना मिले लेकिन बल बहुत मिलता है.हर मुसीबत में पूरा परिवार साथ खड़ा रहता है.बच्चों को जो संस्कार अपने बुजुर्गो से मिलता है वो एकल परिवार में संभव नहीं !

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

जब बाकी चूंजों की तरह बाज का बच्चा भी बस थोड़ा सा ही उड़ पाता और पंख फड़फड़ाते हुए नीचे आ जाता तो उसे लगता था कि मैं ज्यादा ऊपर नहीं उड़ पाऊंगा. लेकिन उसने एक दिन अपने जैसे पक्षी को आसमान में उड़ते देखा तो वह अपनी माँ से जाकर पूछा माँ हम आसमान में क्यों नहीं उड़ पाते तब माँ ने जवाब दिया.भगवान ने हर पक्षी को अलग-अलग बनाया है उन्होंने हमें थोड़ा ही उड़ने वाला पक्षी बनाया है हम जमीन पर ही रहते हैं वह मान गया और बाकी चूंजों के पास खेलने के लिए चला गया. अगले दिन जब मुर्गी अपने बच्चों के लिए दान ढूंढने गई उस वक्त वह छोटा बाज आसमान में उड़ रहे अपने सामान पक्षी को पुनः देखने के लिए गया.जब वह गया तो इस बार आसमान से एक बाज़ नीचे जमीन पर आया उसने देखा यह बाज का बच्चा जमीन से ऊपर उड़ने की कोशिश कर रहा है लेकिन थोड़ा ही उड़ने के बाद फिर नीचे आ जा रहा है. तब उसने उस बाज के बच्चे से पूछा तुम इतनी ही ऊंचाई पर उड़कर पुनः नीचे क्यों आ जा रहे हो बाज के बच्चे ने ठीक वैसा ही जवाब दिया जैसा की मुर्गी ने बताया था की हर पक्षी अलग-अलग होते हैं और मैं इतना ही उड़ सकता हूं मैं आसमान में नहीं उड़ सकता. लेकिन तुम तो मेरी तरह ही दिखती हो तुम इतने ऊंचे आसमान में कैसे उड़ लेती हो उसने कहा.तब बाज ने जवाब दिया तुम भी ऐसा कर सकते हो चाहो तो मैं तुम्हें उड़ना सिखा दूं. बाज का बच्चा उड़ना चाहता था इसलिए वह बहुत खुश हुआ और बोला ठीक है उस दिन से बाज उसे उड़ना सिखाने लगा जैसे-जैसे वह उड़ना सीखने लगा उसके पंख फड़फड़ाने लगे और

अधिक ऊंचाई तक जाने लगा वह बहुत खुश हो रहा था. एक दिन ऐसा आया जब वह ऊंचे आसमान में स्वतंत्र रूप से आसानी से उड़ रहा था.

माही बंजारे, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

मेरा परिवार

एक गांव में राम और श्याम नाम के दो भाई रहते हैं.उसका परिवार संयुक्त परिवार है.राम के पत्नी का नाम गीता एवं श्याम के पत्नी का नाम रीता है.दोनों के तीन-तीन बच्चे हैं.राम और श्याम का हृदय अत्यंत उदार हैं तो उसकी पत्नी गीता और रीता का स्वभाव अति मधुर हैं.

राम और श्याम दोनों भाई योग्य किसान है.वह सदैव खेती का कार्य करके परिवार चलाते हैं.वे अपनी जमीन पर परिश्रम करके पर्याप्त मात्रा में अनाज,सब्जी,फल उगाते हैं. उसके घर में एक सुंदर सी एक गाय हैं.जो पर्याप्त मात्रा में दूध देती है.साथ में अपनी आय बढ़ाने के लिए मुर्गी पालन भी करते हैं. गीता और रीता रीता अच्छे ढंग से घर को संभालती है.घर का पूरा काम दोनों मिलकर करते हैं.दोनों भाई अपने-अपने पत्नी का बहुत सम्मान करते हैं.इस प्रकार से वह आपसी प्रेम व सौहार्दपूर्ण ढंग से अपना जीवन गुजारते हैं.

एक दिन राम और श्याम आपस में बैठकर बातचीत कर रहे थे.तभी खेलते हुए बच्चों को देखकर दोनों उदास हो जाते हैं क्योंकि बच्चे पढ़ने योग्य हो गए हैं.लेकिन गांव में स्कूल नहीं होने के कारण पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं.बच्चे दिन भर खेलने व घूमने में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं. उन दोनों की बातों को सुनकर राम की पत्नी गीता कहती है.आप लोगों की इच्छा हो तो मैं बच्चों को पढ़ाऊँगी क्योंकि मैं पढ़ी लिखी हूँ. डी.एड.भी की हूँ. मुझे पढ़ाने का अनुभव भी है. अगर आप सब लोग चाहेंगे तो पूरे गाँव के बच्चों को इकट्ठा करके, एक जगह पढ़ा सकते हैं.तभी श्याम की पत्नी रीता कहती है.तुम ठीक कह रही हो दीदी;मैं घर को संभाल लूंगी,आप बच्चों को पढ़ायें.दोनों की बातों को सुनकर राम और श्याम का चिंता दूर हो जाता है.राम गाँव की मुखिया को बुलाकर स्कूल खोलने का प्रस्ताव उच्च कार्यालय को प्रेषित करते हैं. इधर गीता सभी बच्चों को एक जगह इकट्ठा कर मन लगाकर पढ़ाते हैं.उनके कार्य और लगन को देखकर कुछ दिन पश्चात,सरकार के द्वारा शाला भवन का निर्माण होता है. जिसमें गीता को शिक्षिका के पद पर नियुक्त करते हैं.इस तरह गीता के प्रयास से पूरे गाँव के बच्चों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ.गीता,रीता को धन्यवाद दिया.जिसके के सहयोग से बच्चों को पढ़ाने का कार्य सफल हुआ.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

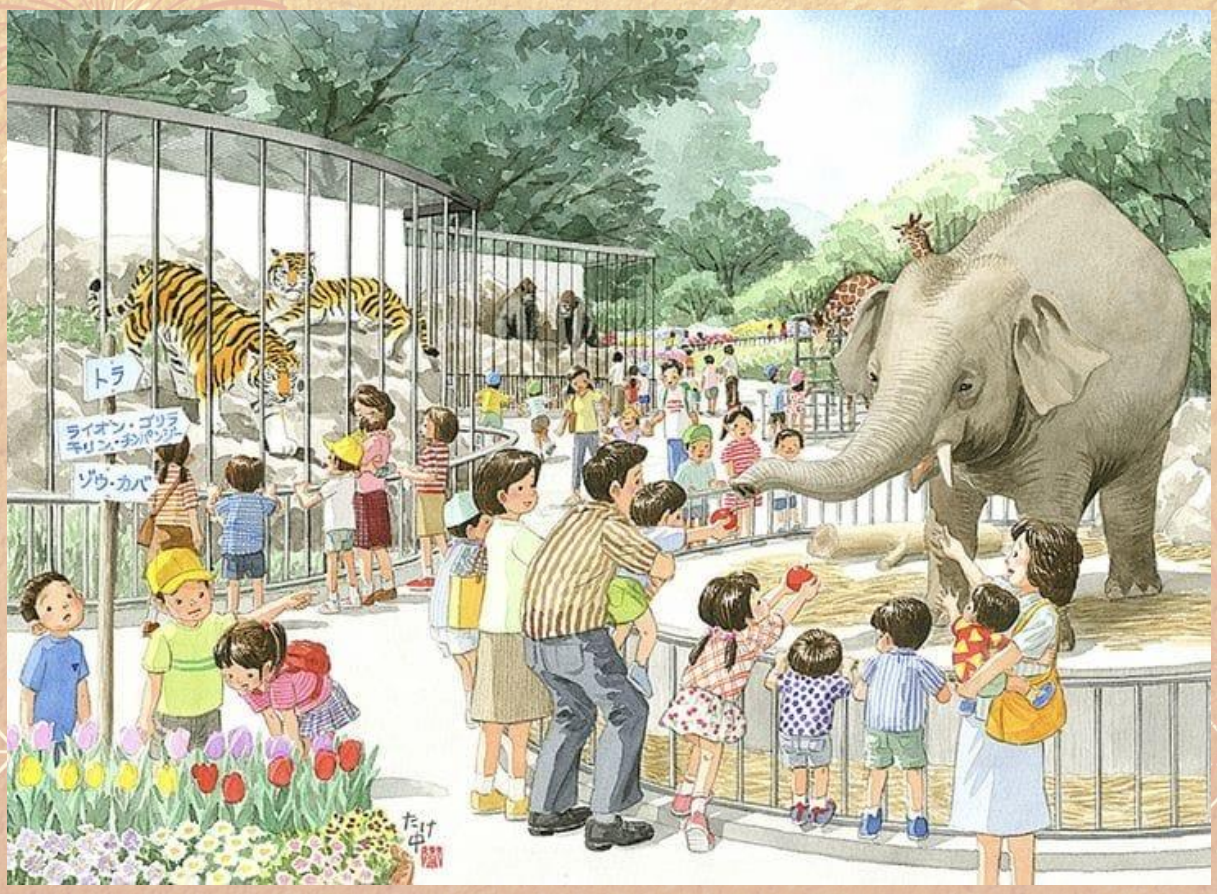

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल KILOLMAGAZINE@GMAIL.COM पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

गौ माता से भी करो प्यार

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, कक्षा -आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

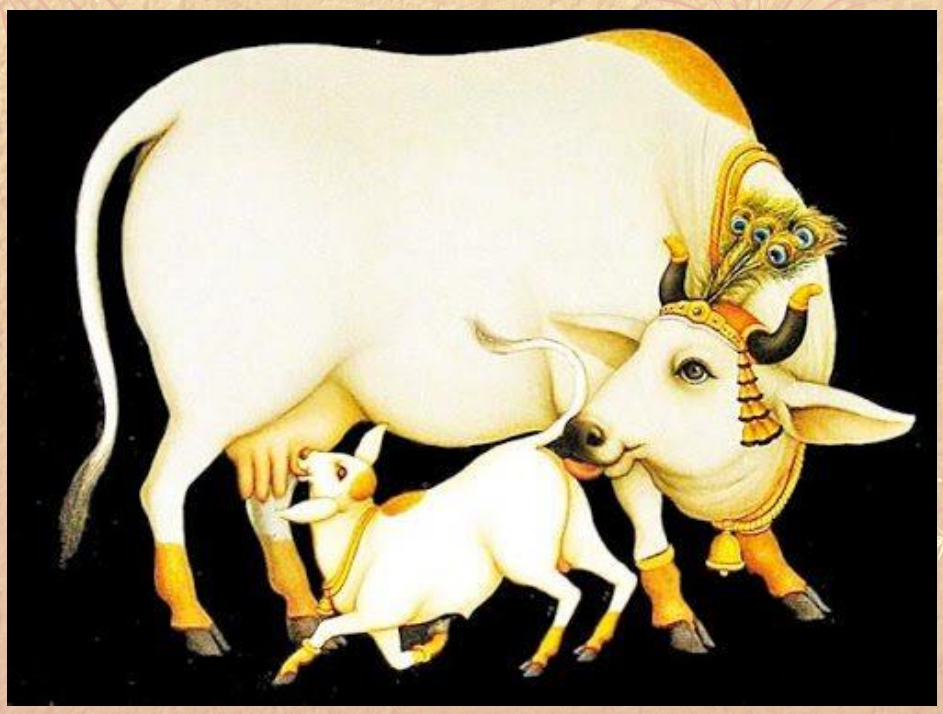

आओ देखो इस युग को,
यहाँ क्या हो रहा है?
गाय माता सड़क पर रो रही
और कुत्ता पलंग पर सो रहा है.

कुत्ते को गोद में लेकर,
प्यार का महत्व समझाते हैं.
वही लोग देखो,
मछलियाँ पकाकर खाते हैं.

कुत्ते के लिए बिस्किट लाते,
गाय को प्लास्टिक खिलाते हैं.
प्रेम से रखा कुत्ते को घर पर,
गाय को मार भगाते हैं.

माना कि कुत्ता वफादार है,
उससे जरूर प्यार करो.
पर गौ हमारी माता है,
उस पर न अत्याचार करो.

*****

जय गनेश देवता

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

तोर जय होवय गनेश देवता, करहूँ मैंय हा मान-मनौता.
जिनगी मा सुख तैंय लाए हच, बिगड़े काम ला बनाए हच.

बिकट दुख मैंय पावत रेहेंव, अपने-अपन नठावत रेहेंव.
कुलूप छाए रहिसे अँधियारी, किरपा करके करे उजियारी.

एक दिन करेंव परतिगिया, घर ले जाहूँ गनपति मोरिया.
रोज पूजा-पाठ, सेवा करहूँ, तोर नाव ला मने-मन सुमरहूँ.

तोला दाई-ददा जान के लाहूँ, मीठ लड्डू के भोग लगाहूँ.
धोतिया, बंगाली तोला पहिराहूँ, तोर हाथ-पाँव ला दबाहूँ.

तोर बंदना ला रात-दिन गाहूँ, नरियर अउ फूल चढ़हाहूँ.
धूप,दीया अउ अगरबत्ती जलाहूँ, घेरी-बेरी आरती उतारहूँ.

रहिबे मोर संग दस दिन ले, ओखर बाद चल देबे छोड़ के.
मंगल, समरिद्धी, मोला देके, गियान के खूब बरसा करदे.

*****

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

5 सितंबर शिक्षक दिवस ,जब यह पावन दिन आता है.
राधाकृष्णन का जन्म दिवस, धूमधाम से मनाया जाता है.

तमिलनाडु के तिरुतनी में, जब हुआ था इनका जन्म.
5सितंबर 1888 को मिला था ,भारत को एक अनमोल स्वर्ण.

स्वतंत्र भारत के जब पहले उपराष्ट्रपति व दूसरे राष्ट्रपति बने.
भारतीय संस्कृति के संवाहक,शिक्षाविद ,महान दार्शनिक के रूप में कार्य किए.

उनकी प्रथम पुस्तक *द फिलॉसफी ऑफ रविंद्रनाथ टैगोर ने ऐसा मन को भाया.
वर्ष 1954 में उन्हें, भारत रत्न से सम्मानित कराया.

1962 में जब भारत चीन युद्ध में सैनिकों का कदम डगमगाया.
उनके ओजस्वी भाषणों ने, सैनिकों का मनोबल बढ़ाया.

उन्होंने अपना अधिकतम जीवन, एक शिक्षक के रूप में बिताय.
इसलिए अपने जन्म दिवस को, शिक्षक सम्मान के रूप में समर्पित कराए.

एक लंबी बीमारी ने ,उन्हें ऐसा तोड़ा.
17अप्रैल 1975 को उन्होंने हमारा साथ छोड़ा.

उस अनमोल हीरे को ,हम कभी नहीं भूल पाएंँगे.
उनकी याद में हम, शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष मनाएंँगे.

*****

गीता की महिमा

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार शासकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

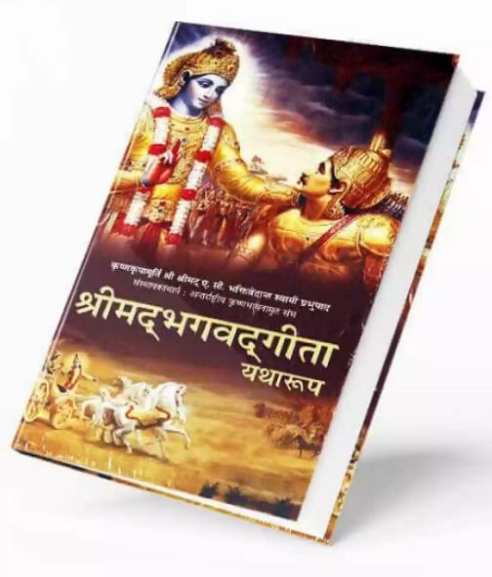

वेद व्यास जी द्वारा,
है रचित ये अनुपम ग्रंथ.
जीवन जीना जो हमें सिखाता,
ऐसा ये अद्भुत तंत्र.

जब अर्जुन पड़े असमंजस में,
कदम जब उन्होंने पीछे लिए.
बताया जगत का खेल कृष्णा ने,
तभी जले थे धर्म के दिये.

श्रीकृष्ण के श्रीमुख से,
निकली हमारी श्रीगीता.
जो पढ़ले एक बार इसे तो समझो,
इस झूठी दुनिया से वो जीता.

जब-जब तुम्हें अच्छा न लगे,
मन भटके तुम्हारा जब.
खोलकर गीता देख लेना,
शान्ति मिलेगी तब-तब.

हर समस्या का हल है इसमें,
वास्तव में है ये एक अमृता.
सुख-दुख को जो समान बनादे,
वही है हमारी श्रीमदभगवत् गीता.

*****

विश्व गुरू भारत

रचनाकार- श्रीमती मंजू साहू, बेमेतरा

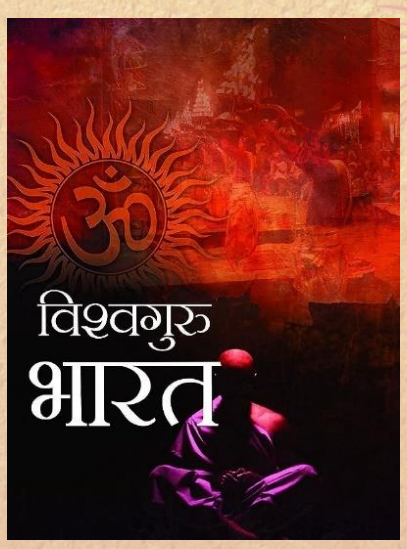

वीरों का वीर कहलाता है, विश्व गुरू भारत
आसमान तक बिखेरेगा आभा, विश्व गुरू भारत.
अनेकता में एकता का दीप जलाता विश्व गुरू भारत
चंद्रयान मिशन सफल कराता है विश्व गुरू भारत.

मिट्टी से हरियाली लाता है, विश्व गुरू भारत
शिक्षा से सभ्यता लाता है, विश्व गुरू भारत.
सुदामा-कृष्ण की मित्रता सिखाता विश्व गुरू भारत
धर्म निरपेक्षता की पाठ पढ़ाता है, विश्व गुरू भारत.
ईद और होली में गले मिलाता है, विश्व गुरू भारत
सोने की चिड़िया कहलाता है, विश्व गुरू भारत.

*****

दीपावली

रचनाकार- सागर कुशवाहा, स्वामी आत्मानंद तार बहार बिलासपुर

आने वाला है त्योहार फिर से दीपों का,
जाने वाला है मौसम फिर से बारिश का.
लोगों ने कर दी है तैयारी फिर से चमकने की,
लोगों को रहती प्रतीक्षा जिस दिन के आने की.

दीप जलेंगे फिर से दिल से,
आने वाला है मौसम फिर से दीपों का.
खूब नाचेंगे गायेंगे इस दिन शौक में,
खूब मजे करेंगे इस दिन के मौज में.

फड़फड़ आवाज से गूंजेगा यह आसमान,
इस दिन के मौज में मौज करेगा सारा जहाँ
आने वाला है त्योहार दिवाली का.

*****

सच्चाई को लेखनी से सलाम करते हैं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सच्चाई को लेखनी से सलाम करते हैं,
उनकी लेखनी अस्त्र महत्वपूर्ण कलम है.
बुराई का धागा जो तीव्र कलम से काटते हैं,
लेखक, कवि, बुद्धिजीवी, पत्रकार को सलाम है.

साहित्य का ख़जाना भारत में अनमोल है,
साहित्य को जीवंत बनाने में प्रिंट और
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्वपूर्ण रोल है.
कायम रखने में हमारे पूर्वजों का विशेष रोल है.

साहित्य राष्ट्र की महानता
और वैभव का दर्पण होता है.
साहित्य को आकार देने में संस्कृति
और परंपराओं का महत्वपूर्ण रोल होता है.

जो साहित्य और कविताएँ सामाजिक कल्याण
पर केंद्रित है वह कालजई होती हैं.

यही कारण है रामायण और महाभारत
जैसे महाकाव्य आज भी हमें प्रेरणा देते हैं.

हमारे भारत के ज्ञान भण्डार में
कितनी चमत्कारिक बातें छिपी हुई हैं,
हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि
विराट ज्ञान हमारे पास कहाँ से आया?

उस प्राचीनकाल में यह जबरदस्त
ज्ञानभंडार हमारे पास था,
तो अब क्यों नहीं है?
यह ज्ञान कहाँ चला गया?
सबसे बड़ा सवालिया निशान है.

*****

सफलता की राह

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, कक्षा-आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

नींद त्यागो, चैन त्यागो.
करो कोशिश हिम्मत न हारो.

कोई न रहेगा साथ हमेशा,
खुद ही अपना साथ दो.

सफल होने की खुशी के लिए,
असफलता का दुःख सहना पड़ेगा.

यही समय है,
खुद को उभार लो.

कोशिश से सफल हुआ जो व्यक्ति,
मशहूर हुआ संसार में.

फिर क्यों खड़े हो पीछे तुम,
उतर चलो मैदान में.

मेहनत तुम्हारी,
सफलता तुम्हारी,
तालियाँ सभी बजाएँगे.

कोशिश के कदम,
सफलता के ओर ले जाएँगे.

*****

नवरात्रि

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

आने वाली है नवरात्रि,
आएँगी अब माँ कालरात्रि.
आने वाली है शारदीय नवरात्रि,
है ये नौ सुखों की रात्रि.

माँ दुर्गा के ये नौ स्वरूप,
भक्तों पर प्रेम बरसाते भरपूर.
ना होने देती माँ कभी अत्याचार,
अपने प्रिय भक्तों के साथ.
उनका आना खुशियों की बौछार,
वो दुष्टों का करती है संहार.

शेरों की वो करती सवारी,
और करती सोलह श्रृंगार.
ये नौ रात और दस दिन,
सच में है मधुरता की बहार.

नौ दिन के लिए आती माँ,
और हर लेती जीवन का दुख.
सभी त्यौहारों मे पसंदीदा सबसे,
नवरात्रि ही है प्रमुख.

लेकिन जैसे ही आती है,
वो घड़ी विदाई की.
आँखें सबकी भर जाती है,
याद आती महामाई की.

*****

असली भगवान और असली मंदिर

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

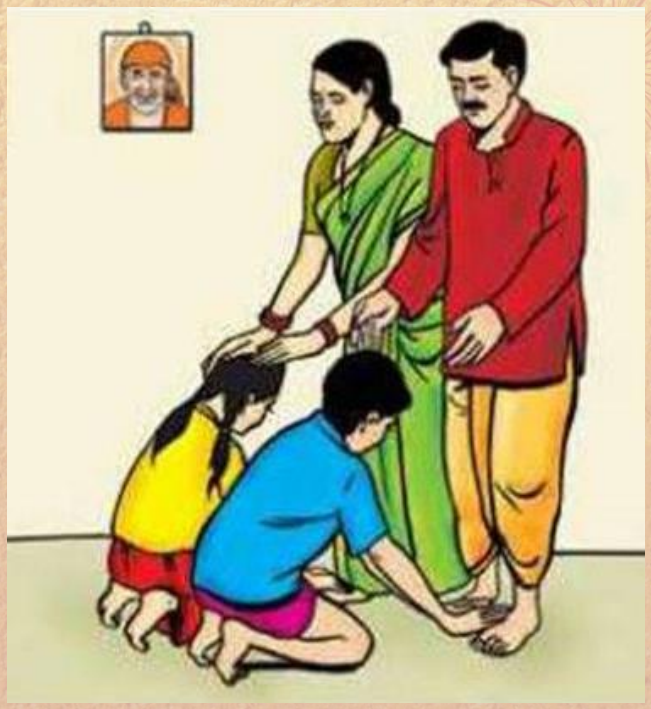

माता-पिता को तो,
कहा जाता है भगवान.
लेकिन उन्हीं माता-पिता को,
क्यों नहीं दिया जाता सम्मान.

उस प्रेम मूर्ति माँ को,
जिसने कितने कष्ट सहे तुम्हारे लिए.
उसी माँ को वृद्ध हो जाने पर,
घर से बाहर इस युग ने किए.

तुम्हारे पिताजी जिन्होंने,
तुम्हारे लिए दिन रात परिश्रम किया.
जहाँ जाने का तुम्हारा मन था,
उन्होने कहा के "जा ",

उसी पिता को आखिर में तुमने,
वृद्धाश्रम मे क्यों भेज दिया?

सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे लिए,
उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया.
लेकिन बारी जब तुम्हारी आई,
तो तुमने उन्हें क्यों सताया?

उँगली पकड़ के जिन्होंने तुम्हें,
चलना सिखाया था.
उन्हीं का हाथ छोड़कर,
तुम्हारे मन में क्या भाव आया था?

अब तुम्हारी बारी है,
उनका हाथ थामो न कि छोड़ो.
एक तुम ही उनका सहारा हो,
उनका विश्वास निभाओ न कि तोड़ो.

छप्पन भोग लगालो भगवान को,
ना करेंगे वो इसे स्वीकार.
जब तक अपने माता-पिता को,
न दोगे तुम प्रेम उपहार.

माता-पिता ही भगवान हैं,
और जिस घर में वो हैं,
वो ही मंदिर है.

*****

माँ की ममता , पिता का प्यार

रचनाकार- मानसी निषाद, कक्षा- 8 वी, विद्यालय- शेख गफ्फार अंगेजी माधयम शाला तारबहार बिलासपुर

माँ की ममता
पिता का प्यार
दुनिया के हर बच्चे का है
यही प्यारा संसार।
डाट-डपर फटकार कर
उँगली पकड़ दुलार कर
हर राह पे चलना सिखाया
आगे बढ़ना सिखाया
सत्य जीवन रहना सिखाया
माँ की ममता पिता का प्यार
हौसला होता पिता से
माँ से सब सहना आया
सर पर हो गए पिता का
सबसे बड़ा है उपहार
माँ की आँचल में जीवन संसार
माँ की ममता
पिता का प्यार

*****

बंदर ने पहली बार बनाया घर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

सर्दी का मौसम आने वाला था नवम्बर का महीना शुरू हो गया था. और गुलाबी जाड़े की शुरुआत हो चुकी थी. चंपक वन के सभी पक्षी और जानवर जाड़े से बचने के लिए अपना अपना घर बना रहे थे.

तोता गौरैया बुलबुल बगुला सारस मोर कौवा कबूतर और दूसरे पक्षी अपना अपना घर और घोसला बनाने में मस्त थे ताकी जाड़े में ठंड से कांपना न पड़े.

वहीं सियार लोमड़ी खरगोश भालू शेर चीता चूहा स्यही नेऊर गिलहरी कठफोड़ किलहट मैना भी अपना घर बनाने में जी जान से लगे हुए थे.

सबको अपना अपना घर बनाते देख कर बंदर ने सोचा जब सारे जानवर और पक्षी अपना अपना घर बनाने में लगे हैं तो मैं क्यों किसी से पिछे रहूं मैं भी अपना घर बनाऊंगा.

अगले दिन बंदर जंगल से बांस काट कर जमा कर लिया फिर जंगली खर भी ला कर रख लिया. बंदर ने आरी गड़ासा सुतली भी जमा कर लिया. और जंगल के पेड़ों से मोटे मोटे लम्बे डाल को काट कर जमा कर लिया .

घर बनाने का सारा सामान इकट्ठा करने के बाद बंदर

सबसे पहले हाथी के पास पहुंच कर बोला हाथी दादा मैं पहली बार अपना घर बना रहा हूं आप हमारे घर बनाने में थोड़ी मदद कर दीजिए ताकी हमारा भी घर बन जाए और सर्दी में कांपना न पड़े .

हाथी मदद करने को राजी हो गया. फिर बंदर भालू के पास पहुंच कर मदद की गुहार लगाया, भालू भी मदद करने को तैयार होगया. फिर बंदर सियार और लोमड़ी के पास गया वो भी मदद करने को राजी हो गए.

अगले दिन बंदर का घर बनना शुरू हो गया. हाथी ने जमीन में गड्ढा खन कर उसमें पेड़ की लकड़ी को गाड़ दिया. भालू ने बांस काट कर मड़ई का ढ़ांचा तैयार कर दिया बंदर ने उसके उपर खर बिछा कर मड़ई बना दिया. सियार और लोमड़ी ने बांस से घर का फाटक और दरवाजा बना दिया. बंदर ने जमीन पर पुआल बिछा दिया. ताकी उ पर चादर बिछा कर सोया जा सके.

बंदर का घर बन कर तैयार हो गया. जंगल में पहली बार बंदर का घर बनाए जाने की खबर सुनकर जंगल के सभी जानवर और पक्षी बंदर का घर देखने आने लगे और बंदर को घर बनाने पर खूब बधाई देने लगे.

बंदर ने घर बनाने में और हाथ बटाने में और सहयोग करने पर हाथी भालू सियार लोमड़ी सबको बहुत बधाई दिया.

दिसम्बर का महीना आते ही चंपक वन में कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी. सभी जानवर और पक्षी अपने अपने घर में बहुत खुश नजर आ रहे थे.

सबसे अधिक खुशी बंदर को थी क्यों कि पहली बार उसे जाड़े से राहत महसूस हो रही थी. बंदर अपने घर में इस बार जाड़े में बहुत खुश नजर आ रहा था. उसे न सर्दी लग रही थी न जाड़ा लग रहा था. बंदर अपने घर में बहुत खुश नजर आ रहा था.

*****

ओ कान्हा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम

ओ कान्हा!
हाथ थाम लो आकर मेरे,
कोई नहीं सहारा है.
मन कितना विचलित हो उठता,
हृदय सिसक कर रोता है,
जरा बता दे तू गिरधारी,
ऐसा ही क्यों होता है.
भीड़ भरी है इस दुनिया में,
लेकिन कौन हमारा है.

जीवन इक अनमोल रतन है,
जैसे कोमल-सी कलियाँ,
कदम बढ़ाऊंँ गर मैं आगे,
हर पथ पर रोके छलिया.
किस-किस को मैं व्यथा सुनाऊँ
करते सभी किनारा हैं.

बनकर दासी मैं चरणों में,
भक्ति भाव सम रम जाऊँ.
शाम–सबेरे रज के कण–कण,
माथे मैं तिलक लगाऊँ.
जगमग हो जायेगा जीवन,
बन के मेघ सितारा है.

सब कुछ तो तेरे ही वश में,
तू ही है पालनहारी.
कैसी लीला रचते कान्हा,
हम पर पड़ जाता भारी,
ज्ञात तुम्हें है तेरे बिन अब,
होता कहाँ गुजारा है.

*****

मेरी माटी मेरा देश

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

मेरा देश के कोना -कोना,
महके माटी चंदन.
बसते इसमें देवी देवता,
मेरी माटी मेरा देश वंदन.

फसलों की बयार देखो,
हरियाली छायी घट -घट.
नित नमन हे वतन,
प्यार भरा हृदय का पट.

झूमें नाचे पेड़ -पौधे,
शीतल इनकी छाया.
नृत्य करता तन-मन
गान गाती हर काया.

सुबह सबेरे मंद -मंद पवन,
हर्षित दिखते हर जन.
पर्वत नदियाँ नरुआ जंगल,
रहता इसमें अपनापन.

क्या नहीं देती? हमें माटी,
जीता जीव मदमस्त.
सूरज की लाली किरणों से,
होता दिवस जबरदस्त.

हैं यह वीरों की भूमि,
शहादत हुए कई वीर.
भूमि संत महात्माओं की,
जिस भूमि पर एक घाट की नीर.

स्वतंत्रता के खातिर,
बहा दी अपनी जवानी.
परवाह किये बिना प्राणों की,
भूमि को दी अपनी कुर्बानी.

यह भूमि वीर जवानों का,
बसता बच्चों -बच्चों में राम.
माता कौशिल्या औऱ सीता की भूमि,
मेरी माटी मेरा देश का नाम.

पूजूं निशा औऱ दिवस,
करू आराधना वंदन.
मिलते रहे यही माटी,
मेरी माटी मेरा देश हैं अभिनंदन.

खुली हवओं में लेती श्वास,
गूंजती किलकारियां बच्चों की.
हर बाला में सीता बसती,
मेरी माटी मेरा देश हैं सच्चों की.

खेतों से खलिहानों तक,
गाँवो से गलियारों को.
मेरी माटी मेरा देश,
दूर भगाये अंधीयारों को.

*****

चंद्रयान

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

पाक हाथ मल गया,
चीन को भी खल गया.
अमेरिका भारत को,
देख -देख कुड़ गया.

गुरुता में मुखर जो,
वीरता में प्रखर जो.
हिमाद्री का शिखर जो,
श्रेष्ठ पथ मुड़ गया.

अलौकिक काम हुआ,
दुनिया में नाम हुआ.
भारत में फिर एक,
इतिहास जुड़ गया.

वीरता का भेष ले के,
शुभता संदेश ले के.
भारत का शौर्यवान,
चंद्रयान उड़ गया.

*****

स्वच्छता रैली

रचनाकार- शासकीय प्राथमिक शाला एवं पूर्व माध्यमिक शाला पुरुषोत्तमपुर

शासकीय प्राथमिक शाला एवं पूर्व माध्यमिक शाला पुरुषोत्तमपुर में गाँव गली में घूमकर नारे लगाकर स्वच्छता रैली निकाली गई. इस रैली में प्राथमिक विद्यालय के 30बच्चे, मिडिल स्कूल पुरुषोतमपुर से 40बच्चे तथा समन्वयक डिजेन्द्र कुर्रे, प्रधानपाठक गंगाधर प्रसाद द्विवेदी, प्रधानपाठक रुपलता कुर्रे, जितेन्द्र नाग सर, मनोज नायक सर, जानकी साहू, सपना साहू, आंगनबाडी कार्यकर्त्ता सिरमोती सिदार के अलावा ग्रामीण जन उपस्थित थे.

शासन के निर्देशानुसार अभी स्वच्छता सप्ताह के अंतर्गत अलग अलग दिन अलग अलग कार्यक्रम का आयोजन करना है. जिसमें साहित्य संगोष्ठी, रंगोली प्रतियोगिता खेलकूद प्रतियोगिता पेंटिंग प्रतियोगिताआदि का आयोजन होना है. जिसके तहत आज स्वच्छता रैली निकाली गई.अंत में सभी को स्वच्छता शपथ दिलाई गई.

*****

नारी

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा - आठवीं

मैं नारी हूं, मैं नारी हूं.
मैं जननी हूं, मैं जीवन भी हूं.
मुझे दुनिया से कोई डर नहीं,
क्योंकि मैं अपने आप पर पूरी हूं.

सभी यह कहते,
लक्ष्मी व सरस्वती का रूप है नारी.
तब है हम कहते,
हम हैं झांसी की भी रानी.

जरूरत पड़ती सरस्वती माँ का रूप लेकर,
दुनिया को बहुत कुछ सिखा दे.
और अगर जरूरत पड़े तो झांसी की रानी बनाकर,
दुश्मन के छक्के छुड़ा दे.
कहीं बढ़कर जाए अगर अत्याचार,
तो काली दुर्गा का रूप धारण ले

मैं नारी हूं, मैं नारी हूं.
सिर्फ शब्दों में लिखी जाती हूं आसानी से.
इतना सब कुछ अपने भीतर में समेटे,
बस मुस्कुराए जाती हूं.
मैं नारी हूं, मैं नारी हूं.

*****

एकता की पहचान है हिन्दी

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

भारत माता का वरदान है हिन्दी.
एक हैं हम, एकता की पहचान है हिन्दी.

आदर सम्मान का भाव है इसमें, गीत कविता का सार है इसमें.
मुस्कान आ जाती चेहरे पर, बच्चे बूढ़े का प्यार है हिन्दी.
एक हैं हम, एकता की पहचान है हिन्दी.

कवि की कविता है हिन्दी, लेखक की तूलिका है हिन्दी.
वक्ता की आवाज है इसमें, हम सब का संवाद है हिन्दी.
एक हैं हम, एकता की पहचान है हिन्दी.

हिन्दू बोले सिख्ख भी बोले, बोले है मुसलमान.
हिन्दी भारत माता की आन बान और शान.
जाति रंगरूप का भेद नहीं, सब है एक समान.
विविधता में एकता की पहचान है हिन्दी.
एक हैं हम, एकता की पहचान है हिन्दी.

*****

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

बापू के जन्मदिन ल अहिंसा दिवस के रूप म मनाबो.
रघुपति राघव राजा राम पतित पावन के गीत ल गाबो.

स्वर्ग लोक ले उतर आइच, चमकत दिव्य एक आत्मा.
सफेद रंग के धोतिया पहिने, सत्य रूप दिखे विश्वात्मा.

हाथ के लाठी ब्रह्मास्त्र तोर, चरखा तोर चक्र के समान.
शांति के दूत तोला कहिथें, भारत के विधाता, महान्.

टैगोर ह महात्मा कहिस तोला, बोस कहिस तोला बापू.
भारत के तैंय राष्ट्रपिता हच, सत्य अउ अहिंसा के साधु.

कानून के रखवाला बनके, जन अधिकार बर करे युद्ध.
किसान अउ श्रमिकों के, भूमिकर, भेदभाव के बिरुद्ध.

माई लोगिन मन ल अधिकार अउ गरीबी ले मुक्ति देवाए.
आत्मनिर्भर, एकता अउ अपृश्यता के कार्यक्रम चलाए.

स्वराज पाए के खातिर, किसिम-किसिम के करे उदिम.
अंग्रेज मन के नून कानून ल टोर के, छेड़े जबर मुहिम.

साबरमती के संत कहाथच, जिनगी के आध्यात्मिक गुरू.
भारत ल आजादी देवाए, भारत छोड़व जंग करके शुरू.

*****

एक दोस्त ऐसा भी

रचनाकार- जानवी कश्यप ,आठवीं ,स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

एक दोस्त ऐसा भी हो ,
जो सिर्फ और सिर्फ मेरा हो.

मैं रूठु तो मुझे मनाए ,
मैं रोने लगूं तो मुझे हँसाए.

हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो,
जो मेरे हर कठिन राह को सरल बनाए,
जो मेरे हर सुख- दुख का साथी बने.

हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो,
जो मेरे दर्द को बिन बोले महसूस करें,
जो मेरे अंधेरे की रोशनी बने.

हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो,

जो मुझे खोने से डरे,
मेरे ना होने पर महसूस करें.

हाँ एक दोस्त ऐसा भी हो,
जो सिर्फ और सिर्फ मेरा हो.

*****

हमारे बुजुर्ग

रचनाकार- ABHINAV PANDEY, CLASS - 7, SWAMI ATMANAND SHEIKH GAFFAR GOVERNMENT ENGLISH MEDIUM SCHOOL TARBAHAR BILASPUR

घर के बुजुर्ग हैं घर की शान
मत करो तुम इनका अपमान
यही तो हमको राह दिखाते
अनुशासन यह हमें सिखाते
अनुभव अपना करते साझा
अपने सम्मान की करते आशा
पूरे परिवार को बांधकर रखते
एक माला में पिरोकर रखते
इनके ना रहने से यह माला,
टूट-सी जाती है
परिवार बिखर-सा जाता है
और याद इनकी सताती है
इसलिए बच्चों सुन लो तुम
करो सदा इनका सम्मान.

*****

दीवाली का त्योहार

रचनाकार- ASTHA PANDEY, CLASS - 6, SWAMI ATMANAND SHEIKH GAFFAR GOVERNMENT ENGLISH MEDIUM SCHOOL TARBAHAR BILASPUR

आया दशहरा आयी दीवाली,
खुशियों का यह मौका लायी.
लक्ष्मी जी की पूजा करते,
गणेश भी साथ में आते हैं.
राम जी के आगमन का यह दिन,
हम दीप जलाकर मनाते हैं.
नये - नये रंग बिरंगे कपड़े,
पहन - पहन सब आते हैं.
खुशियों से भरा यह त्यौहार,
पटाखे फोड़े जाते हैं.
मिठाईयाँ बांटी जाती है,
दीप जलाएं जाते हैं.
रंगोली के रंगों से द्वार सजाए जाते हैं. बंधन बार भी बांधे जाते हैं.
घरको खूब सजाते हैं.
दीवाली का यह त्यौहार,
हम सब साथ मिलकर मनाते हैं.

*****

वीर गाथा

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

हमारी संस्कृति विशाल,
हैं यह बड़ा अनमोल.
वीरगाथओं का संगम,
नहीं किसी का तोल.

नायक वीरों की कहानी,
है सदा प्रेरणा देता.
साहित्यिक परम्परा विहंगम,
वीर गाथा उत्सव कुछ कहता.

कथा सरिता जबानजो की,
व्यक्तित्व उनका बहादुर.
कर्म हैं कुछ एसा,
न्याय रक्षा से नहीं दूर.

कहानी सुनना और सुनाना,
मूल्यों का होता इतिहास.
सुरवीर रामायण और महाभारत की,
दूर नहीं, साहित्य है पास.

वीरगाथा की जिसने नींव रखी,
राम, कृष्ण, अर्जुन,जैसे महान.
भरा पड़ा इतिहास हमारे,
पीढ़ियों को नित देता ज्ञान.

विकट समय पर किया कारज,
महाराणा, बिरसा मुंडा क्रांतिकार .
दर्शाते हैं अपनी बहादुरी,
गया नहीं पद्यमती का नाम बेकार.

विवेकानंद जी को देखो,
धर्म इतिहास पर बड़ा प्रभाव.
दिया सन्देश देश को,
आपका सन्देश बिना अभाव.

आदर्श हैं यह गाँधी नेहरू,
भगत, चंद्रशेखर नायकों का योगदान.
लोककला वीरगाथा औऱ नृत्य से,
प्रहर, दिवस निश दिन होगा मान.

गाथाओं को फिल्मों से,
करता प्रसार वीर कहानी.
संस्कृति औऱ परम्पराओं का मेल,
गौरव गाथा को जन -जन ने जानी.

नमन उन बहादुर वीरों को,
जिनका स्वर्णिम इतिहास पर नाम.
मिलता सन्देश पीढ़ियों को,
वीरों को मेरा शत -शत प्रणाम.

*****

जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', शिक्षक- भाटापारा

1- नइ तो आवय येहा हाथ, रहिथे फुलुवामन के साथ.
रिंगी-चिंगी पाँखी संग, रस पी के इन फिरय मतंग.

2- भनभन-भनभन करथें खूब, फुलवा मा इन जाथें डूब.
बिरबिट करिया इँखरे रंग, कान करा करथें उतलंग.

3- बड़े बिहनिया येहा आय, संझौती बेरा मा जाय.
येखर संगे संग अँजोर, नइ ते अँधियारी घोर.

4- सरी जगत के करथे सैर, भुँइयाँ मा नइ राखय पैर.
दिन मा सोवय, जागय रात, करय अँजोरी रतिहा घात.

5- गिनत-गिनत मनखे थक जाँय, बगरय बादर कहाँ समाँय.
रतिहाकुन मा इन टिमटाम, बोलव झटपट का हे नाम.

6- करिया घोड़ा भागे जाय, पाछू घोड़ा लाल कुदाय.
ऊँच अगासे बहुते भाय, बोलव संगी ये हा काय.

7- बाँध डोर तैं झुलुवा झूल, हवा, दवा, फर देथे फूल.
मनखे के ये संगी जान, इही बचाथे सबके प्रान.

8- नइ हे येखर कोनो रंग, ढलथे येहा सबके संग.
आँच परे बादर चढ़ जाय, जाड़ परे पखरा बन आय.

9- दिखय नहीं पर चलथे जोर, सरसर-सरसर करथे शोर.
जीव जगत के सिरतों आस, येखर बल मा सबके साँस,

10- रिंगी-चिंगी फूलँय फूल, तितली भौंरा झूलँय झूल.
रहिथे येमा जी रखवार. जानव येला तुरते यार.

11- रहिथें जुरमिल छाता डार, रानी संगे सौ बनिहार.
चुहक-चुहक रस, मैंद सकेल, गुरतुर मधुरस ठेलम-ठेल.

1 -तितली
2 -भौंरा
3 -सुरुज
4 -चंदा
5 -चँदैनी
6 -आगी
7 -रुखराई
8 -पानी
9 -हवा
10 -फुलवारी
11 -मछेर

*****

माँ की याद

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

बड़ी सुहानी ये नवरात्रि,
ममतामयी माँ कालरात्रि.
माँ शारदा की शारदीय नवरात्रि,
है ये नौ सुखों की रात्रि.

माँ दुर्गा के ये नौ स्वरूप,
भक्तों पर प्रेम बरसाता भरपूर.
ना होने देती माँ कभी अत्याचार,
अपने प्रिय भक्तों के साथ.
उनका आना खुशियों की बौछार,
लेकिन वो दुष्टों का करती भी है संहार.

शेरों की वो करती सवारी,
और करती सोलह श्रृंगार.
ये नौ रात और दस दिन,
सच में लाती मधुरता की बहार.

नौ दिन के लिए आती माँ,
और हर लेती जीवन का दुख.
सभी त्यौहारों मे पसंदीदा सबसे,
नवरात्रि ही है प्रमुख.

लेकिन जैसे ही आती है,
वो घड़ी विदाई की.
आँखे सबकी भर जाती है,
याद आती महामाई की.

जस गीत जो गाते तेरे लिए,
किसके लिए अब गाएंगे ?
तू जब तक न लोरी गाएगी,
हम कैसे सो जाएंगे ?

तेरी कृपा की आंचल माँ,
याद हमेशा आएगी,
इतनी जल्दी क्यों चली गई माँ ?
हमें तेरी बहुत याद आएगी.

*****

देश के प्यारे बच्चों

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू बिलाईगढ़

ऐ मेरे देश के प्यारे बच्चों!
तुम हो कल के भविष्य निर्माता.
बदल सकते हो तुम देश का,
भविष्य बनकर भाग्य विधाता.
तुम भी बन सकते हो,
गांधी तिलक सुभाष जैसे.
देश का प्रहरी बनकर रहोगे,
भूलेंगे तुम्हारा उपकार कैसे.
माता- पिता प्रथम गुरू हैं तुम्हारे,
तुम उनका सम्मान करना.
उन्हीं की बदौलत बड़े हुए हो,
मत उनका अपमान करना.
मन में दृढ़ संकल्प लेकर,
सच्चाई की ओर ही आगे बढ़ना.
अगर आ जाये तूफान तुम
तूफानों से कभी नहीं डरना.
छू सकते हो तुम भी,

ऊँचाई आसमान की.
ऊंचा कर सकते हो नाम विश्व में
अपने प्यारे हिंदुस्तान की.
ऐ मेरे देश के बच्चों !
तुम सदा करो ऐसा काम.
भारत का हर आदमी करे,
तुम पर सदा अभिमान.

*****

चिड़िया और दाल का दाना

रचनाकार- श्रीमती मंजू पाठक, दुर्ग

एक बार आसमान में एक चिड़िया उड़ रही थी.उसे नीचे जमीन पर दाल के दाने दिखे,वह चिड़िया नीचे आई और अपनी चोंच से उन दाल के दानो को उठाकर उड़ने लगी.

कुछ दूर उड़ने के बाद अचानक उसकी चोच से दाने नीचे गिर गए और एक लकड़ी के बीच में जाकर फंस गए.

वह चिड़िया उस लकड़ी के पास आई और बोली -लकड़ी जी, लकड़ी जी,आप मेरे दाल के दाने दे दीजिए मैं अपने बच्चों को खिलाऊंगी.लकड़ी बोली -मैं नहीं दूंगी. वह चिड़िया एक बढ़ई के पास गई और बोली -बढ़ई जी, मेरे दाल के दाने लकड़ी में फस गए हैं,आप उसे काट दीजिए जिससे मैं दाने लेकर अपनी बच्चों के पास चली जाऊं,वे भूखे हैं. वह बोला -तुम्हारे कुछ दाने के लिए मैं लकड़ी नहीं काटूंगा,जाओ.

वह चिड़िया उदास हो गई और राजा के पास गई. उसने राजा से कहा- राजा जी,आप बढ़ई को डांट दीजिए वह लकड़ी नहीं काट रहा है, जिसमें मेरे दाल के दाने फंसे हे.राजा बोला -तुम्हारे कुछ दाने के लिए मैं बढ़ई को नहीं डाटूंगा जाओ.

चिड़िया और उदास हो गई और वह रानी के पास गई और बोली- रानी जी, रानी जी,आप, राजा को समझाइए कि वे बढ़ई को डांटे लकड़ी में मेरे दाने फंसे हैं और मेरे बच्चे भूखे हैं.रानी बोली- तुम्हारे कुछ दाने के लिए मैं राजा को नहीं समझाऊंगी. जाओ,चली जाओ.

चिड़िया पूरी तरह से उदास हो गई. फिर भी वह हार नहीं मानी और एक सांप के पास गई और बोली- सांप भैया,आप रानी जी को काट लीजिए,वह राजा को नहीं समझा रही है,राजा बढ़ई को

नहीं डांट रहे हैं और बढ़ई लकडी नहीं काट रहा है,जिसमें मेरे दाल के दाने फंसे हैं.मेरे बच्चे भूखे हैं. यह सुनकर सांप बोला -बस, इतनी सी बात,अभी जाता हूं,रानी को डस लूंगा.वह रानी के पास गया,रानी डर गई और बोली- मैं,अभी राजा को समझाती हूं,वह राजा को समझाती है,राजा बोला -ठीक है, मैं अभी बढ़ई को डांटता हूं. बढ़ई जैसी ही लकड़ी काटने चला, लकड़ी ने कहा -मुझे मत काटो, मैं अपने आप दाने निकाल देती हूं. उसने दाल के दाने निकाल दिए. चिड़िया उसे लेकर उड़ गई और अपने बच्चों को ले जाकर खिलाई.

तो बच्चों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपना कार्य पूरी निष्ठा के साथ करनी चाहिए. हार नहीं माननी चाहिए,सफलता अवश्य मिलती है.

*****

नारी

रचनाकार- उर्मी साहू, कक्षा - छठवीं, विद्यालय स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार, शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल, तारबहार, बिलासपुर

सुना है,परियों के देश से आई है,
धरती पर रहती है.
मौन ही उसका शस्त्र है,
पर सदा मौन न रहती है.

है कल्याणी, वह सरस्वती,
वह गृहलक्ष्मी का भी अवतार.
पर बन आए तो रणचंडी,
आदिशक्ति बन करती वह उद्धार.

समस्त दुख-पीड़ाओं को,
हरदम वह सहती है.
खुद पीड़ा से घिरी रहे,
पर रिश्तों को प्रेम से सेती.

खुद जीवन से लड़कर,
नवजीवन वह देती है.
सुना है परियों के देश से आई है,
धरती पर रहती है.

*****

पेड़

रचनाकार- अर्पिता साहू, सातवीं, स्वामी आत्मानंद से गफ्फार अंग्रेजी मीडियम स्कूल तारबाहर बिलासपुर

पेड़ से हमें जीवन मिलता.
हवा,छाया,फल सबको देता.
प्रदूषण से ये हमें बचाते हैं.
हमने ये शपथ लिया है.
पेड़ हमें खूब लगाना है.
जीवन हमें बचाना है
तो पेड़ को बचाना है.
पेड़ से जीवन है तो पेड़ से संसार है.
आओ सब मिलकर पेड़ लगाए अपना जीवन सुखमय बनाएं.

*****

जुनून पर कविता

रचनाकार- शिखा मसीह, 8वीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार सरकारी अंग्रेजी माध्यम स्कूल तारबहार बिलासपुर

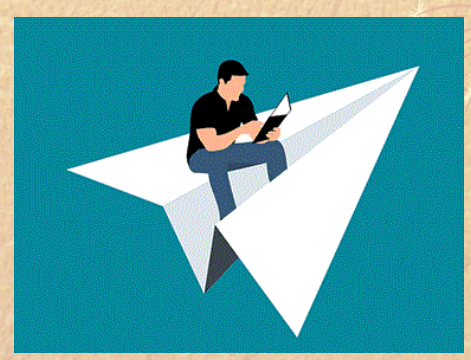

जुनून एक जिंदगी का हिस्सा है
जुनून एक जिंदगी का हिस्सा है
अपनी जिंदगी में शामिल किये
तो किसी भी मंजिल को पाना हमारे लिए मुमकिन हो जाता है.

जुनून एक ऐसी चीज है
जो जिंदगी में एक बार आ गया
तो हम हमारी सोच से भी आगे बढ़ जाते हैं.

जुनून एक ऐसी चीज है
जो हर जीत के पीछे खड़ा होता है.

जुनून हमारे अंदर की एक ऐसी अग्नि है
जो हमें हर चुनौती के लिए साहस देता है.

जुनून हमें एक ऐसी सीख देती है
जो हमारी जिंदगी बदल देती है.

जुनून एक ऐसी चीज है
जो हमारे कोशिश और हमारे संघर्ष में कामयाबी देता है.

*****

आकर्षक खिलौने

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

अध्यापक ठाकुर जी कक्षा सातवीं में आए. बोले- "बच्चों ! कल से दशहरे की छुट्टी हो रही है पाँच दिनों के लिए; यानी शुक्रवार तक. बच्चे खुश हो गए. ठाकुर जी फिर बोले- "दशहरे की छुट्टी का आनंद लेने के साथ तुम सबको एक गृहकार्य भी करना है; और उसे कम्प्लीट करके जब स्कूल आओगे तब लाना है.

"क्या करना है सर जी गृहकार्य में; और जिसे स्कूल भी लायेंगे?" बच्चे एक स्वर में बोले.

"सबको खिलौना बनाकर लाना है; चाहे वह मिट्टी का हो, लकड़ी का हो या चाहे फूल, पत्ते, पत्थर का हो ; पर स्वयं का बनाया हुआ होना चाहिए. ध्यान रहे, सुंदर हो, मजबूत हो और आकर्षक भी हो. स्कूल आने के दिन उसे अनिवार्य रूप से लाना ही है." ठाकुर जी ने कहा. बच्चों ने हाँ में सर हिलाया. फिर छुट्टी हो गयी.

दशहरे की छुट्टी खत्म हुई. बच्चे खुद के बनाये हुए खिलौने लेकर स्कूल आए. सबने बरामदे पर खिलौनों को रखा. अध्यापक ठाकुर जी ने सभी बच्चों से कहा कि तुम सब बारी-बारी अपने-अपने खिलौने के बारे में बताते जाओ."

"सर जी ! यह एक कार है. इसके सभी कल-पुर्जे बहुत मँहगे हैं. इन सबको मैनें स्वयं खरीद कर बनाया है. बहुत खर्च करना पड़ा, तब यह इतना अच्छा बन पाया." नीतिश ने सबसे पहले अपना खिलौना दिखाया.

फिर राघव बोला- "यह एक डबलस्टोरी बिल्डिंग है सर जी. इसकी डेंटिंग-पेंटिंग मैनें खुद की है ." राघव की आवाज में बड़ा दम था.

महेंद्र की बारी आई. उसने भी अपने खिलौने का मुस्कुराते हुए परिचय दिया-" सर जी! देखिए न... मैं स्वयं हूँ. मैनें स्वयं को एक खिलौने का आकार दिया है. इसके लिए मैनें अपनी मम्मी से पैसा लिया है. मेहनत तो कम की है मैनें, पर पैसा बहुत लगाया है सर. क्यों , मैं अच्छा लग रहा हूँ न सर?"

"यह एक एंड्राइड मोबाइल फोन है सर जी. गीतिका सबको अपना खिलौना दिखाते हुए बोली- "लग रहा है ना सर बहुत बढ़िया ?"

इस तरह बच्चों ने अपने-अपने खिलौने का प्रदर्शन किया. अब सबकी नजर नीरज पर टिकी. वह चुपचाप से सकुचाया हुआ बैठा था. अपनी बारी आने पर भी वह खिलौना नहीं दिखा रहा था. कहने लगा- "मेरा खिलौना तो इन खिलौनों के सामने कुछ नहीं है सर जी, मैं क्या दिखाऊँ ?"

"अरे नीरज, तुम जो भी बना कर लाए हो; दिखाओ." अध्यापक नीरज की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले.

"सर जी मेरे मम्मी पापा तो चंद्रपुर कमाने खाने गए हैं. घर में मैं, दादी और मेरी छोटी बहन रहते हैं. हमारे घर पैसा वैसा नहीं है सर." नीरज अपने खिलौने वाले थैले को पीछे छुपाने लगा.

"क्या है उसमें जी, हम लोग भी देखेंगे." ठाकुर जी ने बड़े प्यार से नीरज के सर पर हाथ रखा.

"अंत में नीरज ने अपना खिलौना सबके सामने टेबल पर रख दिया. खिलौनों को देखकर अध्यापक ठाकुर जी गदगद हो गए. बच्चे भी बड़ी अचरज भरी नजरों से एक-दूसरे को देखते हुए नीरज के खिलौनों को निहार रहे थे- ढेर सारे मिट्टी के सुंदर छोटे-छोटे व विभिन्न आकृतियों के दीये थे. तभी अध्यापक ठाकुर जी मुस्कुराते हुए बोले- "वाह ! बहुत सुंदर-सुंदर दीये बनाये हैं तुमने. यह सबसे बड़ा व सुंदर दीया किसलिए...नीरज ?"

नीरज ने कहा- "सर जी ! इसे मैं दीपावली की रात को अपने स्कूल के मुख्य द्वार पर जलाऊँगा.

सभी बच्चों की नजर सिर्फ नीरज की दीये पर थी.

*****

हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी धरोहर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

हमारे देश की हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सार्वभौम है.जन-जन के लिए सर्वसुलभ है.हिंदी सहज है,सरल है,बड़ी रोचक है. हिंदी हमारी मातृ भाषा है.हिंदी हमारी जान है.हिंदी हमारे रोम-रोम में बसी है,हिंदी हमारी शान है,हमारी मान है,हमारा सम्मान है.जन्म से लेकर मरण तक यदि कोई हमारे साथ रहती है तो वह है हमारी हिंदी.हिंदी के बिना हमारा जीवन अधूरा और अपूर्ण है.हिंदी सभी भाषाओं की आधारशीला है.हमारी हिंदी में शालीनता है,हमारी हिंदी में,बड्डुप्पन है,हमारी हिंदी में मर्यादा है,हमारी हिंदी में रोचकता है,हमारी हिंदी में हम की भावना है,हमारी हिंदी में एकता की भावना है,हमारी हिंदी में समरसता की भवना है.हमारी हिंदी में सम्मोहन और लगाव की भावना है.हिंदी हमारी बहुत प्यारी है,न्यारी है,और हमारे भारत वासियों की दुलारी है.हिंदी हमारे मस्तक की बिंदी है.हमारे देश की पहचान है.हमारे देश की शान है.

हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी धरोहर है.और इसे यूँ ही धरोहर नही कहा जाता इसके पीछे बहुत बड़ा करण है और वह कारण है हमारे देश की विशाल साहित्य,जिसमें बड़े- बड़े महाकाव्य,खंड काव्य,मुक्तक काव्य,साथ ही साथ,उपन्यास,कहानी,नाटक,एकांकी,समीक्षा,

आत्मकथा,संस्मरण,डायरी,पत्र लेखन,निबंध,लिखे गये हैं जो हिंदी में लिखे गये.इसी प्रकार धर्म ग्रंथ शास्त्रों की बात करें तो हमारे देश की महान धार्मिक ग्रंथ जैसे वेद,पुरान गीता,रामचरित मानस आदि.और हमारे देश की महान विभूतियाँ और उनकी बड़ी-बड़ी प्रसिद्ध कृतियाँ,हमारे देश की महान और विशाल पुस्तकालय,हमारे देश की बड़ी-बड़ी शिक्षण संस्थाएँ, विश्वविद्यालय,ज्ञानपीठ,शोध संस्थाएँ,गुरुकुल,और हमारा हिंदी साहित्य भंडार.इसके अलावा हमारा हिंदी साहित्य का इतिहास.जहाँ पर आदिकाल,भक्तिकाल,रितिकाल,

आधुनिक काल,छायावाद,रहस्यवाद,प्रगतिवाद,प्रयोगवाद,नई कविता आदि में हमारी हिंदी का वर्चस्व, हिंदी का बोलबाला, हिंदी का प्रभाव हम सहज ही में देख सकते हैं, जो किसी चमत्कार,उपकार,वरदान या किसी धरोहर से कम नही है.आइये हम हिंदी की समृद्धि,प्रगति के लिए हर सम्भव प्रयास करें.और यह संकल्प लें की हम हिंदी का सम्मान करते हुए लिखित और मौखिक दोनो रूपों में इसका प्रयोग करेंगे.

*****

हरतालिका तीजा के दिन आगे

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

अब आगे हरतालिका तीजा के तिहार
जम्मों डहर तीजा के माहोल छागे
सब माई लोगिन मन
जावत हवैंय अपन मइके
बेटी, माई के तिहार आगे
झूलना मा झूलत हवैंय
उपवास रहत हें भादो महीना मा
अपन गोसइया के जादा उमर बर
हाथ मा सुघ्घर मेंहदी रचाके
पहिन-ओढ़ के करत हें सिंगार

*****

तीजा के तिहार

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

घेरी-बेरी अंगना मा निकल के, रद्दा ला देखत हौंव बाबू.
नइ आवथच काबर लेगे बर, आँखी ले गिरत हे आँसू.

गाँव के जम्मों माई लोगिन मन, कुलकत चल दिन मइके.
परान भूकुर-भूकुर करत हे, का करहूँ ससुरार मा रहिके.

काखर मेर भेजौंव सोर, पता, तोला कोने जाही बताएला.
झटकुन आजा अबेर झन कर, तीजा मा मोला लेवाएला.

ननंद-भउजी मन ताना देत रहिन, कोनो नइहें तोर पुछइया.
ओतकेच समय तुमन पहुँचेव, लेगे बर मोला बाबू-भइया.

मइके जाके दाई-दीदी संग, सुख-दुख के बात गोठियाबो.
नवा-नवा लुगरा पहिन के, हरतालिका तिहार ला मनाबो.

करुहा करेला साग अउ भात खाहूँ, रहिहूँ निर्जला उपास.
केरा के पाना ले मंडप बना के, सुमर के करहूँ पूजा-पाठ.

गौरी-शंकर के प्रतिमा बइठा के, बरदान माँगहूँ मैंय आज.
गोसइया मोर जुग-जुग जिए, हँसी-खुशी से रहय सुहाग.

साबू दाना ला पी के, ठेठरी अउ खुरमी के करबो फरहार.
घूम-घूम के खाबो घरो-घर, खाके साध बूता जाही हमार.

*****

घनघोर वर्षा

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, जिला- मुंगेली

ठण्डी-ठण्डी हवा है आई
पानी को साथ में लाई.
धीरे-धीरे बादल भी छाए
तेजी से बारिश भी ले आई.

साथ-ही-साथ सर्दी भी आई
धीरे-धीरे बुखार भी आया.
मम्मी-पापा को हुई है टेंशन
तेजी से बारिश फिर आई.

खेत-खलिहान भर जाते हैं
नदी तालाब डूब जाते हैं.
किसानों की थी खुशियाली
अब लुट गई उनकी खुशियाली.

किसानों को हुई है टेंशन
तब बादल को कोस रहे थे.
कितना ज्यादा बोल रहे थे
मुश्किल आई वर्षा वाली.

*****

तीजा-पोरा

रचनाकार- कु. सुनयना बंजारा, कक्षा-7 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

तीजा-पोरा मा खुशी आथे
सब के बेटी घर आथे.

तीजा-पोरा मा बहनी मन आथें
तीजा-पोरा मा सब झन
रोटी-पीठा बनाथें अउ
परिवार भर बइठे-बइठे खाथें

तीजा-पोरा के गुन गावा
खुशी से तिहार मनावा.
तीजा-पोरा के तिहार
लाए हवय बहार.

*****

दोहे

रचनाकार- कामिनी जोशी, कस्तुरबा ग़ांधी बालिका आवासीय विद्यालय दुल्लापुर बाजार

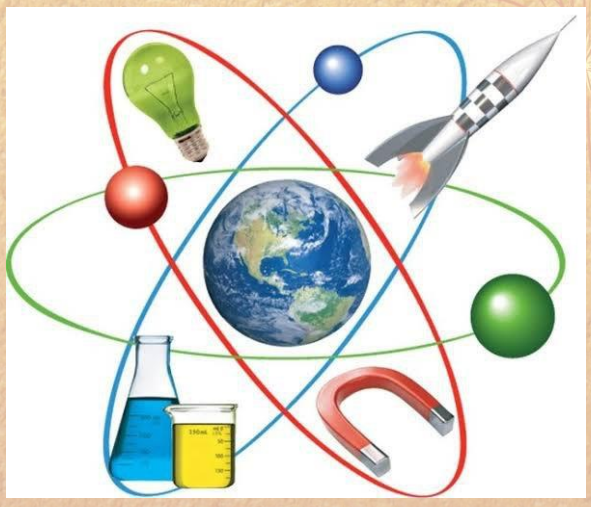

मटर में करके प्रयोग, दिया नाम विज्ञान.
आनुवंशिकी के पिता, मेंडल हुये महान.

दूर देश के मित्रों से, बात कराता कौन.
ग्राहम बेल का शुक्रिया, दे गये टेलीफोन.

नीले लिटमस पत्र को, कर देते वह लाल
कहते है हम अम्ल उसे, अंग न देना डाल

किसी जीव का किस जगत, होता है स्थान.
ऐसा लीनियस ने दिया, वर्गीकरण विज्ञान.

जिसको चाहे भेज दो, अब तुम टेलीग्राम.
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम.

फिल्म देखने का जिसे, सचमुच में है शौक.
एडीसन ने पेश किया, उसको बाइस्कोप.

कैसी तारों की बस्ती, या उनका आलोक.
गैलिलियो ने बता दिया, देकर टेलीस्कोप.

चाहे तुम सूट सिलाओ, या सिलवाओ जीन्स.
एलियास देकर गए, ऐसी सिलाई मशीन.

*****

बेजुबान पशु पक्षी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीयों की संवेदनशीलता जग प्रसिद्ध है. यह गुण भारत माता की मिट्टी में ही समाया हुआ है. संवेदनशीलता का यह भाव केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं है, यह संवेदनशीलता बेजुबान पशु पक्षियों जानवरों के प्रति भी कूट-कूट कर भरी है. भारत एक आध्यात्मिकता से परिपूर्ण देश है. भारतीयों के स्वभाव में ही मैत्रीपूर्ण व्यवहार, दया, करुणा भरी है. धर्म मानवता का विस्तार करता है, मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी उसकी करुणा में आश्रय पाते हैं. भारतीय संस्कृति में पशु पक्षियों के प्रति प्रेम, सह-अस्तित्व और यहाँ तक कि उनकी पूजा की भी परंपरा रही है. भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार जीवों की उत्पत्ति जल से हुई है.वृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि सबसे पहले जल में सूक्ष्म जीव की उत्पत्ति हुई, उससे दूसरा जीव बना और उनके संयोग से धीरे-धीरे चींटी, बकरी, वराह आदि जीवों का विकास हुआ.

अगर हम वर्तमान समय में बेजुबान पशु पक्षियों जानवरों की बात करें तो बदलते परिवेश,जलवायु परिवर्तन की भयंकर त्रासदी,बढ़ते शहरीकरण बदलते पर्यावरण, जंगलों की कटाई इत्यादि अनेक कारणों से बेजुबान पशु पक्षियों, जानवरों के लिए भीषण समस्या खड़ी हो गई है. साथियों कई प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी है तो कई प्रजातियाँ विलुप्तता के कगार पर खड़ी है. अब समय आ गया है कि हम अपनी पूर्ण संवेदनशीलता का उपयोग करें.

मानव तो बोल कर अपनी समस्या या जीवनपथ की कठिनाइयों को सुलझा सकते हैं, परंतु इन बेजुबान जीवो की सुरक्षा व रक्षा करने का समय अब आ गया है. साथियों प्राकृतिक विपत्तियों, पिछले साल से कोरोना महामारी भयंकर त्रासदी, के कारण विपरीत प्रभाव मूक प्राणियों के ऊपर भी पड़ा है जिसका हमें संज्ञान लेकर इन मुक्त जानवरों के प्रति मैत्री भाव रखना ज़रूरी हो गया है, क्योंकि हम भारतीय हैं और बेजुबान पशु पक्षियों, जानवरों के प्रति मैत्री, भाव, करुणा, रक्षा, मदद का भाव रखना उन्हें क्रूरता से बचाना, ईश्वर की अनमोल आराधना है.

साथियों बात अगर हम पशु पक्षियों, जानवरों को क्रूरता से बचाने की करें तो भारत में इसके लिए केंद्र व राज्यों में अनेक कानून बने हैं जिनमें भारतीय वन्य जीव संरक्षण (संशोधित) अधिनियम 2002 तथा भारतीय संविधान में जानवरों की सुरक्षा के लिए आर्टिकल अत्यंत महत्वपूर्ण है. पशु क्रूरता रोकने के लिए कानून को सख्त करना पड़ेगा. कठोर प्रावधान सिर्फ कागजों में ही सीमित न हों, बल्कि सख्ती से लागू भी होने चाहिए और दण्ड राशि में बढ़ोतरी होनी चाहिए. पशुपालको को प्रोत्साहन राशि देनी चाहिए, पशु बीमा योजना को बढ़ावा देना होगा. पशु चिकित्सालयों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए और उनमें पड़े रिक्त पदों की पूर्ति होनी चाहिए,उनमें आधुनिक सुविधाओं के साथ मुफ्त दवाइयाँ उपलब्ध होनी चाहिए. सरकार को गौशालाओं की तर्ज पर अन्य पशुओं के लिए भी पशुशालाएँ खुलवा देनी चाहिए. पशुधन बढ़ाने के लिए सस्ती दरों पर लोन उपलब्ध कराने से लोगों का पशुपालन के प्रति रुझान होगा एवं उनका मनोबल बढ़ेगा. इससे पशुओं के प्रति क्रूरता कम होने के साथ रोजगार भी बढ़ेगा. पशुओं पर क्रूरता को रोकने के लिए संबंधित कानूनों का सख्ती से पालन कराएँ. विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाएँ स्थानीय प्रशासन से सामंजस्य स्थापित कर आवारा पशुओं के लिए आवास, भोजन, जल, चिकित्सा जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ. चारागाह को संरक्षण दिया जाए. पशु हिंसा को रोकने के लिए सख्त कानून बनाने होंगे. पशुओं के साथ क्रूरता की घटनाएँ बहुत ज्यादा हो रही हैं. सड़क पर रहने वाले जानवरों से लेकर पालतू पशुओं तक को क्रूरता झेलनी पड़ती है. दूध निकालकर गायों को भी यूँ ही छोड़ दिया जाता है. भूखी-प्यासी गाएँ कचरे में मुंह मारती नजर आती हैं. कुत्ते बहुत ज्यादा क्ररता झेलते हैं. पाड़े, घोड़े, खच्चर, ऊंट, बैल, गधे जैसे जानवरों का इस्तेमाल माल की ढुलाई के लिए किया जाता है. इस दौरान उनके साथ बहुत ज्यादा क्रूरता होती है. पशुओं की तकलीफों को लेकर बिलकुल भी जागरूकता नहीं है. अभी हाल ही में मार्च में केरल के मल्लपुरम में गर्भवती हथिनी के साथ हुई निर्मम हिंसा को भारतीय नागरिक अभी तक भूले नहीं हैं. पशुओं के प्रति क्रूरता रोकने के लिए शासन प्रशासन सख्त होना चाहिए जेल भी हो और साथ-साथ भारी जुर्माना भी हो, ताकि लोगों में डर पैदा हो. मीडिया पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए काम करने वाले लोगों के बारे में ज्यादा से ज्यादा बताए. पशु कल्याण अधिकारी के नाम, फोन नंबर का प्रचार किया जाए. पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए काम करने वाले सभी सरकारी विभागों और संस्थाओं के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दी जाए, ताकि लोगों में जागरूकता पैदा हो.

*****

कोशिश कर

रचनाकार- महेन्द्र कुमार साहू "खलारीवाला", गुण्डरदेही बालोद

फासले भी गुजर जाएँगे,मंजिल भी मिल जाएगा.
कोशिश कर जीवन में हर समस्या का हल पाएगा.

हार न मान,उदास न बैठ,तुम्हारा भी जरूर नाम होगा.
कोशिश कर,हर बाधा से जूझना आसान काम होगा.

आँधियों का दौर चलता रहेगा,इस जीवन चक्र में.
मरुभूमि की तपिश सहन कर,जीवन भी आसान होगा.

राह भटकाने वाले भी मिलते रहेंगे इस जगत में.
अडिग रह लक्ष्य पर,जरूर तुम्हारा मुकाम होगा.

कोशिश से ही जीवन में हर काम आसान होगा.
जीवन का फलसफा सीख,तेरा पथ आसान होगा.

आसमाँ पर उड़ने वाले परिंदे अपना हुनर जानते हैं.
कोशिश कर,उन परिंदों की भाँति गगन अवश्य तुम्हारा होगा.

*****

1 से 10 तक गिनती

रचनाकार- श्रीमती सरोजनी साहू, सारंगढ़

1 एक बड़े राजा की बेटी.
2 दिन से बीमार पड़े.
3 सिपाही दौड़े आए.
4 दवा की पुड़िया लाई.
5 मिनट में गरम कराई.
6 घंटे बाद पिलाई.
7 दिन में आंखें खोली8 दिन में ताकत आई.
9 दिन में दौड़ लगाई.
10 दिन में साला को आई.

*****

हमारी सेना

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा

मम्मी बोलीं चिंटू जी से-
बेटा मानो बात हमारी.
जाओ चीनी लेकर आओ
खत्म हो गई चीनी सारी.

काम टालते ही रहते हो
लापरवाही नहीं चलेगी.
देखो अभी कहे देती हूँ
चाय शाम को नहीं मिलेगी.

चिंटू बोले- मम्मी! सुनिए
चाय भले ही तुम मत देना.
लेकिन चीन और चीनी का
नाम भूलकर भी मत लेना.

अब जबाब मुँहतोड़ उसे भी
उसकी ही भाषा में देना.
उससे दो-पग आगे ही हैं
हम सब और हमारी सेना.

*****

अपना पराया

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

अभी तक खेत से माँ-बाबूजी दोनों नहीं आये हैं. कम से कम माँ को तो आ ही जाना चाहिए था. पता नहीं, इतनी बारिश में वे दोनों कहाँ होंगे. घर से बार-बार निकल कर सुमन, राधे और गौरी की राह ताक रही थी.

शाम का समय था. घड़ी की सुइयाँ पाँच बजा रही थीं. बारिश का मौसम था; सो अँधेरा छाने लगा था. तरह-तरह के कीट-पतंगे व झींगुर की आवाज सुमन के कानों में गूँज रही थी. सुमन बहुत डरी हुई थी आज. कई तरह की शंकाएँ सुमन को घेर रही थी- "पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ था; पता नहीं आज अचानक क्या हो गया? वे दोनों खेत से जल्दी आ जाया करते थे."

सुमन के दिलो-दिमाग विचलित था. उसका किसी कार्य में मन नहीं लग रहा था. देखते ही देखते बादल गरजना शुरू हो गया. बिजली भी चमकने लगी. तभी उसे कुछ दिन पहले गाँव में हुई एक घटना याद आने लगी. वह सहम गयी. खेतों में काम कर रही महिलाओं के ऊपर गाज जो गिर गयी थी. सब ने दम तोड़ दिया था. बार-बार वह दृश्य आँखों के सामने झूल रहा था रहा था. अब तो सुमन की मन ही मन बात हो रही थी कि माँ-बाबू जी दोनों से मैंने कहा था कि जल्दी आना. पर वे मेरी बातें नहीं सुनते.

जैसे ही सुमन घर के अंदर आयी, बिजली चली गयी. जैसे-तैसे उसने मोमबत्ती जलाई. घर में रोशनी हुई. मन थोड़ा शांत लगा. सुमन घबराने लगी थी- "हे प्रभु ! मेरे माँ-बाबू जी जल्दी घर आ जाए. मुझे बहुत घबराहट हो रही है. कहीं... कुछ...!"

थोड़ी देर बाद सुमन को राधे की आवाज सुनाई दी- "सुमन ....! अरी ओ सुमन बिटिया ! जरा मोमबत्ती बाहर लाना तो; बहुत अँधेरा है." सुमन की जान में जान आई. "जी बाबू जी...." कहते

हुए बाहर निकली. सुमन की आँखें माँ को ढूँढ रही थी- "बाबू जी, माँ कहाँ है ? आप लोगों ने इतनी देर क्यों लगा दी आने में ? देखो न, बस बारिश होने ही वाली है; जल्दी आना चाहिए था ना. क्या कर रहे थे आप लोग अभी तक ?"

तभी पीछे से माँ नजर आयी. सुमन मुँह बनाते हुए बोली- "आप दोनों को मेरी बिल्कुल चिंता नहीं है." तभी अचानक अपनी माँ गौरी को देखते ही सुमन की आँखें फैल गयी. उनकी गोद में एक छोटा सा घायल बछड़ा था.

सुमन चुपचाप घर के अंदर चली गयी. सुमन का गुस्सा और भी तेज हो गया था. बोलने लगी कि इतनी रात हो गयी; और आप लोग इस बछड़े को लाये. इसकी क्या जरूरत थी. मैं यहाँ परेशान हूँ. तरह-तरह के मन में ख्याल आ रहे हैं और आप लोग, बस !"

राधे और गौरी ने सुमन को शांत करते हुए पूरी घटना की जानकारी दी- "इस बछड़े ने कुछ देर पहले ही जन्म लिया था और इसकी माँ उसे छोड़ कर कहीं चली गयी थी. बछड़ा हम्मा...हम्मा... कर रहा था. इसकी मदद करने वाला कोई नहीं दिखा. तेज बारिश भी हो रही थी. बेचारा भीग रहा था. हमें लगा कि बछड़ा बेसहारा है. रात को भला कहाँ जायेगा ? यदि कभी कोई तुम्हें मदद माँगे तो क्या तुम छोड़ कर आ जाओगी सुमन ? मदद नहीं करोगी ? अरे ये तो बेचारा बोल नहीं सकता , तो क्या हम इनकी भाषा भी न समझें. हमें सब की मदद करनी चाहिए सुमन." गौरी बोलती ही रही- "सुमन, तुम ही बताओ. अभी थोड़ी देर पहले तुम हम दोनों के बगैर कैसे तड़प रही थी ? जबकि तुम्हें तो पता ही है कि हम आयेंगे ही; फिर भी?"

माँ और बाबू जी की बातें सुन सुमन ने अपनी ओर देखते उस मासूम बछड़े को गले से लगा लिया. राधे और गौरी सुमन व बछड़े दोनों को सहला रहे थे.

*****

सीख

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर

बहुत पहले की बात है. पुराने जंगल में बंदर का एक परिवार रहता था. बंदर का बच्चा बहुत ही चंचल और शरारती था. माता-पिता हमेशा उसे समझाते थे कि शरारत नहीं करनी चाहिए , बड़ों की बात माना करो. लेकिन वह छोटा बंदर कभी किसी की बात नहीं सुनता और हमेशा अपनी मनमानी करता था.

एक दिन की बात है, बंदर और बंदरिया अपने बच्चे के साथ पानी पीने नदी किनारे पहुँचे. तभी बंदर के बच्चे की नजर पानी में बहते हुए संतरे पर पड़ी. बच्चे ने आव देखा न ताव और उस फल को खाने के लिए झट से नदी में कूद गया. पानी गहरा व बहाव तेज था. बच्चे को तैरना भी नहीं आता था. अतः बंदर का बच्चा नदी की तेज धार में बहने लगा और डूबने लगा; उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था. यह देखकर उसके पिता ने तत्काल नदी में छलांग लगाई और छोटे बंदर को किनारे तक ले आया. उसकी जान बच गई.

बंदर के बच्चे को अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ और भविष्य में बड़ों की बात हमेशा मानने तथा कभी शरारत नहीं करने का प्रण किया.

*****

होली

रचनाकार- राजश्री राठी, महाराष्ट्र

होली आई, होली आई
रंगों वाली होली आई.

लाल, गुलाबी, नीला, पीला
मन को भाए रंग चटकीला.

मिलजुलकर आपस में रहना
प्रेम रंग में सभी को बहना.

ऊँच-नीच का भेद मिटाओ
सबको गले लगाते जाओ.

वृक्षों को हम नहीं काटेंगे
कूड़ा-कचरा जलाएँगे.

रंग गुलाल हम उड़ाएँगे
व्यर्थ जल को न बहाएँगे.

रखना मीठी तुम बोली
सन्देश यहीं लाई होली.

*****

पंछी

रचनाकार- राजश्री राठी, महाराष्ट्र

पंछी बनकर उड़ना चाहूँ
नील गगन को छूना चाहूँ.

रंग-बिरंगे पंखों से मैं
सैर बागों की करना चाहूँ.

इस डाली से उस डाली जाऊँ
हाथ किसी के मैं नहीं आऊँ.

दाना चुग-चुगकर मैं लाऊँ
जहाँ मन हो वहाँ उड़ जाऊँ.

कभी आम, कभी अमरूद खाऊँ
पेड़ों की छाया में सो जाऊँ.

मीठे प्यारे गीत सुनाऊँ
खुली हवा का आनन्द पाऊँ.

चुन-चुन तिनके घोंसला बनाऊँ.
ऊँची उड़ान मैं भरना चाहूँ.

साथियों संग-संग मैं उड़ जाऊँ
आजादी से रहना चाहूँ.

*****

समय

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

समय का चक्र चलता,
नित प्रहर दिवस.
रुकने का नाम नहीं,
हो गर्मी,सर्दी या पावस.

समय समेटे सारी घटनायें,
हैं यह बड़ा अनमोल.
जब निकले हाथ से,
नहीं समय का कोई मोल.

समय की नजरें सामान,
कर लो समय पर काम.
परख न सके समय को,
सब कुछ उनका जाम.

समय सभी को देखता,
हर घटना को समेटे.
नहीं किसी की प्रतिक्षा,
हर दिन हर कार्य को लपेटे.

समय का बड़ा मान,
होता समय बलवान.
समय निकले तो काम बिगड़े,
करना होता सबको इनका सम्मान.

इतिहास संजोये रखे समय,
भूत,वर्तमान व भविष्य .
घूमे साहित्य और समाज,
देते समय निशा दिवस को ताल.

बढ़ती उम्र समय के साथ,
करते रहिये समय पर काज.
रुकता समय कभी नहीं,
सफल पहने समय का ताज.

समय गिनाता आदि से अंत,
वह मिटता कभी नहीं.
याद रहता हर पल,
गुजरता रहता दिन रात यही.

देखता रहता नित वह,
इस बात से न हो अज्ञात.
समय,समय पर बता देता
तब कहता हमको नहीं था ज्ञात.

समय समय पर घटता,
अच्छी या बुरी हो बात.
देखता रहता वह बराबर,
निरंतर चलता रहता निज पात.

*****

तुझपे कुर्बान मेरी जान

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

शान तेरी ना घटे मेरी माँ
मान तेरी ना घटे मेरी माँ
विश्व की रहें सदा अभिमान
तुझपे कुर्बान कर देंगे जान

लहराता रहें हिम मे तिरंगा
बहती रहें नित पावन गंगा
नित बढ़ती रहें तेरी ही शान
तुझपे कुर्बान कर देंगे जान

दुनिया मे परचम लहराये
तेरे आगे कोई टिक ना पाये
सबसे ऊँचा हो तेरा मुकाम
तुझपे कुर्बान कर देंगे जान

चाँद पर होगा हमारा बसेरा
सूरज का भी लगाएंगे फेरा
बस यही हो सबकी जुबान
तुझपे कुर्बान कर देंगे जान

*****

सतत चलना ही जीवन

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

कल-कल बहती सरिता जीवन सी
तुष्ट करती धरा को शास्वत गंगा सी
इठलाती बलखाती चलती जाती है
सतत चलना ही जीवन सिखलाती है

सुख-दुख जीवन मे जब भी आते है
धैर्य का परीक्षा सहज ही हो जाते है
जीवन देखो,कैसे चलती ही जाती है
सतत चलना ही जीवन सिखलाती है

रास्ता खुद के लिए खुद ही बनाकर
परिश्रम को सहजता से अपनाकर
जब कर्म ही हमारी धर्म बन जाती है
सतत चलना ही जीवन सिखलाती है

कर्म पथ पर धृढता से आगे बढकर
राह की मुश्किलों से डटकर लड़कर
मंजिल की ओर ही हर कदम जाती है
सतत चलना ही जीवन सिखलाती है

*****

गुरु की कीजै नित सम्मान

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

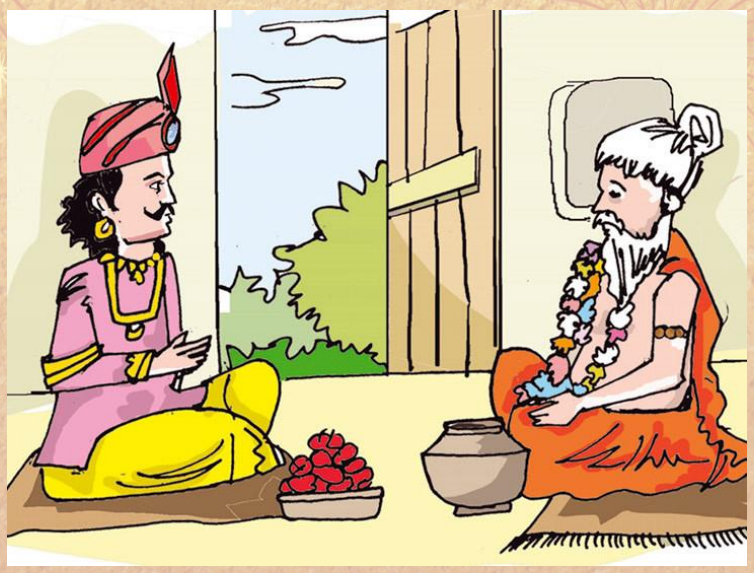

जन्म मरण का भेद बताया
अंतस का सब भेद मिटाया
सद्गुरु को सादर है प्रणाम
गुरु की कीजै नित सम्मान

जीवन का अँधियार मिटाकर
जीवन मे नवज्योति जलाकर
जीवन का बढ़ाया जैसे मान
गुरु की कीजै नित सम्मान

सद्गुरु मिले जीवन सुलझे
जीव आशा तृष्णा मे उलझे
कीजिये गुरुवर का ही गान
गुरु की कीजै नित सम्मान

गुरु से निज की गुरुता बढ़े
ज्ञान और मान सम्मान बढ़े

चरणरज से मिटे अभिमान
गुरु की कीजै नित सम्मान

गुरु ही भ्रम जाल मिटाये
आचरण से मान दिलाये
गुरुवर को कोटिशः प्रणाम
गुरु की कीजै नित सम्मान

*****

नये सपने सजायेंगे

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

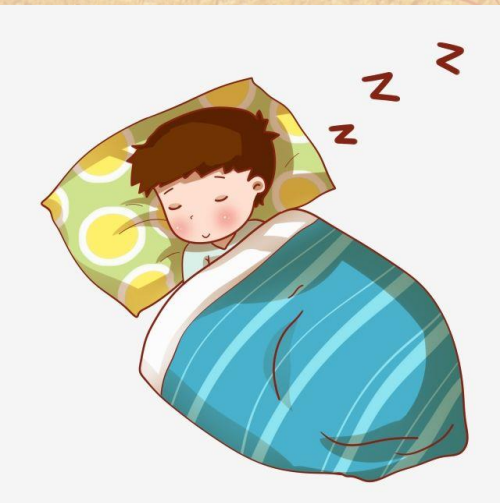

आशा निराशा के बीच उलझी जीवन मे
आश के प्रति नित संकल्प रखे जीवन में

संकल्पमय प्रयास से हर सपने होंगे पुरे
जीवन सार्थक होगा आयेगा नया सवेरे

विश्वास से जीवन की लड़ाई लड़ना होगा
घनाअंधेरा हो,विश्वास से उसे डरना होगा

विश्वास की तेजस से हर जंग जीतेंगे अब
ज़माने की ताने-बाने में नही उलझेंगे अब

हर दिन एक नया प्रयास कर आगे बढ़ेंगे
जीवन के गम को दिल से अलविदा कहेंगे

समय को समय दो हर जख्म भर जायेंगे
समय के साथ समय नये सपने सजायेंगे

*****

मेरा स्कूल

रचनाकार- कौशल प्रसाद डाहिरे, बिलासपुर

मम्मी मेरा बस्ता दे दे
पढ़ने स्कूल जाऊंगा
खूब पढ़ूंगा खूब लिखूंगा
पढ़ लिखकर घर आऊंगा

दीनू,मीनू,सीता,गीता
सीखकर आते रोज कविता
गाते सुंदर सुंदर गाना
खुश हो जाते नानी नाना
घर में आकर मैं भी गाकर
तुमको रोज सुनाऊंगा

सर मैडम रोज स्कूल आते
अक्षर,गिनती, पाठ पढ़ाते
हाथ पकड़कर हमें सिखाते
अच्छी अच्छी बात बताते
खेल खिलाते, खूब हंसाते
तुमको रोज हसाऊंगा

मम्मी मेरा बस्ता दे दे
पढ़ने स्कूल जाऊंगा
ख़ूब पढ़ूंगा ख़ूब लिखूंगा
पढ़ लिखकर घर आऊंगा.

*****

ताला

रचनाकार- श्री कौशल प्रसाद डाहिरे, बिलासपुर

ताला हूं मैं भाई ताला हूं
घर का सच्चा हूं रखवाला
कहीं चमकता चांदी जैसा
कहीं पर दिखता काला हूं
सोने जैसा रंग है चढा मैं
कितना किस्मत वाला हूं
ताला हूं मैं भाई ताला हूं.....

मंदिर ,मस्जिद,महल,अटारी
मुझ पर सबका भरोसा भारी
कलकारखाना,बैंक,दुकान
छोटा हो या बड़ा मकान
हर जगह पर मिलने वाला हूं
ताला हूं मैं भाई ताला हूं.....

दरवाजे पर लटकते रहता
चोरों को मैं खटकते रहता
मुझे लगा सब चैन से सोते

गांव,शहर सब घूमकर आते
स्टील, पीतल,लोहा वाला हूं
ताला हूं मैं भाई ताला हूं....

ले आओ मुझे देकर दाम
फिर देखो जी मेरा काम
भले बिना मैं आंखों का
बचत करूं मैं लाखों का
दो,तीन,चार चाबी वाला हूं
ताला हूं मैं भाई ताला हूं
घर का सच्चा रखवाला हूं.

*****

भालूजी

रचनाकार- अशोक ' आनन '

काले - काले भालू जी.
सर्कसवाले भालू जी.

नाचें एक इशारे पर ये -
बैठे - ठाले भालू जी.

शहद तोड़कर छत्तों से -
झट से खा लें भालू जी.

गर्मी में भी बालोंवाली -
ओढ़ें शालें भालू जी.

टी. वी काल में मदारी -
कैसे पाले भालू जी.

चिड़ियाघर में सुस्त पड़े -
जंगल वाले भालू जी.

*****

टी . वी .

रचनाकार- अशोक ' आनन '

घर की शान बढ़ाता टी. वी.
अपना हमें बनाता टी. वी.

पलक झपकते दुनिया की ये -
हमको सैर कराता टी. वी.

पल में दुनिया भर की ख़बरें -
रोज़ हमें सुनाता टी. वी.

इसे देखते सभी चाव से -
सबका दिल बहलाता टी. वी.

इसे देखकर कहते हम सब -
तुम बिन रहा न जाता टी. वी.

जोकर जैसा कभी हंसाता -
बच्चों. कभी रुलाता टी. वी.

*****

खटमलजी

रचनाकार- अशोक ' आनन '

हम ज़रा लेटते खटमलजी.
तुम हमें काटते खटमलजी.

तन में डंक चुभाकर तीखा -
तुम लहू चूसते खटमलजी.

कुर्सी, टेबल, बेंच ,पलंग तुम -
खटिया में रहते खटमलजी.

सुबह-शाम तुम रात- दुपहरी -
बेफ़िक्र घूमते खटमलजी.

जब पकड़ में आ तुम जाते -
हम नहीं छोड़ते खटमलजी.

तुम तो पीकर लहू हमारा -
मदहोश घूमते खटमलजी.

*****

रेल चली

रचनाकार- अशोक ' आनन '

छुक - छुक करती रेल चली.
करती कितने खेल चलीं.

जोसफ, कादर, मुन्ना आओ.
मेरी, सलमा, शीला आओ.

पहिए सूरज जैसे गोल.
इंजिन इसकी खोले पोल.

इंजिन के संग डिब्बे चलते.
हर दिन सैर सपाटा करते.

विसिल बजाती जाए दइया.
झंडी गार्ॅड दिखाए भइया.

पटरी पर यह चलती जाए.
व्यर्थ ज़रा न समय गंवाए.

जीवन चलने का है नाम.
समझो , रीना, मीना, श्याम.

*****

तीन दोस्त

रचनाकार- माही नाग कक्षा चौथी शा. प्राथमिक शाला पारा जिला बिजापुर

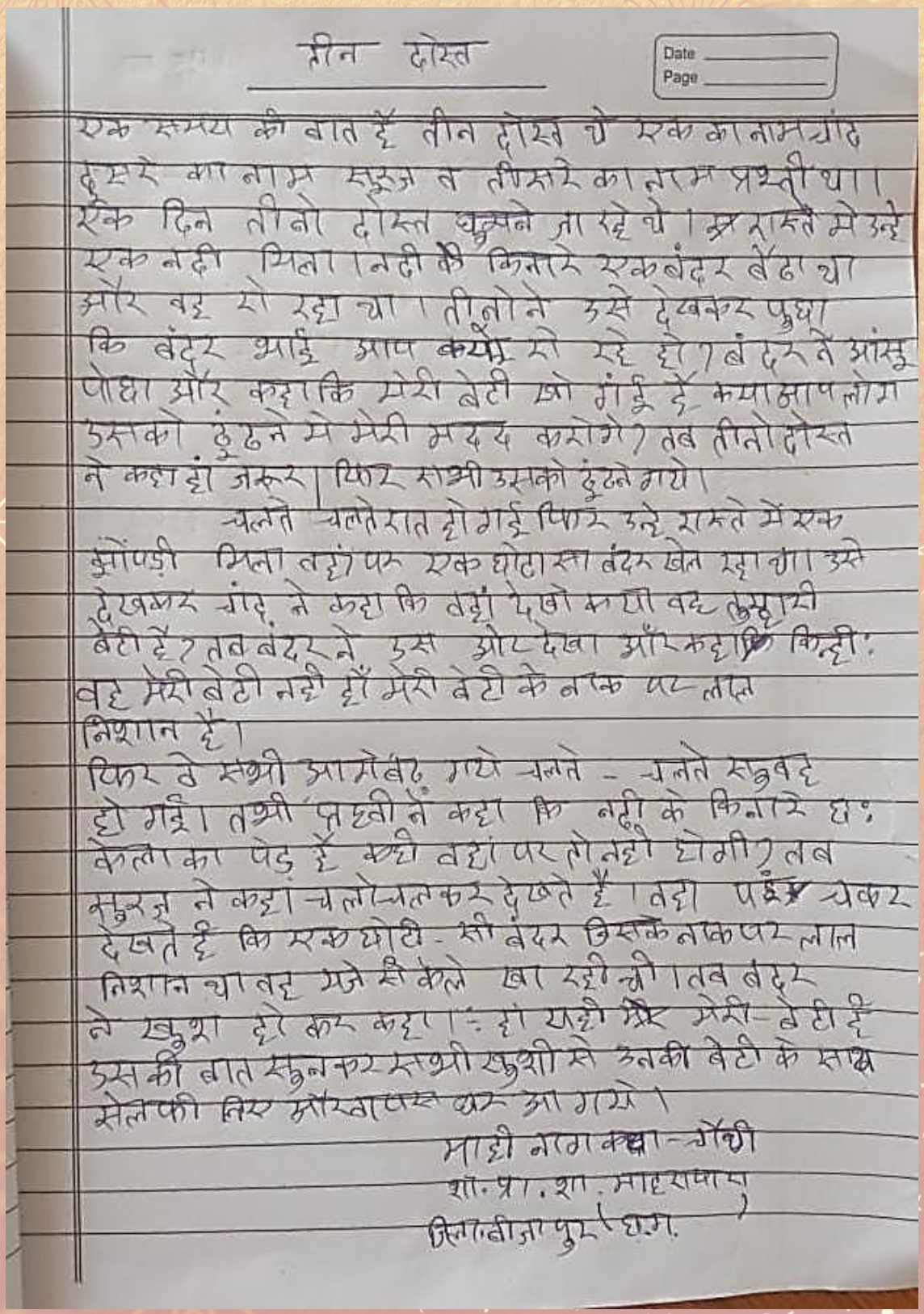

तीन दोस्त

Date ______
Page ______

एक समय की बात है तीन दोस्त थे एक का नाम चांद दूसरे का नाम सूरज व तीसरे का नाम प्रथ्वी था। एक दिन तीनो दोस्त घूमने जा रहे थे। रास्ते मे उन्हे एक नदी मिला। नदी के किनारे एक बंदर बैठा था और वह रो रहा था। तीनोने उसे देखकर पूछा कि बंदर भाई आप क्यों रो रहे हो? बंदर ने आंसु पोछा और कहा कि मेरी बेटी खो गई है क्या आप लोग उसको ढुंढने मे मेरी मदद करोगे? तब तीनो दोस्त ने कहा हां जरूर। फिर सभी उसको ढुंढने गये।

चलते चलते रात हो गई फिर उन्हे रास्ते में एक झोपडी मिला वहां पर एक छोटा सा बंदर खेल रहा था। उसे देखकर चांद ने कहा कि वहां देखो क्या वह तुम्हारी बेटी है? तब बंदर ने उस ओर देखा और कहा कि नहीं वह मेरी बेटी नही हैं मेरी बेटी के नाक पर लाल निशान है।

फिर वे सभी आगे बढ़ गये चलते - चलते सुबह हो गई। तभी प्रथ्वी ने कहा कि नदी के किनारे छः केलो का पेड है कही वहां पर तो नही होगी? तब सूरज ने कहा चलो चलकर देखते हैं। वहां पहुंचकर देखते है कि एक छोटी - सी बंदर जिसके नाक पर लाल निशान था वह मजे से केले खा रही थी। तब बंदर ने खुश हो कर कहा। हां यही मेरी बेटी है उसकी बात सुनकर सभी खुशी से उनकी बेटी के साथ खेलकर फिर मौज मस्ती कर आ गये।

माही नाग कक्षा - चौथी
शा. प्रा. शा. माहरापारा
जिला बीजापुर (छ.ग.)

तितली

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

तितली उड़ी, तितली उड़ी
रेल में चढ़ी
पहली बार देखा रेल
होती है बड़ी.

जाना था उसे
आगरा के पास.
टिकट नहीं था
थी बहुत उदास.

टी टी जब आया
बोला टिकट दिखाओ.
टिकट नहीं है बोली
जाओ आगे जाओ.

अब तो पड़ेगा तुमको
भरना जुर्माना.
तितली बोली
नहीं दूंगी जुर्माना.

फुर्र से तितली
रेल से उड़ी.
कैसा जुर्माना
मैं तो चली.

*****

विद्या मंदिर

रचनाकार- मनोज चंद्राकर, गरियाबंद

जस देखन में काजू लागे, ताकत में अंजीर
अस ज्ञान की गंगा है,अपना विद्या मंदिर
सुघ्घर सुघ्घर बच्चे मेरे,सुघ्घर सुघ्घर बोल
अमावस की निशा धरा पर, लगते हैं अंजोर
दुर्गेश,मोहन,सोहन,जोहन, सीता,गीता,माला,बाला
जस बगिया की पुष्प परागण, ज्ञान कुंड की अद्भुत शाला
जस चमचम की रसिया, सदाचार का खीर
अस ज्ञान की गंगा है, अपना विद्या मंदिर
मुझे याद है प्रधान पाठिका, देतीहैं उपदेश अनमोल
गणित शिक्षक की बात निराली, त्रिज्या,वृत्त और गोल
वर्मा,शर्मा, सर्व गुरुजन, ज्ञान भूमि का वीर
अस ज्ञान की गंगा है, अपना विद्या मंदिर
जहां भी जाओ प्यारे बच्चों,मत करना अभिमान
विद्या मंदिर की ज्ञान सबक को, अमृत तुल्य जान.

*****

चिंता और गुस्सा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु ", धमतरी

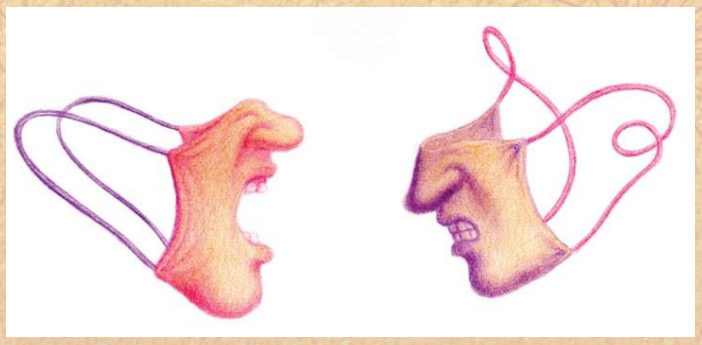

काव्य और मानव जीवन में रस का बड़ा महत्व होता है. इसी रस से हमारा जीवन संचालित होता है. जीवन कई उतार-चढ़ाव से होता हुआ आगे बढ़ता है. मानव के मन मे पूरे चौबीस घण्टे कोई न कोई रस प्रवाहित होता रहता है. यह रस स्थायी भी हो सकता है और अस्थायी भी.

स्थायी रस दस हैं जिनमें

रति, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, जुगुप्सा विस्मय,निर्वेद और वात्सल्य रस होता है.

इसी प्रकार अस्थायी रस या भाव जिसे संचारी भाव कहा जाता है, को भरत मुनि ने तैंतीस माना है जैसे-

निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, देन्य, चिंता, मोह, स्मृति, घृति, ब्रीडा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अमर्ष, अविहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, वितर्क.

स्थायी भाव सर्वत्र विद्यमान रहता है.जबकि अस्थायी भाव जिसे संचारी भाव कहा जाता है, का अचानक संचार होता है फिर चला जाता है. यह कहा जा सकता है कि स्थायी भाव को पुष्ट करने के लिए जिस रस का संचार हो वही अस्थायी भाव है. उसे ही संचारी भाव कहते हैं.

इसी पर आधारित होता है "चिंता और गुस्सा".

चिंता शब्द चित्त से बना है, चित्त अर्थात मन.

जब चित्त किसी विषय के बारे में लगातार चिंतन करे, मनन करे, उसके बारे में सोचना शुरू कर दे,और ध्यान उसी पर बार-बार जाए, तो यह चिंता है. बात यहीं खत्म हो जाती तो कोई बात

नही थी पर! धीरे-धीरे यह चिंता, चिता का रूप लेना शुरू कर देती है जो शरीर के लिए खतरनाक साबित हो सकती है.

यह माना जाता है कि चिंता जीवित शरीर को जला देता है जबकि चिता मृत शरीर को जलाती है.

तो हमें यह तय करना है कि हम किस शरीर को जलाएँ.

इसी प्रकार एक होता है रौद्र रस जिसका स्थाई भाव होता है गुस्सा. इस गुस्से के कारण भी हमारा जीवन अत्यधिक प्रभावित और परेशान रहता है. गुस्से ने न जाने कितने लोगों का जीवन बर्बाद किया है. इसने कितनों का घर उजाड़ा, कितनों का संबंध विच्छेद किया ,कितनों को बलि चढ़ने के लिए मजबूर कर दिया.पूरा जीवन घर-परिवार को बरबाद कर दिया.

इस पर मानव को सोचने और चिंतन करने की आवश्यकता है. मानव के मन में नाना प्रकार के स्थायी और अस्थाई भाव निहित होते हैं. जो इन्हे प्रभावित करते हैं. उपरोक्त भावों मनोभावों को ध्यान में रखते हुए हमें तय करना है कि किसे चुनना है किसे त्यागना है. हमें यह सोचना होगा की इन भावों का हम कब, और कैसे, कहाँ, किस रूप में उपयोग करें,यह हमारी बुद्धि और समझदारी पर निर्भर करता है.

*****

बोझ नही हैं,आशीर्वाद हैं- वृद्ध

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु" धमतरी

हमारे जीवन में बड़े बुजुर्गों का बहुत बड़ा योगदान है. उनके योगदान से,उनके आशीषों से ही हम उस मुकाम पर खड़े होते हैं,जहाँ हम अपने आप को खुशहाल, सुखी और सुकून भरे जीवन में पाते हैं. यदि ये वृद्ध,बड़े बुजुर्ग,हमारे जीवन में नहीं होते तो शायद हमें यह खुशहाल समृद्ध और सुकून भरा जीवन नहीं मिल पाता.

आइए हम अपने बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें, उनका ख्याल रखें, उनकी देखभाल करें, उनका पालन पोषण करें,उनकी हर इच्छाओं, अपेक्षाओं को पूरा करें. उनके सुख-दुख, उनके आरोग्य का ध्यान रखें.उनके उपकारों, उनके आशीषों, उनके त्याग बलिदान का ध्यान रखें. जिनके कारण हमें यह खुशहाल भरी जिंदगी प्राप्त हुई है. इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए 01अक्तुबर को दुनिया के सारे वृद्धजनों को समर्पित करते हुए उनके सम्मान के लिए उनकी खुशी सुख शांति के लिए अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाने का निर्णय लिया गया.

अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाने का निर्णय 1990 में हुआ. वृद्ध दिवस मनाने का उद्देश्य दुनिया में इनके ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचार, दुर्व्यवहार,पर प्रतिबंध लगाने के लिए 14 दिसम्बर सन 1990 में निर्णय लिया गया और यह तय किया गया की प्रतिवर्ष 01 अक्टूबर को

अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाया जाएगा जो पूरे विश्व के बुजुर्गों को समर्पित होगा.

इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ द्वार 1991 में अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष के रूप में मनाया गया.

इस प्रकार से इस दिवस पर वृद्धों को पूरा दिन समर्पित किया गया. उनकी सुख शान्ति और सम्मान के लिए नाना प्रकार के सम्मान जनक कार्यक्रम के आयोजन होने लगे. इस दिन यह संकल्प लिया जाता है कि उनकी सुख शांति के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेंगे, उनको प्रेम, विश्वास सहानुभूति प्रदान करते रहेंगे ताकि वे खुशहाल जिंदगी जी सकें.

*****

कहाँ नन्दा गे घिरनी,खड़खड़िया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु ", धमतरी

कहाँ लुका गे ओ चिरई के चाँव-चाँव
कहाँ नन्दागे टेड़ा-रहट ओ गली गाँव.
दिखय नहीं अब कउनो हर जम्मो नँदागे
अब कइसे-कइसे मन ल मैं ह दुलराँव

कहाँ लुकागे मोर गाँव के कुँआ बावली
कोनो कोती दिखय नहीं डहर पैडगरी.
कहाँ नँदागे हे मोर गाँव के पनिहारिन
दिखय नहीं ओ पनघट के घिरनी,गघरी.

ओ पनघट के रद्दा,सुख-दुख के बोली
कहाँ नँदागे सँगी-सहेली के ठिठोली.
कहाँ नँदागे घिरनी अउ खड़खड़िया
दिखय नहीं ओ सुग्घर बैन मीठ-बोली.

ओ,खड़खड़ात घिरनी के डोरी-बाल्टी
कहाँ नँदागे हे कुँआ के ओगरा पानी.
ओ पार पनघट कुँआ ह सुनसान होगे
दिखय नही छलकत गघरी के बिहानी.

*****

उपकारी वृक्ष

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु ", धमतरी

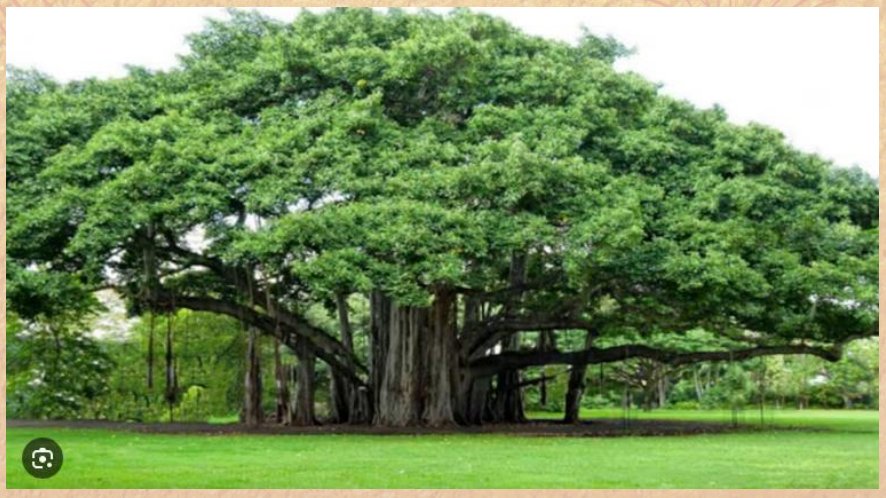

यह वृक्ष तरू वन उपवन और यह हरियाली
धरती का है श्रृंगार और इसी से खुशहाली.
वृक्ष हमारे शुभचिंतक हैं वृक्ष हमारे हितैषी
यही हमारे प्राण अधारे,इससे निर्दयता कैसी?

वृक्ष हमे देता है सब कुछ,देता शीतल छाया
फल-फूल बूटियां देकर उपकारी कहलाया.
वृक्षों हमे हवा है देता, जीवन सुखद बनाया
दूर पथिक निकट में आकर विश्रांति है पाया.

लगती है बड़ी प्यारी तेरी शीतल घनेरी छाया
धन्य-धरा सब जीव जगत सभी को है भाया
तुझसे ही यह धरा श्रृंगारित तूने धरा सजाया
धन्य-धन्य तुम्हे है तरूवर उपकारी कहलाया.

*****

पढ़ाई में रुचि कैसे जागृत करें ?

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु ", धमतरी

पढ़ाई-लिखाई का मानव जीवन में अत्यंत महत्व है.

इसके बिना मानव का जीवन अधूरा अपूर्ण और अन्धकारमय है.पढ़ाई अर्थात शिक्षा से है.और शिक्षा का अधिकारी कौन है? शिक्षा का अधिकारी वह हर एक बच्चा है जिसकी उम्र शून्य से 8 की हो गई हो.चाहे वह किसी वर्ग धर्म समुदाय जाति का हो. शिक्षा के अधिकार 2009 के तहत हर बच्चे को कक्षा 8 वी तक अनिवार्य और निः शुल्क शिक्षा दिया जाना है.

यह तो शासन का सराहनीय कदम है.इसके अलावा बच्चों को कौशल विकास पर जोर दिया जा रहा.बिना कौशल के शिक्षा अधूरा है.

इसके अंतर्गत बोलना,पढ़ाना,सीखना,और समझना है.यह चारो प्रकार के कौशल एक बच्चे के लिए निहायत ही अवश्यक है.इसके बिना हम बच्चे के कौशल उसकी योग्यता का आँकलन नहीं कर सकते.

पर यहाँ प्रश्न यह उठता है की उसके अंदर योग्यता कैसे आए?वह कौशल कैसे आए?

उसकी समझ शक्ति कैसे बढ़े?समझ कौशल के साथ-साथ उसकी समरण शक्ति,मनन-शक्ति चिंतन-शक्ति तुलनात्मक शक्ति आदि कैसे बढ़े?

इसके लिए घर-परिवार से लेकर शाला तक एक उचित और स्वस्थ माहौल तैयार करना होगा.इस माहौल को तैयार करने में घर में माता-पिता और शाला में शिक्षक की भूमिका अहम हो सकती है.माता-पिता और शिक्षक अपनी अहम भूमिका निभाते हुए निम्न बिंदुओं पर जोर दे सकता है.

उचित माहौल-

बच्चों को उचित और स्वस्थ शिक्षा प्रदान करने के लिए घर-परिवार और शाला में उचित माहौल तैयार करने की आवश्यकता है.इसके बिना हम लाख कोशिश करें सभी प्रयास निरर्थक होंगे.

उचित माहौल के लिए हमें शिक्षा से संबंधित चिंतन-मनन, चर्चा-परिचर्चा,नवाचार आदि और अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ करायी जानी चाहिए ताकि बच्चे उसमें हमेशा सक्रिय रहे.

शान्ति प्रिय वातावरण-

पढ़ाई मे रुचि बढ़ाने के लिए यह आवश्यक होता है की घर-परिवार,शाला का वातावरण शांतिपूर्ण हो.माहौल अशांत रहने से बच्चे की मानसिकता पर बुरा असर पड़ सकता है.उसका ध्यान भंग हो सकता है.

पर्याप्त नींद सेहत और खान पान-

बच्चों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है की बच्चों को पर्याप्त नींद लिया जाना चाहिए.पलकों को उनकी सेहत का समय-समय पर ध्यान दिया जाना चाहिए.उनके खान-पान का विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए.

आत्मविश्वास बधाएं-

बच्चों का मनोबल बढ़ाए रखने के लिए उनसे शालीनता पूर्वक बर्ताव करें,उनसे शान्ति पूर्वक और मित्रवत व्यवहार करें.उनकी प्रशंसा करें,उनको पुरस्कृत करें.उनकी कमियों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने का प्रयास करें.

इस प्रकार से उनका आत्मविश्वास जगाने का प्रयास करें.

बच्चे की रुचि-

बच्चों की पढ़ाई में रुचि जगाने के लिए यह आवश्यक है की सबसे पहले हम उनकी मानसिकता को समझे की वह किस विषय किस दिशा में ज्यादा रुचि रखता है और जाना चाहता है उसके अनुरूप बच्चों को हम शिक्षा दीक्षा प्रदान करें.

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर बच्चों को सही और उचित प्लेटफार्म प्रदान कर सकते है.सुंदर माहौल तैयार कर सकते है.और बच्चा पढ़ाई करने के लिए हमेशा उत्सुक और ललायित होगा.

*****

मैं हूं पेड़

रचनाकार- ओमकार डीढहत्रे, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला भोजपुरी

मुझे मत काटो.
टुकड़ों टुकड़ों में
मुझे मत बांटो.
दर्द मुझे भी होता है.
मेरा मन भी रोता है.
मैं हूं मित्र तुम्हारा.
सखा हूं सबसे न्यारा.
मेरे फल
मैं खुद नहीं खाता हूं.
सब तुम्हें दे देता हूं.
जहरीली गैसे
मैं खुद ही पी जाता हूं.
शुद्ध हवा
तुम तक पहुंचता हूं.
मैं पेड़ हूं
मुझे मत काटो.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

चंदा मामा कभी तो आओ
मामी को भी साथ में लाओ
भूख तुम्हें जो लगे कभी फिर
संग हमारे खाना खाओ

बातों से न यूं बहलाओ
मधुर सा कोई गीत सुनाओ
गर्मी की छुट्टी में तुम भी
साथ हमारे मौज उड़ाओ

चारो तरफ़ प्रकाश फैलाओ
भटकों को तुम राह दिखाओ
आसमान का कोना कोना
अपनी आभा से तुम चमकाओ.

आधे आओ चाहे पूरे आओ
हर रूप से बस तुम हमें लुभाओ

छोड़ के तुम नखरे ये सारे
लाज का पर्दा जल्द उठाओ.

लुक छिप कर न उन्हें सताओ
माँ भूखी है जल्दी आओ
दिखला के सुंदर मुखड़ा अपना
उनकी पूजा सफ़ल बनाओ.

*****

विलुप्त होती गिद्ध प्रजाति के संरक्षण से रुकेगा संक्रमण का फैलाव

रचनाकार- डॉ. बी. आर. नलवाया, शोध निर्देशक, प्रो. योगेश कुमार पटेल, शोधार्थी

भारत में विश्व की सभी प्रकार की जलवायु के पौधे, वृक्ष, वनस्पतिया एवं प्राणी जगत की प्रजातियां थल, जल एवं पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है. प्राणी समूह की लगभग 81000 प्रजातियां होती है जो कि विश्व स्तर का 6.4 प्रतिशत है. हम भले ही अंतरिक्ष तक पहुंच गए हैं, परंतु हम प्रकृति के वरदान के साथ अन्याय भी कर रहे हैं. 10000 साल पहले प्रकृति पर 600 करोड़ हेक्टेयर पर यानी करीब 57 प्रतिशत हिस्से में जंगल ही था लेकिन अब यह केवल 400 करोड़ हेक्टेयर ही बचा है. जैव आकलन करने वाली संस्था आईयूसीएन की रेड डाटा बुक में शामिल 142500 प्रजातियों में से 40000 प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है. यह ज्ञात प्रजातियों का 28 प्रतिशत है. इसी तरह 454 करोड़ साल पहले निर्मित हुई पृथ्वी पर 70 प्रतिशत से अधिक पानी था लेकिन अब पानी का भार केवल 1 प्रतिशत ही रह गया है.

यह लेख एक ऐसी ही विलुप्त होती जा रही गिद्ध प्रजाति पर है. वर्ष 2003 के बाद भारत समेत दुनिया भर से गिद्ध विलुप्त होते जा रहे हैं. वर्ष 1990 के दशक से भारतीय गिद्धों का लगभग विलुप्त होना मनुष्य के लिए घातक साबित हो रहा है, क्योंकि गिद्ध प्राकृतिक तौर पर सफाई में मदद करते हैं. उनके आहार में मुख्य तौर पर मरे हुए जानवर शामिल होते हैं. गिद्धों की कमी का कारण यह रहा है कि किसानों ने अपने मवेशियों का इलाज करने के लिए डाइक्लोफेनाक नामक दवा का उपयोग शुरू कर दिया था. इस दवा से मवेशी और मनुष्यों दोनों के लिए कोई

खतरा नहीं था. लेकिन जो पक्षी डाइक्लोफेनाक से उपचारित मरे हुए जानवरों को खाते थे उन पक्षियों के गुर्दे खराब होने लगे व कुछ ही हफ्तों में उनकी मृत्यु होने लगी.

अब गिद्धों की संख्या में कमी होने के कारण इन सबको जंगली कुत्तों और चूहों ने खाना शुरू कर दिया लेकिन ये गिद्धों की तरह पशुओं के शव को पूरी तरह खत्म करने में सक्षम नहीं होते हैं. जबकि गिद्धों का समूह एक जानवर के शव को लगभग 40 मिनट में साफ कर सकता है क्योंकि गिद्ध हमेशा झुंड में रहता है. गिद्ध का समूह एक किलोमीटर की ऊंचाई से भी मरे हुए जानवर की गंध सूंघ लेता हैं और उसे देख लेता हैं. सबसे ऊंची उड़ान भी यही पक्षी भरता है. इनका रंग काला और कत्थई होता है, इनके पंख 5 से 7 फीट तक होते हैं एवं इनका वजन 6 से 7 किलोग्राम तक होता है.

अब गिद्धों की संख्या कम हो रही है क्योंकि बढ़ते प्रदूषण और घटते जंगलों के चलते भी उनके प्राकृतिक आवास नष्ट हुए हैं. गिद्ध का मुख्य भोजन मृत पशु होता है लेकिन इन मृत जानवरों को खाने से गिद्ध के शरीर में यूरिक अम्ल बनता है जो इनकी किडनी और लीवर को नुकसान पहुंचता है. यही इन गिद्धों की मौत का कारण बन रहा है एक दूषित पशु से कई गिद्धों की एक साथ मौत हो रही है. मध्य प्रदेश में अब केवल 6700 गिद्ध ही बचे हैं व देश में भी अपेक्षाकृत इनकी संख्या कम हुई है.

दुनिया भर में 23 प्रजाति के गिद्ध (वल्चर) पाए जाते हैं जिसमें से भारत में केवल 9 प्रजातियां है व मध्यप्रदेश में 7 प्रजातियों के गिद्ध देखे गए हैं. राजस्थान के झालावाड़ जिले में गिद्धों की लॉन्ग बिल्ड वल्चर प्रजाति पाई जाती है अब लॉन्ग बिल्ड गिद्ध राजस्थान के अलावा महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में ही बचे हैं. मंदसौर जिले का गांधीसागर अभ्यारण वन्यजीवो के लिए स्वर्ग साबित हो रहा है. 6 फरवरी 2021 में गांधीसागर अभ्यारण में 684 गिद्ध मिले. वैसे तो सन 2010 के पूर्व गिद्धों की संख्या में गिरावट आई थी लेकिन पिछले वर्षों की तुलना में अभी कुछ वृद्धि हुई है.

गिद्धों की तस्करी का पहला मामला खंडवा से पकड़ा गया जो कि पिछले 10 वर्षों से चल रहा था. तस्करी में सात सफेद गिद्ध खंडवा से पकड़े गए. एक और तो देश में गिद्ध विलुप्त हो रहे है वही दूसरी तरफ खाड़ी देशों में इनकी जमकर तस्करी की जा रही है. इन देशों में रसुखदार लोग, तंत्रक्रिया वाले और घरों में पालने के लिए लोग गिद्धों की मुँहमांगी कीमत देते रहे है. इसके चलते भारत से गिद्धों को समुद्र के रास्ते दुबई और अन्य खाड़ी देशों में तस्करी चल रही थी. उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य राज्यों से भी गिद्धों की तस्करी होती रही है.

यदि देखा जाए तो अभी के युवाओं को गिद्ध को देखने का अवसर नहीं मिला है. विगत 30 वर्षों पूर्व आसमान में मंडराते गिद्धों को आज के 45 से 50 से अधिक वर्ष के बुजुर्गों ने काफी संख्याओं में देखा है. अब गिद्धों की रक्षा में हर व्यक्ति व संस्थाओं को सहयोग हेतु आगे आना

होगा. गिद्धों के संरक्षण से पर्यावरण स्वच्छता के फायदे ही होते हैं. पर्यावरण हितैषी गिद्ध धरती पर जहां संक्रमण को रोकते हैं वही स्वच्छता में हमारे सहयोगी भी रहते हैं. गिद्धों से पर्यावरण संरक्षण तभी बना रहेगा जब हम गिद्ध प्रजाति को विलुप्त के कगार पर नही पहुंचने देंगे.

गिद्धों के संरक्षण की दिशा में 25 जून 2023 को हरियाणा के पिंजौर से 1100 किलोमीटर का सफर तय कर वहां से 20 गिद्ध भोपाल लाए गए. पिंजौर में गिद्धों के संरक्षण की बेहतरीन कयावत से प्रजनन द्वारा पिछले 22 साल में 365 गिद्धों का जन्म हो चुका है. पिंजौर की देश में अहमियत इसलिए भी बढ़ गई है की विलुप्त होती हुई तीन प्रजाति के गिद्धों का प्रजनन यहाँ के केंद्र में हो रहा है. पिंजौर से ही मध्यप्रदेश, पश्चिमबंगाल, असम समेत कई राज्यों में गिद्धों को संरक्षण और और प्रजनन के लिए भेजा गया है. गिद्धों की संख्या में वृद्धि के लिए देशभर में भोपाल सहित करीब 5 प्रजनन केंद्र भी बनाए गए हैं. फिर भी इनके संरक्षण के लिए जनजागृति बहुत आवश्यक है, तभी मनुष्य सुरक्षित पर्यावरण में जीवन बसर कर सकेगा.

*****

सुना नोनी कर गोएठ

रचनाकार- श्रीमती आशा पान्डेय, सरगुजा

ये मोर दाई ओ, ये मोर दाउ हो.
सुनला अपन नोनी कर एगो गोएठ हो.

नी चराव छेरी अउ नी चराव गरू हो.
नी खेलाव नोनी अउ नी खेलाव बाबू हो.
रोज इसकुल जाहूं में संगी मन कर संग में.
पढ़ें बर लिखे बर अउ जिनगी ला गढ़े बर.

ये मोर दाई ओ, ये मोर दाउ हो.
सुनला अपन नोनी कर एगो गोएठ हो.

पढ़ लिख जाहूं त बनहूं में अफसर जी.
अनपढ़ रहहू त जाही करम फाट जी.
पढ़ लिख जाहू त बोझ नी बनो जी.
मोरो फेर होही अब्बड ठाट- बाट जी.

ये मोर दाई ओ, ये मोर दाउ हो.
सुनला अपन नोनी कर गोएठ हो.

पढ़ें लिखे रहहू त गांव करहूं शिक्षित.
भाई बहिनी मन ला करहूं प्रशिक्षित.
गांव कर विकास होही,गांव बनही खुशहाल जी.
जम्मो कर्जा मेट के करहूं ज़िन्दगी निहाल जी.

ये मोर दाई ओ,ये मोर दाउ हो.
सुनला अपन नोनी कर एगो गोएठ हो.

*****

उठा बिहनिया

रचनाकार- श्रीमती आशा पान्डेय, सरगुजा

रोएज बिहनिया उठे करा,
कसरत,योगा करें करा.
हवा मिलथे फरी फरी,
गोएठ बात खरी खरी.

सुरूज देखा हिकेल आइस,
सुरूज में हे लाली छाइस.
बिहनिया उठे ले होंथे निरोग,
कभो नी होथे भाई रोग.

मुँख म चमक बने रहिथें,
देह ला ताजगी मिलथे.
फेर दिन हर लागेल सुग्घर,
मन हो जाथे हरियर हमर.

*****

पहेलियाँ

रचनाकार- साक्षी यादव, कक्षा- 8वीं, स्कूल- स्वामी आत्मनाद शेख गफ्फार अंगरेजी मध्यम शाला तारबाहर

1- मेरा आकार गोलाकार है,
मैं ब्रह्मांड में हूं,
हर कोई मुझमें रहता है,
बताओ मैं कौन हूँ?

2- मैं धातुओं से बना हूँ,
मैं लगभग बिल्कुल इंसानों जैसा ही हूं,
लेकिन मैं इंसानों से ज्यादा होशियार हूं
बताओ मैं कौन हूँ?

3- मैं सबसे कीमती पत्थर हूँ,
मैं दुनिया का सबसे कठोर पदार्थ हूँ,
मैं बहुत महँगा हूँ,
मैं हर गेहने को सुंदर बनाया,
बताओ मैं कौन हूँ?

4- मैं तुम्हारे लिए बहुत कीमती हूँ,
मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं हो,

मेरे द्वारा सभी जीवित हैं,
मैं पृथ्वी पर फैला हुआ हूं,
बताओ मैं कौन हूँ?

5- मैं तुम्हें रोज पढ़ाता हूं,
मैंने तुम्हें ज्ञान दिया है,
मैं हर पाठशाला में हूँ,
बताओ मैं कौन हूँ?

6- मैं दुनिया का सबसे बड़ा देश हूं,
मैं भारत का अच्छा दोस्त हूं,
बताओ मैं कौन हूँ?

7- मैं दुनिया भर में बहुत लोकप्रिय हूं,
हर बच्चा और यहाँ तक कि बडे व्यक्ति भी मुझे देखते हैं,
हर कोई मुझे टीवी पर देखता है,
बताओ मैं कौन हूँ?

उत्तर- 1- पृथ्वी
2- रोबोट
3- हीरा
4- वायु
5- शिक्षक
6- रूस
7- कार्टून

*****

विरह

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम

विह्वल व्यथित दृष्टि ये मेरी,
देखे पथ को निहार,
बार बार ध्वनि सुन वाहन की,
जब दिखती परछाई,
हृदय कहे करके स्पंदन तब ,
तुम ठहरो!मैं आई,
निर्जन पथ ये देख नयन भी,
आकुल फिर एक बार.

छिपा भावनाओं को कितनी,
मौन सदा ही रहती,
बिना नीर के मीन बनी मैं,
आतप हर क्षण सहती,
अंग–अंग में प्रलय समेटे,
विछिन्न सकल श्रृंगार.

मिलने को व्याकुल सदैव ही ,
देखूं प्रतिपल सपना,
बिना तुम्हारे है क्या कोई,
यहां जगत में अपना,
समक्ष मेरे आ जाओ तो,
आंसू दें पथ पखार.

अब तुमको आना ही होगा,
विरह वेदना न सहूं,
मिली देह ये क्षणभंगुर है,
अगले पल मैं न रहूं,
मन भर देखूँ तुम्हें प्रिये फिर,
कर दूँ सर्वस्व वार.

*****

जाड़ म

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा

चल स्वेटर, कम्बल राखबोन साथ.
ऊन के पिछौरी ल हेरबोन येदारी,
कनचप्पी अऊ टोपी ल धरबो माथ.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.1.

दाॅत बाजय किटकिट - किटकिट.
जुड़ चाबय चिटचिट - चिटचिट.
सुहावय गोरसी म आगी के गोठ - बात.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.2.

फूलय कंवल, फूल ह पटावत हवय.
तरिया म पानी चिटिक अंटावत हवय.
कोकड़ा बोंकला के नजर, मछरी- घात.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.3.

जुड़ - सरदी के मारे नाक ह होगे लाल.
झटपट ओढ़व जी अपन कथरी शाॅल.
पेज - पसिया सोहाय खायेबर तातेतात.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.4.

निरमल अगास, तारा ह दिअना सजावय.
सुरुज ह बिहनिया जुड़ावत लजावय .
जाड़ म मीठ लागय तात गोरस भात.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.5.

बरफ सहि ठरत हवय धुॅका अऊ पानी .
जाड़ म मिलय साग - भाजी आनीबानी.
बिहनिया के रद्दा धुमेला, दिखय नहिं हठात्.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.6.

कोठार म धान गादा, खेत म करपा .
बांस के फईरका म ठेंगा के हरपा.
धान के पूंजी म किसान ह अपनेच के नाथ.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.7.

जाड़ म दउड़ई, कूदई आलस भगाय.
जेन ह महिनत नई करे तेन ह ठगाय.
झनि कर भरोस, अपन हाथ जगन्नाथ.
आईस जाड़, जुड़ाईस गोड़ हाथ.8.

*****

दिपावली

रचनाकार- सृष्टि थवाईत, कक्षा= 7वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबाहर बिलासपुर (छ.ग)

कार्तिक अमावस की काली रात को दियों से सजाएंगे
आँगन में रंगोली बनाकर लक्ष्मी को बुलाएंगे
घर घर मे खुशियाँ फैलाएँगे
पहन के नए कपड़े मिलकर दिप जलाएँगे
भूल के हर गम को अपने घर को सजाएंगे
मिलकर दिपावली का त्योहार मनाएंगे
घर घर मे खुशियाँ फैलाएँगे

*****

दददू भईया

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

एक था दददू
लेने गया था कद्दू
कद्दू मिला उसे ठेला में
लेकर आ रहा था अकेला
रास्ते में पड़ा मेला
दददू मेला देखें गया
भूल गया वह मेला में
खो गया उसका कद्दू
दददू रोने लगा
नंदू ने दददू को देखा
दददू को दिया लड्डू
दददू खुश हो गया
दददू ने खाया लड्डू
दददू ने मेला देखा
मेले में थे रंग रंग का ठेला
ठेला में मिल गया दददू का कद्दू
दददू अब ना रहा अकेला
रास्ते में मिला उसे एक केला
दददू केला खाने लगा
खुशी-खुशी कद्दू के साथ आने लगा

*****

अंतिम साँस तक लड़ना होगा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

जीवन पथ पर लड़ना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा.

राहे अपनी खुद गढ़ना होगा
लक्ष्य मार्ग पर बढ़ना होगा.

रगों में साहस भरना होगा
कर्म से किस्मत लिखना होगा.

मुश्किलों से खुद लड़ना होगा
लडते लड़ते बढ़ना होगा.

सफलता नहीं मिलती जब तक
अंतिम साँस तक लड़ना होगा.

*****

शरद ऋतु

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू(शिक्षक), धमतरी

बीत गई है बरसा ऋतु
शरद ऋतु अब आई है
सुबह शाम शीत बरसाने
ठंड ने पैठ जमाई है

कोहरा और धुंध बरसते
शरद् ऋतु के मौसम में
गरम वस्तुएं गरम कपड़े
खूब भाते इस मौसम में

रेनकोट और छतरी की
हो गई अब तो बिदाई
स्वेटर,कंबल,मफलर,टोपी
इन सबकी है बारी आई

*****

गूगल बनाम हृदय

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल, सूरजपुर

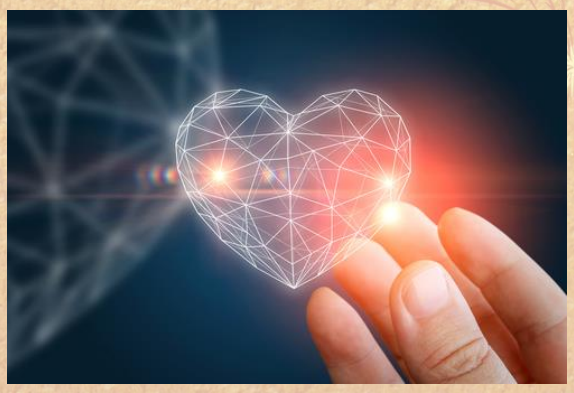

एक ज्ञान गूगल देता है
एक ज्ञान हमारे अंदर से आता है

गूगल का ज्ञान कोई भी दे सकता है
हृदय अनुभूत ज्ञान कोई बिरला ही देता है

गूगल का ज्ञान बासी होता है
हृदय से निकला ज्ञान ताजगी भरा होता है

गूगल का ज्ञान दूसरों के लिए ज्ञानदायिनी है
अंदर का ज्ञान खुद के लिए पवित्र गंगा होता है

विचारों का असली खान हमारे अंदर स्थित है
आइए हमलोग अंदर डूबना सीखें

हम सभी के अंदर एक कालीदास बैठा है
आइए उस कालीदास को हम जगाना सीखें

*****

विश्व गुरु

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल, सूरजपुर

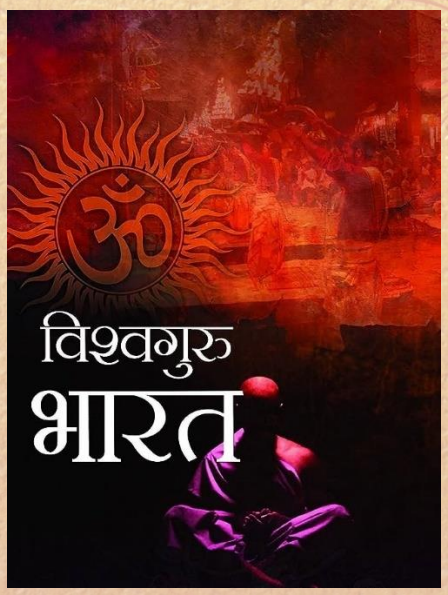

तुरु रु तुरु,हम हो गए शुरु.
बनाकर छोड़ेंगे,भारत विश्व गुरु.
गर्व है हमको जरुर.
वह दिन अब न दूर.

हो रहे हम मशहूर.
किसान और मजदूर.
रहेंगे ना मजबूर.
अन्य धन से भरपूर.

कुछ देश रहें घूर.
उनका तोड़ेंगे जो, ज्यादा मगरुर.
प्रेम भी है अपना, प्यारा दस्तूर.
तुरु रु तुरु, हम हो गए शुरु.

कोशिश है भरपूर.
कृष्ण जगतगुरू.
शक्ति देंगे जरूर.
कलम भी चले जरूर.

दुनिया गायेगी.
भारत विश्व गुरू.
भारत विश्व गुरू.
भारत विश्व गुरू

तुरू रू तुरू रू, हम हो गए शुरू

*****

मुनिया रानी

रचनाकार- रूपा अम्बस्ट, प्रा. शाला भगवानपुर अम्बिकापुर

मुनिया रानी बड़ी सयानी
मीठी बातें ठंडा पानी

जब वह बोले मीठे बोल
झूम बंदर नाचे मोर

उसकी आंखें गोल गोल
मानो चंदा सी अनमोल

जब वह चलती झूम झूम
धरती माता को चूम चूम

खुश हो जाती दादी नानी
मुनिया रानी बड़ी सयानी

*****

सलिल की माँ और पत्तलें

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र, उ.प्र.

पुत्रवधू ने अपने पति सुरेश पर जादू बिखेरा तो वह भी पूरी तरह अपने माता - पिता के प्रति बदल गया . वह माता - पिता के साथ बहुत रूखा व्यवहार करने लगा, उसकी पत्नी तो पूर्व से दुर्व्यवहार कर ही रही थी. सीधे - साधे सास - ससुर उसके व्यवहार से बहुत आहत हो जाते, लेकिन पुत्र और पोते - पोतियों का मोह उन्हें गलत कदम उठाने से रोक देता.

यहाँ तक कि पुत्रवधू ने अपने सास - ससुर को पत्तलों पर भोजन कराना शुरू कर दिया था, ताकि वे उपेक्षित महसूस करें.

सुरेश के तीन बच्चे थे, दो पुत्र और एक पुत्री. बड़ा पुत्र सलिल बहुत समझदार था. जो कक्षा 6 में पढ़ रहा था. उसके बहन - भाई अभी छोटे थे.

उसने यह सब मंजर देखा तो उसने अपने माता - पिता से कुछ नहीं कहा, लेकिन मन ही मन उसने कुछ अच्छा करने का शुभ संकल्प ले लिया . उसने अपने दादा और दादी को भोजन कराने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर सहज भाव से ले लिया. उसकी माँ पत्तलों पर खाना परोस जाती, वह पत्तलें हटाकर चुपचाप भोजन को थाली में परोस देता. उसके दादा और दादी अपने पोते की करुणा से प्रफुल्लित हो जाते. उसे खूब आशीषें देते.

सलिल चुपचाप उन पत्तलों को साफ कर एक जगह एकत्रित करता रहता. उसकी माँ को इस सबकी बिल्कुल भनक न लगती.

इस तरह करते - करते काफी दिन गुजर गए.

एक दिन उसकी माँ ने उससे पूछा, " बेटा सलिल क्या सफाई वाला रोज झूठी पत्तलें उठा ले जाता है ? पत्तलें कभी कूड़ेदान में दिखती नहीं हैं."

सलिल ने बड़ी विनम्रता से अपनी माँ को उत्तर दिया, " मम्मी मैंने वह सभी पत्तलें संभालकर रख ली हैं, जो तुम्हें और पापा को खिलाने के काम आया करेंगी. अब इस समय पत्तल का मूल्य केवल पचास पैसा है, बाद में ये बहुत महँगी हो जाएंगी."

इतना सुनना था कि उसकी तेज - तर्रार माँ पानी - पानी हो गई. उसका मुख सिल गया, मलिन हो गया.

उसने सारी बातें अपने पति सुरेश को बताईं, तो दोनों पश्चाताप की अग्नि में जल गए और फूट - फूट कर रोते और क्षमा याचना करते हुए अपने माँ - पिता के चरणों में गिर पड़े.

यह अद्भुत दृश्य देखकर सलिल अपनी ममतामय करुणा और शानदार अभिनय पर मन ही मन चित्त में अपार शान्ति का अनुभव कर रहा था.

*****

हरियर हे धानी दाई

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

हरियर हे धानी दाई हरियर तोर अंचरा ओ
लहराए सर-सर-सर सुग्घर तोर लुगरा ओ
सिंगारी जईसे लागे, सिंगारी जईसे लागे,
झूमें मुड़ म फुंदरा ओ....
हरियर हे धानी दाई हरियर..

कोरा म दिखथे दाई रंग-बिरंगी फुलवा ओ
सोला सिंगारी लागे अउ हरियर रुखुवा ओ
सिंगारी जईसे लागे, सिंगारी जईसे लागे,
झूमें मुड़ म फुंदरा ओ....
हरियर हे धानी दाई हरियर..

आगे कुवांरे महीना छटके सोनहा बाली ओ
रिगबिग-रिगबिग जइसे मंजूर के पांखी ओ
सिंगारी जईसे लागे, सिंगारी जईसे लागे,
झूमें मुड़ म फुंदरा ओ....
हरियर हे धानी दाई हरियर..

काशी ह फुलगे दाई राहेर,तिल ह फुलगे ओ
जगमग, चन्दैनी उज्जर हांसी तोर लागे ओ
सिंगारी जईसे लागे, सिंगारी जईसे लागे,
झूमें मुड़ म फुंदरा ओ....
हरियर हे धानी दाई हरियर..

पुरवाई आवत हावय झूमरत हे तोर अंगे ओ
लक्षमी ह परगट होगे जईसे धरती लागे ओ
सिंगारी जईसे लागे,सिंगारी जईसे लागे,
झूमें मुड़ म फुंदरा ओ....
हरियर हे धानी दाई हरियर..

*****

मोबाइल

रचनाकार- प्रतिभा सुधीर त्रिपाठी, बालोद

मोबाइल हैं,
घातक हथियार
करती है बीमार
ये कैसा रोग
हाथ में है साथ
बना जीवन रोग.

मोबाइल से
बच्चों का है शोषण
रखते बच्चे साथ
यह करिश्मा
मानो मेरी बात ये
न करों उपयोग.

समय बचे
मोबाइल से काम
जल्दी होता हैं नाम
अच्छाई जानें
दूर बैठे पास हों
ऐसा हो आभास.

सच तो बड़ा
खुश सारा संसार
पर जीना बेकार
मोबाइल हैं
गलत अविष्कार
बच्चे होंगे लाचार.

*****

तीजा के करूभात

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम

तीजा–पोरा हा हमर छत्तीसगढ़ के माई लोगन बर विशेष तिहार हरे. राखी के बाद सब के मन मा एक अलग से खुशी झलकथे की अब तीजा –पोरा आही.अउ खुशी होही काबर नहीं साल भर मा एक बार ये तिहार हर आथे. वइसे तो हर तिहार हा एके घाँव आथे, फेर ये तीजा मा माई लोगन मन अपन–अपन मइके जाथे. मइके के नाम मा ता जम्मों महिला मन एक गोड़ मा खड़े रहिथे. नवा–नेवन्नीन मन हा आठे मनाथे अउ घेरी–बेरी फोन कर के अपन भाई–माई मन ला बुलावत रहिथे. साल मा कतको बार मइके जाही फेर तीजा मा नइ जाही ता घेरी–बेरी पारा –पड़ोस संग गोठिया डरथे. अई ये दारी मँय तीजा नइ गए हंव बहिनी अब्बड़ सुरता आवत हे दाई–बाबू, भाई–भतीजा के . अपन अँचरा मा आसूंँ पोछत बतावत रहिथे. फेर यहू तिहार हर दिनों दिन कम होवत जावत हे एके दिन बर जाथे अउ लुगरा धर के आ जाथे.

ये तिहार हर पोरा ले शुरू हो के गणेश चतुर्थी तक रहिथे. करूभात के विशेष महत्व रहिथे ये तिहार मा. घर–घर माई लोगन मन घूम–घूम के करेला साग खाये ला जाथे. वो दिन काकरो घर साग नइ पूछे, काबर की सबो घर तो करेला हा बने रहिथे. अउ बजार मा करेला के भाव अगास छुवत रहिथे, एकरो दिन आथे. रात कन माई लोगन मन अपन–अपन लोग–लइका ला धर के घरोघर जाथे .अइ चल न बहिनी करेला चीखे बर जाबोन या इही बहाना सबों झन संग भेट मुलाकात हो जाही.

करू भात काबर खाये जाथे :– करेला अउ चना अधिकांश घर मा बनथे अउ येला खा के माई लोगन मन उपास रहिथे. करेला काबर खाय जाथे येखर वैज्ञानिक कारण भी हे, करेला मा विशेष प्रकार से पोषक तत्व मिले रहिथे. येमा विटामिन सी, मैंगनीज,पोटेशियम जइसे तत्व मिले रहिथे. येहा औषधि के भी काम करथे. करेला मा पानी के मात्रा मौजूद रहिथे जेकर से प्यास बहुत कम लगथे, अउ चना मा कैल्सियम किसम–किसम के पोषक तत्व के भरमार

रहिथे. शरीर ला ऊर्जा देथे . ओकर कारण से माई लोगन मन ह करेला याने की करुभात खा के दूसर दिन निर्जला उपवास रहिथे.

पुरखा के बात :– हमर छत्तीसगढ़ मा करेला साग ला विशेष महत्व दिए जाथे. सियान मन बहुत सोच विचार कर के नियम ला बनाए हे ताकि आने वाला पीढ़ी ये कर लाभ उठा सकें. कभू–कभू लगथे की पुरखा मन ये समय ला जानत रिहिन का.... की आने वाला पीढ़ी के मन निर्जला उपास नइ रहे सकें. येकर कारण करेला मा विशेष फायदा देख के उपास के पहिली दिन करु भात खाये के नियम बनाए हे. ताकि महिला मन येकर लाभ उठा सकें अउ पुरखा के मान रख सकें .

आज के पीढ़ी ला विशेष ध्यान रखना चाहिए अउ भरपूर लाभ घलो उठाना चाहिए. ये प्रकार से करुभात खाये के महत्व हे.

*****

नूतन भोर हुआ है

रचनाकार- चेतना चन्द्राकर, कोरिया

मिटने को है, निशा निशानी,
अब तो नूतन भोर हुआ है.
स्वागत में सब खग वृन्द का,
कलरव व मीठा शोर हुआ है
मिटने को.....
रक्त वर्ण में निकला सूरज,
सुनहरा चहुँ ओर हुआ है.
मिटने को.....
फूलों से सज गए हैं उपवन,
मधुप,भृंग भाव-विभोर हुआ है.
मिटने को.....
गगन नापते नीड़ के खग में,
नव उमंग पुर-जोर हुआ है.
मिटने को.....
जाग,छोड़ दे खाट को अपने,
अब उठने का दौर हुआ है.
मिटने को.....

*****

दो पड़ोसियों की कहानी

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

तरुण और वीर दोनों पड़ोसी थे. वह दोनों अकेले रहते थे. तरुण को पेड़ बहुत पसंद था. वीर को पशु बहुत पसंद था. दोनों पड़ोसी की खूब बनती थी. एक बार दोनों ने सोचा कि हम कहीं पर घूमने जाते हैं. वीर ने कहा मोबाइल से पता करते हैं घूमने जाना है. तरुण ने हाँ कहा. वीर ने कहा केदारनाथ चलते हैं. दोनों जाने के लिए तैयार हो गए. दोनों केदारनाथ जाके बहुत खुश हुए. दोनों पड़ोसी के मन को शांति मिली. आते समय आधे रास्ते में तरुण को चक्कर आ गया. वीर, तरुण को तुरंत अस्पताल ले गया. डॉक्टर ने वीर से कहा तरुण को कैंसर हो गया है. वीर को बहुत बड़ा झटका लगा. वीर, तरुण को भाई मानता था. जब तरुण को होश आया तो तरुण ने वीर से कहा कि मैं कुछ दिनों का मेहमान हूँ. तुम्हारे साथ समय का पता नहीं चला. मैंने तुम्हें बताया नहीं था. तुमने मुझे कभी भी भाई की कमी महसूस नहीं होने दी. तुम मुझे हमेशा मुसीबतों से बचाते थे. यह सब सुनकर वीर की आँखों से आँसू निकलने लगे. वीर ने उन बचे हुए कुछ दिनों में तरुण के लिए पेड़ और छोटे-छोटे पौधे लगाए. तरुण की यादों को सहेजने के लिए एक डायरी बनाई. वीर, तरुण के साथ पूरा समय बीतता था. कुछ दिन बीत जाने के बाद तरुण की मृत्यु हो गई. वीर अकेला हो गया. जिस जगह पर वह दोनों रहते थे, उस जगह को छोड़कर वीर चला गया. वीर को तरुण की जब-जब याद आती तो, वह अपनी डायरी को पढ़ता था. वीर अपने जीवन को तरुण की यादों में व्यतीत करने लगा.

*****

गाँधी जी

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा- 8वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा(न), संकुल-लालपुर थाना, वि.ख-लोरमी, जिला-मुंगेली

गाँधी जी आए.
भारत छोड़ो आन्दोलन चलाए.
गाँधी जी ने दिया संदेश.
स्वतंत्र रखो भारत देश.
सफेद रंग का कपड़ा पहने वाले वो पुरूष कौन थे.
अंग्रेजों के सामने क्यों गाँधी जी मौन थे.
कमर कस ली गाँधी जी ने, अंग्रेजों को दिखाने के लिए.
भारत छोड़ो आन्दोलन चलाने के लिए.
खुद की मिट्टी में बना नमक, जिस पर कर लगाया गया.
गाँधी जी द्वारा नमक कानून आन्दोलन चलाया गया.
गाँधी जी के बकरी के चार पैर.
अंग्रेज नही लेते थे गाँधी जी से बैर.
दो अक्टूबर को स्टेज सजायेंगे.
गाँधी जी का जन्मदिन मनायेंगे.
गाँधी जी चरखा चलाते रहे.
ऊनी कपड़े बनाते रहे.
गाँधी जी का जन्मदिन आया.
सत्य और अहिंसा को मैंने अपनाया.

*****

बापू जी

रचनाकार- करन टंडन, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

बापू जी बहुत भोले-भाले थे.
हम सब के रखवाले थे.
गली-गली में दुःख के पल्ले पड़ते थे.
सभी अंग्रेज एक नंबर के निठल्ले थे.
सत्य की राह पर चलने वाले.
ईमान का पाठ पढ़ाने वाले.
समय उनका एक था.
काम उनका नेक था.
गाँधी जी ने चरखा चलाए.
तभी तो अपना नाम बनाए.
गाँधी जी के जन्मदिन की शुभ घड़ी आई.
सभी बच्चों ने उसके फोटो को सजाई.
जन्मदिन आपका हम मनायेंगे.
अंग्रेजों को भारत से भगायेंगे.
राजकोट में पढ़ने वाले.
शिक्षित देश बनाने वाले.

प्यारे-प्यारे बापू थे.
जन-जन के दुलारे बापू थे.
सिद्धांत के पाठ पढ़ाने वाले.
गाँधी जी थे एक दिलवाले.

*****

गनपति बबा

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा 8 वीं, पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

मंडप बनावत हौंव गनपति बबा,
तोर तिहार ला मनावत हौंव.
लड्डू चघावत हौंव गनपति बबा,
तोर मूर्ति ला बइठावत हौंव.
गणपति बबा तोर तिहार ला मनावत हौंव.
झांझ-मजीरा बजावत हौंव गनपति बबा,
तोर बर बाजा ला लगाए हौंव.
गनपति बबा तोर तिहार ला मनावत हौंव.
आस हे! बिसवास हे! गनपति बबा,
तोर महिमा हा अपार हे.
कुछू झन होवय कहिके मोर चिन्ता,
हर बखत मैंय करहूँ सुमिरन.
तैंय हा बनके मोर घर आए हच पहुना,
दस दिन तक होही तोर मान-मनौता.
नारियर धर के मैंय हा आहूँ,
छप्पन प्रकार के व्यंजन बनवाहूँ.
गनपति तोर तिहार ला धूम-धाम से मनाहूँ.

*****

कान्हा

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

कान्हा-कान्हा सभी गोपियाँ बुलाए.
नंदलाला के नाम से सारा जग बुलाए.
राधा के साथ कृष्ण रास रचावे.
राधे-राधे, राधा को, कृष्ण कहे.
कान्हा के बाँसुरी सबके मन को मोह लेते.
नटखट कान्हा, सब कहते.
कान्हा माखन चुराए.
मटकी फोड़ कर माखन खाए.
सभी गोपियाँ कान्हा के पीछे भागे,
देवकी ने तो जन्म दिया,
यशोदा ने तो पाला है.
कान्हा मोर पंख और,
बाँसुरी के बिना अधूरा है.
कृष्ण हर कण-कण में है.

*****

शिक्षक और शिक्षा

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा- आठवीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

शिक्षा से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं.
ज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं.
शिक्षक का करते हैं सम्मान.
कभी नहीं करेंगे उसका अपमान.
हम जैसे बच्चों का कुछ बनने का इच्छा है.
हमारे इच्छा को पूरा करने वाला वह शिक्षक है.
हमारे शिक्षक कुछ भी कर लेते हैं. पर?
हमारे दुःख, पीड़ा को समझ जाते हैं सर.

*****

शिक्षक दिवस आ गए

रचनाकार- अंकित बघेल, कक्षा छठवीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

शिक्षक दिवस आ गए,
दुनिया भर में छा गए.
शिक्षक दिवस मनाएँगे,
पूरे देश में छा जाएँगे.
शिक्षक भी है एक भगवान,
स्कूल में है इनका सम्मान.
शिक्षक देता है हमको ज्ञान,
बच्चे करते हैं बड़े सम्मान.
सब लोग स्कूल चलो जाएँगे,
शिक्षक से ज्ञान पाएँगे.
स्कूल में शिक्षक दिवस मनाएँगे,
हम गाँव में छा जाएँगे.
सभी स्कूल में शिक्षक का सम्मान है,
शिक्षक दिवस का अभिमान है.

*****

आई है राखी

रचनाकार- करन टंडन, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

वचन यह लेता हूँ
सदा खुश रखूँगा तुझको
आई है राखी मेरी बहना प्यारी
सबकी हो तुम लाड दुलारी
इस पावन दिन का कब से इंतजार था मुझको
सूनी पड़ी है बहन मेरी कलाई
मत करो मुझसे लड़ाई
राखी एक पावन त्यौहार है
भाई-बहन का प्यार है
लड्डू, पेड़ा, मिठाईयाँ तुम लेते आना
हम सभी भाईयों को तुम खिलाना
सदा वचन देता हूँ रक्षा करूँगा तुम्हारी
मेरी बहना सबसे प्यारी तुम हो मेरी लाड दुलारी
बहन तू आई है मेरे घर बाँधने मुझे राखी
तेरा-मेरा बंधन है कितना सच्चा साथी
मेरी बहना सबसे प्यारी
सबकी हो तुम लाड दुलारी
मेरे और मेरी बहन की तरफ से राखी की आप लोगों को ढेर सारी बधाई.

*****

चंद्रयान- 3

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

ऐ मेरे चाँद मैं तुझसे मिलने आऊँगा,
सही सलामत तेरे सतह पर लैंडिंग कर जाऊँगा.
धरती से बादल को चीर कर तेरे पास आऊँगा,
मैं अपने भारत देश को नंबर वन पर लाऊँगा.
चालीस दिनों के बाद तेरे सतह पर आऊँगा,
आकर तेरे सतह पर तिरंगा झण्डा लहराऊँगा.
भारत देश खुशियाली मनाएगा,
अब नया इतिहास रचाएगा.

*****

राखी के दिन आगे

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

देख मोर संगवारी अब राखी के दिन आगे.
भाई अऊ बहनी के प्यार ह दुनिया भर म छागे.
चारों कोती दिखत हवैय लड्डू, पेड़ा अऊ राखी के दिन आगे.
मोर जम्मों भाई अऊ बहनी मन के पहली तिहार आगे.
मोर बहनी ह जोर जबरदस्ती करके अपन मइके आगे,
आज मैंय अपन भाई मन ल पहनाहू राखी,
जेमा रंग-बिरंग के होही धागा. मोर भाई के करही सुरक्षा.
ओही हे मोर कसम के वादा, भाई ह देवत हे पइसा जेला झोंकत नई हे मोर बहना.
का तकलीप होगे मोर प्यारी बहना.
दु:खे-दु:ख ह जावत हे, खुशी के दिन ह आवत हे.
रक्षाबंधन आवत हे, भाई बहनी के प्यार ल समझावत हे.
भाई ह देवत हे ढेरों उपहार,
दूनों हाथ म झोंकत हे मोर प्यारी बहनी.

*****

आबे मोर दूवरिया

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

मोर सहारा म जियत रहे, आज छोड़ के जाथच मोला
बेटी लइका धर के जावत हवच, मोर ले दूरिहा
का करबे अउ का धरबे, मोर ले जाके तैंय दूरिहा
आज नहीं तो काल, आबे मोर दूवरिया
बहू के बात माने रेहे, जाबे मोर ले दूरिहा
तोला का पता हे, भाई, दाई अउ ददा के पांव म हे दुनिया
तोला का पता हे, भाई, दाई अउ ददा के पांव म हे दुनिया
आज नहीं तो काल, आबे मोर दूवरिया
आबे मोर दूवरिया, बहू के बात माने रहे
भोगत हच ओखर बात म, भोगत हच ओखर बात म
चौखट पार करे बर तैंय, रोबे मोर ले दूरिहा
आज नही तो काल, आबे मोर दूवरिया, आबे मोर दूवरिया

*****

तिरंगा का सम्मान

रचनाकार- कु. श्वेता टंडन, कक्षा 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

इस तिरंगा का हम सम्मान करते हैं,
देश के लिए हम जीवन कुर्बान करते हैं
इस तिरंगे में मेरी जान है जैसे तिरंगे में भगवान है.
तिरंगे से है हमारी पहचान इसमें ही हमारी जान है.
आओ मेरे हिंदुस्तान और देखो इसकी शान.
हमारा देश कई राज्यों में बँटा है
अनेकता में एकता इसकी प्राकृतिक छटा है
मुश्किल से मिली है हमें स्वतंत्रता
हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं
तिरंगा फहराते हम राष्ट्रगान गाते हैं
खुल कर इस दिन को मनाते हैं
इस तिरंगे से हमारी शान है
करते इसका हम सम्मान हैं

*****

मौज मनाओ जी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

लड्डू पेड़ा खाओ जी,
जम कर मौज मनाओ जी.

गरम समोसे अगर मिले,
खाओ फिर मुस्काओ जी.

पानी पूरी चाट चटक,
खाकर ख़ुशी मनाओ जी.

हलवा पूरी अगर मिले,
खाओ,मत शरमाओ जी.

पेट भरा हो तब प्यारे,
मीठा पान चबाओ जी.

*****

अलबेले पेड़

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

खुशियां लेने लगी हिलोर,
देखो छम छम नाचा मोर.

सुन प्यारी कोयल का गीत,
सभी हो उठे भाव विभोर.

सुबह सुबह बरगद के पास,
गूँज उठा कलरव का शोर.

महक उठे जब प्यारे फूल,
बगिया झूम उठी हर ओर.

चहक उठे अलबेले पेड़.
हवा चली जब भी घनघोर.

*****

चिड़िया बोली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

बड़े सवेरे चिड़िया बोली,
आई तितली की इक टोली.

कलरव गूंजी फिर बगिया में,
तब कलियों ने आँखें खोली.

शीतल चली हवा सुखदाई,
सुनो सुबह कोयल की बोली.

फूल खिले मौसम हरषाया,
मुखरित हुई हवा हमजोली.

खुशबू से ये बाग़ नहाया,
महक फिजा में किसने घोली ?

*****

बरगद

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

ये बरगद का पेड़ हमारा,
घना वृक्ष ये सबको प्यारा.

पक्षी का ये अपना घर है,
इसमें करते सभी गुजारा.

बड़े सवेरे पक्षी करते,
कलरव का संगीत बहारा.

देता है ये शीतल छैया,
दोपहरी का बने सहारा.

यहाँ राही करते आराम,
बरगद उपकारी है यारा.

*****

स्वतंत्र राज्य - मोर छत्तीसगढ़

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

भारत के जिवरा भुइयाँ म, जेन ह बिराजथे.
उही भारत के धुकधुकी ह, मोर छत्तीसगढ कहाथे.

स्थापित होइस हे,एक नवंबर के दण्डकारण्य ह.
बनगे ए ह आजाद राज्य, भारत के प्राण ह.

अरपा, महानदी, शिवनाथ मन, हावय इहाँ के नदिया.
पैरी, हसदो मन मान इहाँ के, इंद्रावती पखारय पइयाँ.

अइसन मीठ अऊ मन मोहइया, हावय इहाँ के बोली.
तभे छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया, कहय लइका मन के टोली.

पहाड़ी मैना नरीयावय सुघ्घर, गेंदा ह ममहाथे.
हज़ार किलो के वन भैसा, दक्षिण कौशल म पाये जाथे.

राजकीय गीत करमा ह, हमर रग रग म बोहाथे.
फाग ह रंग मन संग, होली म गाये जाथे.

कातिक मास म सुवा ल मढ़ाके, जब सुआ गाये जाथे.
तरी हरी ना ना मोर ना ना सुवा ना, जगजाहिर हो जाथे.

फरा, मुठिया, चिला मन, इहाँ खाये जाथे.
राजकीय फल कटहल ह, बड़ सुघ्घर मिठाथे.

पच्ची इहाँ के राजकीय मिठाई, साल ह वृक्ष कहाथे.
पाँच सौ साल ले जीथे ऐ ह, इहाँ ल हरियर ऐ ह बनाथे.

साल पेड़ के नीचे म, जेन फुटु ह फुटथे.
उही साग ल बोड़ा कहिके, राजसी माने जाथे.

तीरंदाजी करथे लइका मन, फुगड़ी खेले जाथे.
करतब तमासा अपन देखाथे जब, धुर्रा ह थपोली बजाथे.

हरियर लुगरा पहिर के, छतीसगढ़ महतारी करथे सिंगार.
गोड़ म पैरी,अटकारिया पहिरथे, सुतिया पहिरै अस हार.

ओखर कोरा के लइका हन हमन, ओ हरय हमर महतारी.
मुस्काथे जब ओहा त होथे, खुसी के बरसा भारी.

*****

सुकून की चाह

रचनाकार- संगीता नेताम,बालोद

सुकून मिलता है सिर्फ अपने नसीब से
जिंदगी जी लो चाहे अच्छे तहजीब से.

जन्म लेते ही बुन लिए सपना एक अच्छा
बड़ा होकर क्या बनेगा मेरा प्यारा बच्चा.

तोतली आवाज में जब मैंने बोलना सीखा,
पाठशाला ने बदल दिये बोलने का सलीका,

पाठशाला में गुरु जी से मिला आश्वासन
शिक्षा से मिलेगा तुम्हें सुकून का जीवन

पढ़ाई करते-करते,पार कर गए उम्र बीस
भरते रहे माँ-बाप स्कूल कॉलेज का फ़ीस

कालेज के अध्यापक ने हमें दिया ज्ञान
पांच साल की तप से मिलेगा वरदान

कालेज की पढ़ाई, साथ शुरू हुई तैयारी
नौकरी के साथ आएगी,सुकून की पारी

आज नहीं तो कल आएगी हमारी बारी
शुकुन की जिंदगी देगी नौकरी सरकारी

दिन रात नौकरी की करने लगे तलाश
सुकून से जीना छोड़,सुकून की थी आश

मिल गई नौकरी,कुछ तो मिला राहत
पर पुरा ना हो सकी सुकून की चाहत

घर से निकले दफ़्तर और दफ़्तर से घर
कटने लगे अब तो जिंदगी का यह सफर

छुट्टी की आश में सप्ताह निकल गए
सप्ताह से सप्ताह,कई महीना निकल गए

दिन,सप्ताह,महीना और गुजरने लगे साल
ना मिला सुकून,जिन्दगी का वही हाल.

*****

जल

रचनाकार- मनोज चंद्राकर, गरियाबंद

जल अमृत की सागर,शिव शंभु का नीर
जल में जग समाया है,गंगा की तस्वीर
जल ही जीवन है, धरा का आधार
सबकी निज आकृति, पानी निराकार
पितृ की तर्पण है पानी,भागी की कहानी
प्रकृति की दर्पण है पानी,पृथ्वीलोक की रानी
हाइड्रो, ऑक्सी की प्रेम प्रणय से,बन जाता है नीर
जल में जग समाया है,गंगा की तस्वीर
तीन रूपों की संगम है,ठोस,द्रव और गैस
रंगहीन कहलाता है,बिन पानी सब भैंस
पानी की एक एक ओस का,कृत कार्य सम्मान
महादेव को अर्पण कर,बन जाओ महान.

*****

मेरे प्यारे दादा जी

रचनाकार- दीक्षा पाठक, क्लास-3, शासकीय प्राथमिक शाला- सैगोना, बेमेतरा

मेरे दादा जी बहुत अच्छे है,
वे सुबह जल्दी उठते हैं
मैं भी उसके साथ उठती हूँ,
हम साथ में टहलने जाते है
बहुत सारी बाते करते हैं,
सुबह स्नान कर पूजा करते और अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ते हैं
हमें भी किताब पढ़ने को कहते,
हम दादा जी के साथ खेलते है, बाजार जाते, मेला जाते है
सुंदर- सुंदर खिलौना लेते है,
झूला झूलते है
कभी- कभी मम्मी पापा डाटते है तो उनकी डांट से हमें बचाते है,
हम भी दादाजी की हर बात मानते हैं
उनका आदर हम सब करते है,
मेरे दादा जी बहुत प्यारे और अच्छे हैं
वे हमसे बहुत प्यार करते हैं.

*****

शिक्षा है अनमोल

रचनाकार- जगजीवन प्रसाद जांगड़े, सक्ती

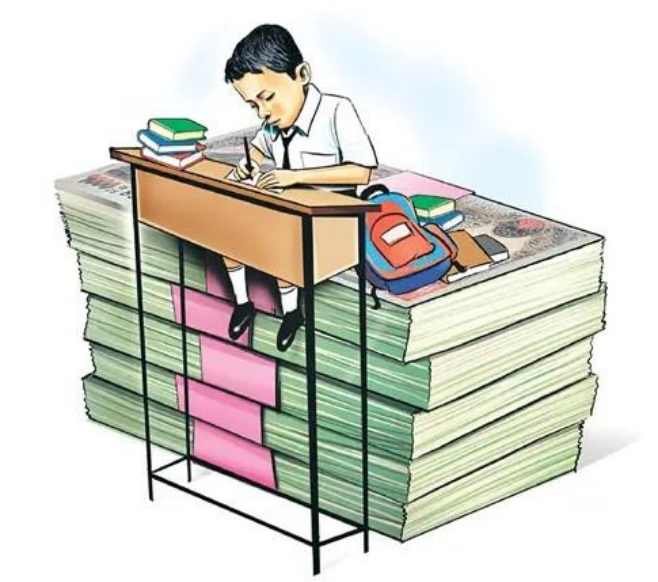

जीवन है अनमोल, नहीं है इसका कोई तोल,
शिक्षा से मिलता है हम को सम्मान,
इसी से मिलता है हमें, जीवन का हर ज्ञान.
शिक्षा बिना जीवन होता है बेकार,
अगर जीवन को बनाना है धारदार,
चलो साथियों शिक्षा के द्वार.
चलो निकलो बस्ता पकड़ो,
गांठ ये बांध लो, होकर के कूल.
चलना है चलना है स्कूल,
विद्यालय जाना है मिलेगी उड़ान,
शिक्षा ही देगी आन -बान- शान
शिक्षा ही है बस एक गहना, बात मेरी मान,
अगर जीवन को बनाना है उपलब्धि का सार,
सुन ले पुकार चलो शिक्षा के द्वार.

शिक्षा जीवन को संवार देगी,
जीवन संवर जायेगा, इससे नाता जोड़ लो.
शिक्षा का अधिकार मिला है, बात ये जान लो,
अगर जीवन को बनाना है मुक्ति का द्वार,
सुन लें पुकार चलो शिक्षा के द्वार.

*****

शिक्षा बहुत ज़रूरी है

रचनाकार- जगजीवन प्रसाद जांगड़े, सक्ती

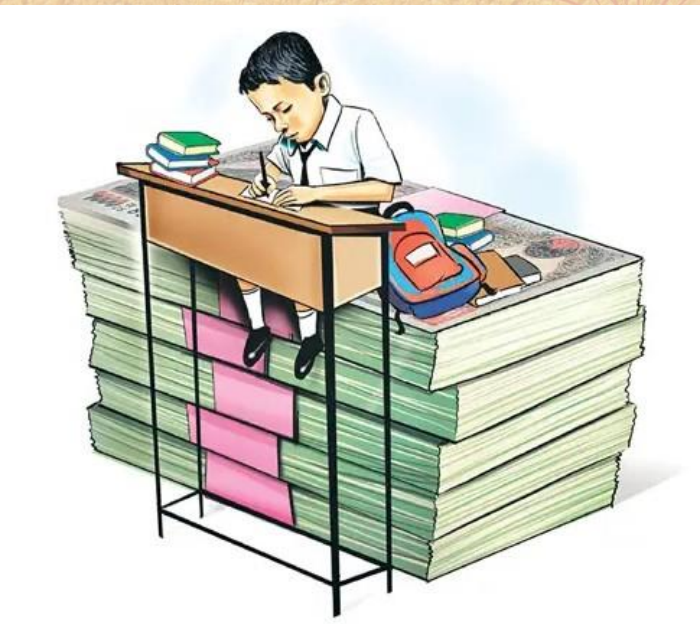

शिक्षा की कली जब फूल बनेगी
देश हमारा महक उठेगा,
पुस्तक पढ़ने लगेंगे बच्चे
तब ही जीवन सार्थक होगा,

शिक्षित जब सारे बच्चे होंगे,
उनका जीवन रोशन होगा
शिक्षक भी खुश होंगे दुगुना,
ज्ञान दीप जब जगमग होगा,

शिक्षा की घुट्टी सबको पिलाना,
जीवन धन्य बनाना है,
क़लम की शक्ति पहचानो साथी
भारत को स्वर्ग बनाना है,

मेहनत चाहे मजदूरी करना
बच्चों को अच्छी शिक्षा देना
पढ़कर वह जब आगे बढ़ेंगे
राष्ट्र का नव निर्माण करेंगे.

*****

देवारी तिहार

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

आ गे हे देवारी तिहार
मिलजुल दीया जलाबो.

सजाबो चउक पुरके अंगना ल,
सब मगन होके सुवा गीत गाबो.

नवा-नवा कपड़ा पहिनबो
सुहुत्ती दीया जलाबो जी भाई.

हाथ जोड़ के पूजा करबो,
तोला मनाबो लक्ष्मी दाई.

मिरची अउ बम फटका फोड़ के,
अड़बड़ लाई अउ मिठाई खाबो.

देवारी तिहार मिल मिलाप के,
घर-घर सँगवारी कना मिले जाबो.

देवारी तिहार दीया के,
मिलजुल दीया जलाबो.

*****

कुत्ते हुए व्याकुल

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

सब्जी बाज़ार जा रहा था,
आज,बड़े शान से हाथी.
गली के कुत्ते भौंक रहे थे,
लेकर बहुत से साथी.

गुस्से में आकर हाथी ने,
अपने सूंड से धूल उठाया.
जोर से कुत्तों पर दे मारा,
कुत्तों को समझ न आया.

चकरा कर सब गिरे वही,
मुंह, आंख में भर गए धूल.
शान से हाथी गुज़र गया,
सब कुत्ते हुए व्याकुल.

*****

प्रकाश के घेरे में

रचनाकार- जगजीवन प्रसाद जांगड़े, सक्ती

करोड़ों-करोड़ ग्रहों और तारों
को प्रकाशमान करती हुई ज्ञान की आकाशगंगा
गुज़रती है ख़ामोश, पृथ्वी के सन्नाटे
अंधकार के ऊपर से.
एक विद्यालय के रन्ध्र से,
शिक्षा का दिनकर चमक रहा
छिटकता है,
बस्ता थामे, एक विद्यार्थी के कपोल पर

अज्ञानता में पड़ी चौड़ी दरारों से
घूरता है काला अँधकार
और झींगुरों की आवाज़ का पहरा
गहराता जाता है रात-रात

दूर कहीं कोने में
विद्यालय के भीतर,
शिक्षकों की आवाज उभरती है,
चुपचाप, एक प्रयोगशाला में चल रहे अनुसंधान से
एक तीव्र प्रकाश-पुंज शिक्षा का,
पूरे परिवेश को उजलित करता चला जाता है.

*****

गुब्बारे वाला

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

देखो आया गुब्बारे वाला.
रंग बिरंगे गुब्बारे लाया.
सबके मन को यह है भाया.
बच्चों को यह खास लुभाया.

चुन्नू लो तुम लाल और पीला.
मुन्नू लो तुम हरा और नीला.
है इसका हर रंग छबीला.
पर गहरा नीला ले गई शीला.

सबके मन को यह है भाते.
शादी पार्टी में रंग जमाते.
आयोजन में यह चार चांद लगाते.
बच्चे खेलते खुशियां मानते.

*****

आगे बढ़ते जाना

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर

आगे बढ़ते जाना
आगे बढ़ते जाना.
जहां खड़े हो वहां से,आगे बढ़ते जाना
बीते हुए दिनों को पीछे छोड़,
आगे बढ़ते जाना.
ना निराश हो , ना चिंता कर
ना हताश हो,ना पीछे मुड़
आगे बढ़ते जाना.
उन्नति के मार्ग पे,आगे बढ़ते जाना.
हार ना मान सपनों को ना छोड़
सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचते जाना
आगे बढ़ते जाना-आगे बढ़ते जाना.
सुख की है हमको चाह नहीं
दुख की हमको परवाह नहीं
आगे बढ़ते जाना - आगे बढ़ते जाना.

*****

चाचा नेहरू

रचनाकार- भूपसिंह भारती, हरियाणा

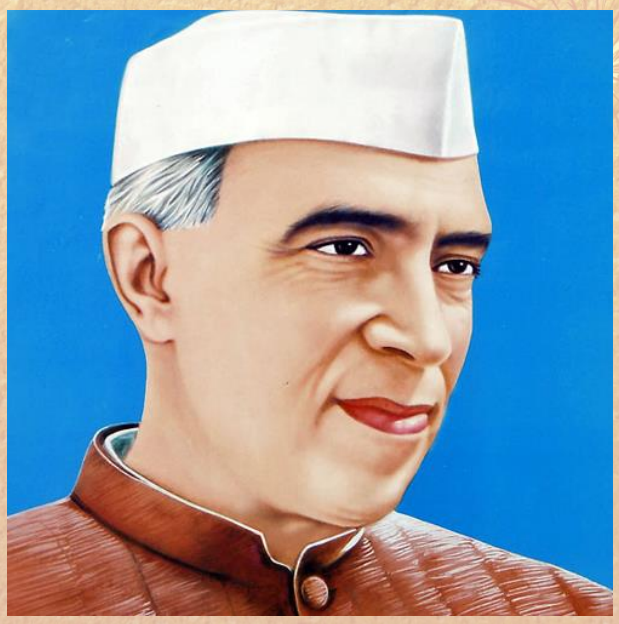

नेहरू जी के जन्मदिवस को,
बाल दिवस' हम सब कहते.

निर्माण करो उन रिश्तों का,
जो शक से भी ना हो ढहते.

प्यार से आपस में खेलो,
ना बात-बात में हम फहते.

देश बनाओ ऐसा जिसमें,
प्यार के झरने हो बहते.

नेहरू जी भी बच्चों संग,
बच्चों की भांति ही रहते.

आराम हराम है बच्चों,
नेहरू जी भी यह कहते.

बच्चों के संग खूब खेलते,
उनके सब दुख-सुख सहते.

इसीलिए तो इनको बच्चे,
प्यार से 'चाचा नेहरू' कहते.

*****

लो फिर से आ गई दिवाली

रचनाकार- भूपसिंह भारती, हरियाणा

मौज-मस्ती संग ले खुशहाली.
लो फिर से आ गई दिवाली
हरे, लाल, नीले बल्बों की,
चस भुज करने लगी लड़ी.
अमावस की रात अँधेरी में,
आई खुशियों की शुभ घड़ी.
दामन रहे ना किसी का खाली.
ये लो फिर से आ गई दिवाली.

एटम बम बड़ा शोर मचाये,
रॉकेट सर्रर्र से नभ में जाये,
चकरी,चिड़िया, साँप,फुलझड़ी
अनार पटाखे खूब चलाये.
सब नाचे-कूदे बजाके ताली.
लो फिर से आ गई दिवाली.

एक-दूजे को गले लगाकर,
मन से नफरत का भाव मिटायें.
मन में अपने प्रेमदीप जलाकर,
जग में प्रेम प्रकाश फैलायें.
रहे ना कोई गरीब मवाली.
लो फिर से आ गई दिवाली.

आओ मिलकर ये प्रण उठाये,
बने दोस्त न कोई दुश्मन हो.
संसार को मानो निज परिवार,
सर्वत्र उन्नति चैन अमन हो.
तब लगे विश्व की शान निराली.
लो फिर से आ गई दिवाली.

*****

बंटी की जिद

रचनाकार- डॉ0कमलेंद्र कुमार, उत्तरप्रदेश

एक सड़क पर रम्मन काका
बेच रहे गुब्बारे.
दो रुपये में एक मिलेगा,
लेलो बंटी प्यारे.

काले,पीले, हरे,गुलाबी,
और नारंगी लाल.
भिन्न रंग के हैं गुब्बारे,
ये हैं खूब कमाल.

जिद पकड़ कर बैठ गया नन्हा
अपना बंटी प्यारा.
मुझे चाहिए सब गुब्बारे,
रंग बहुत है न्यारा.

पापा ने समझाया उसको,
बहुत नहीं हैं पैसे.

बाँह डाल मम्मी के बोला,
खेलूँगा मैं कैसे?

मम्मी ने अपने पल्लू से
एक गांठ है खोली.
चार लिये गुब्बारे सुन्दर,
हँस करके यह बोली.

होम वर्क भी नहीं हुआ है,
उसको करके जाना.
खेलो कूंदो मौज मनाओ,
गाना खूब तराना.

*****

आओ पेड़ लगाए हम

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा

आओ पेड़ लगाए हम
धरती को स्वर्ग बनाये हम

फल मिलता है फूल मिलता है
लकड़ी और छाया मिलता है
घर मिलता है चारा मिलता है
पशु पक्षियों को सहारा मिलता है

चिड़ियाँ फिर से चहकाएंगे
बगियाँ फिर से महकाएं हम
आओ पेड़ लगाए हम
धरती को स्वर्ग बनाये हम

बारिश ये कराता है
धरती का प्यास बुझाता है
किसान फ़सल उगाता है
तब हमको खाना मिल पाता है

कल ये पेड़ बन जाएंगे
आज जो पौधा रोपे हम
आओ पेड़ लगाए हम
धरती को स्वर्ग बनाये हम

*****

खा ले मिठाई

रचनाकार- शशिकांत कौशिक, बिलासपुर

देवारी के देवत हव बेटा बधाई,
लाने हव तोर बर खा ले मिठाई.
आ गे देवारी फटक्का ले न दाई,
लेबे फटक्का तभे खाहूँ मिठाई.

एक लरी मिर्ची बम
एक पाकिट चकरी,
अनारदाना छोटकुन
दू रंगिया छुरछुरी.
ले दे न दाई मैं ह नई मांगव खाई,
आ गे देवारी फटक्का ले न दाई.

नान्हे जुगजुगी के झालर लगाहूँ,
केरा पान दिया ले घर ल सजाहूँ,
गाय के गोबर म अंगना लीप के,
दुआरी म सुग्घर अलपना बनाहूँ.

अऊ ला देहूँ बतासा संग लाई,
आ गे देवारी फटक्का ले न दाई.

लेहे हावय चकरी सोनू के अम्मा,
मिर्ची बम लेही मोनू के अम्मा,
गोलू बर ले हे जाही छुरछुरी,
ओखरे संग म भोलू के अम्मा.
अम्मा होवत हे मोर करलाई,
आ गे देवारी फटक्का ले न दाई.

लछमी माता के पूजा करबो
आसन कमल के सजा के,
सुरसती अउ गजानन देव ल
बढ़िया सुमिर के मना के.
तभे होही बेटा सबके भलाई,
छोड़ फटक्का खा ले मिठाई.

*****

माता रानी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

जोत जलत हे जगमग जगमग, गूँजत हे किलकारी.
नव दिन बर माता रानी हर, आये हमर दुवारी.

लाल–लाल चूरी पहिरे अउ, लाली महुर रचाये.
लाली चुनरी ओढ़े माता, मुच मुच ले मुस्काये.
सरग उपर ले दुर्गा दाई, बघवा करे सवारी.
नव दिन बर माता रानी हर, आये हमर दुवारी.

महाकाल अउ राम चंद्र जी, हर दुर्गा स्तुति गावै.
नारद मुनि सँग सबो देवता, माथा अपन नवावै.
कुष्मांडा अउ गौरी मइया, सब के हवै दुलारी.
नव दिन बर माता रानी हर, आये हमर दुवारी.

कतको धरती संकट आथे, तुरते ओला टारे.
रूप धरे काली माता के, दानव मन ला मारे.
करे पाप कलयुग मा मानव, ओखर लाये पारी.
नव दिन बर माता रानी हर, आये हमर दुवारी.

*****

पसंद अपनी अपनी

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

मौली -मम्मी क्या बनायी हो?जल्दी परोसिये ना. प्रेयर में देर से पहुँचेंगे तो डाँट पड़ेगी.
मम्मी नाश्ते में ब्रेड बटर परोस देती है.
मौली -"ये क्या मम्मी ?मैं आपको दोसा चटनी बनाने के लिये बोली थी ."
मयंक-"मुझे तो ब्रेड बटर बहुत पसंद है .मम्मी मैं तो मजे से खा लूंगा."
मम्मी -"मौली बेटा !कल शर्मा आंटी मेघा की एक ड्रेस सिलने के लिये दे गयी थी .वह वार्षिकोत्सव में भाग ली है ना.गरबा डांस करेगी.मैं सुबह से उठकर लंहगे में जरी लगा रही थी ."
मौली -"दिखाइये मम्मी !"
मम्मी भीतर से गरबा ड्रेस लेकर आती है .
मम्मी -"कैसी लग रही है?ये मैं शर्मा आंटी की साड़ी से बनायी हूँ."
मौली -"वाह मम्मी !!बहुत शानदार है .बाजार में पाँच हजार से कम कीमत में नहीं मिलेगी.आपके हाथ में जादू है मम्मी!"
मम्मी-"कल मैं नाश्ते में मसाला दोसा और चटनी बना दूंगी."
सारी बेटा.तुम्हें आज का नाश्ता पसंद नहीं आया .
मौली - "आप इतनी व्यस्त होकर मेरे लिये नाश्ता परोस दी है .ये भी कम बड़ी बात नहीं है ."
दादा जी-"बच्चों !सड़क के किनारे किनारे साइकिल चलाकर जाना .शहर में इन दिनों एक्सीडेंट बहुत हो रहे हैं .ज्यादा स्पीड में साइकिल नहीं चलाना."
दादी -"वो श्यामू दूध वाला है ना उसे भी कल किसी कार वाले ने ठोकर मार दी तो बेचारे का

पैर फ्रेक्चर हो गया है ."

मुझे भी इन बच्चों की चिंता लगी रहती है.

मौली -"आप चिंता मत करिये दादी .हम धीमी रफ्तार से ही साइकिल चलाते हैं."

दोनों बच्चे चरण स्पर्श करके स्कूल चले जाते हैं.

*****

चीकू

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

एक छह वर्षीय बालक चीकू अपनी मस्ती में गुनगुनाता हुआ घर के पास स्थित कपड़े की दुकान के पास ठिठक कर रुक जाता है.वह धीरे से कहता है" दोस्त तुम कितने सुंदर हो लेकिन तुम बोल नहीं सकते हो.तुम्हारी ड्रेस बहुत सुंदर है.मैं तुम्हें लक्की नाम से बुलाऊंगा."

बालकों की दुनिया हम बड़ों से पृथक होती है.वे अपनी काल्पनिक दुनिया में उड़ान भरते हैं और खुशी से चहकते रहते हैं.कुछ दिनों से दुकान के सेठ किशोरी लाल उस पुतले के पीछे खड़े होकर चीकू की बात सुन कर मजा लेने लगे थे.

दीपावली का समय नजदीक था.लोगों के घर में साफ सफाई चल रही थी.दुकान के नौकर ग्राहकों को कपड़े दिखा रहे थे तभी किशोरी लाल की नजर बालक चीकू पर पड़ी वह उस गुड्डे से बात कर रहा था.

किशोरीलाल उसकी बात सुन ने लगे वह कह रहा था

लक्की -तुम आज इस नयी ड्रेस में कितने सुंदर दिख रहे हो.मेरी माँ इस दीपावली में मेरे लिये कपड़े नहीं खरीदेगी

क्योंकि उनके पास पैसे नहीं हैं.

किशोरीलाल का दिल भर आया.दूसरे दिन जब वह बालक फिर उस गुड्डे के पास आया और बातें करने लगा.

चीकू-"लक्की !तुम ही तो हो जो मेरी सारी बातें सुनते हो.माँ से भी मैं जिद नहीं करता.वो सबके घर में बरतन माँजने जाती हैं.मेरे लिये वो खिलौना भी नहीं ले पाती हैं."

किशोरी लाल ने धीरे से कहा --"दोस्त ;मेरे पाँव के पास देखो ये गिफ्ट तुम्हारे लिये है."

चीकू ने नीचे देखा तो एक बड़ा सा डिब्बा रखा हुआ था.उसने थैंक्यू कहा और खुशी से उछलता हुआ घर चला गया.

किशोरी लाल उसे जाते हुये देख रहे थे.उस डिब्बे में पेंट शर्ट और कुछ खिलौने उन्होंने रख दिये थे.अगले दिन दीपावली थी.चीकू नयी ड्रेस पहन कर उसी गुड्डे के पास आया.किशोरी लाल ने पीछे छिपकर उसकी बातें सुनी.

चीकू "-दोस्त देखो मैं कैसा दिख रहा हूँ?मेरी माँ ने कहा है कि तुम अपने दोस्त को गिफ्ट के बदले थैक्यू बोलकर आना.थैक्य यू दोस्त तुम बहुत अच्छे हो"

पुतले के पीछे छिपे किसोरी लाल जी की आँखों में खुशी के आँसू आ गये.

*****

किस्मत की क्या बात है

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

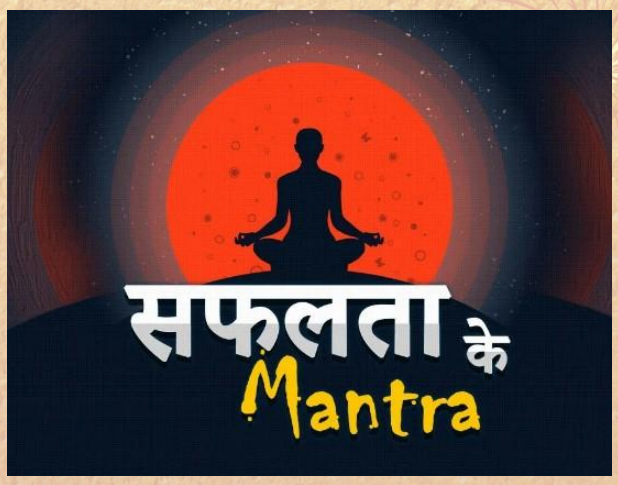

किस्मत की क्या बात है.
न रहता ये किसी के साथ है.
मिलती सफलता सिर्फ उसे ही,
जिसे खुद पर विश्वास है.

नही है किस्मत मे,
यह कहकर हार जाते है.
मेहनत करने से पहले ही,
डर कर भाग जाते है.

बंद करो किस्मत को दोष देना.
ये सब फिजूल की बात है.
करो कठोर परिश्रम क्योकी,
तुम्हारी सफलता तुम्हारे हाथ है.

*****

जगमग दीप जले

रचनाकार- सुशीला साहू, रायगढ़

जगमग-जगमग दीप जले
दीप जले भई दीप जले.
दीपावली का पर्व जो आया,
खुशियों से सब का दीप जले.

घर आंगन को खूब सजायें,
सब गमलों में पौध लगायें.
चारों ओर सजे फुलवारी,
आओ बच्चों धूम मचाएं.

चिकनी मिट्टी भी ले आयें,
सुन्दर सुन्दर दीया बनायें.
स्नेह रूपी बाती से हम मिल,
प्रीत भरी सब दीप जलाएं.

खील बताशे बाँट-बाँट कर,
लड्डू पेड़ा हम खूब खाएं.
भेद भाव को हम मिटाकर,
आपस में सब गले लगायें.

बम फटाखे धुआं से बचकर,
फूलझड़ियां हम जलायेंगे.
पेड़ पौधों से दोस्ती करके,
एक एक पेड़ जरूर लगायेंगे.

ध्यान में पर्यावरण की सुरक्षा,
ऐसा कुछ कर दिखायेंगे.
पर्यावरण बचायेंगे तभी तो ,
खुली हवा में सांस ले पायेंगे.

*****

मुनिया रानी

रचनाकार- रूपा अम्बस्ट, सहायक शिक्षक, प्रा. शाला भगवानपुर

मुनिया रानी बड़ी सयानी
मीठी बातें ठंडा पानी

जब वह बोले मीठे बोल
झूम बंदर नाचे मोर

उसकी आंखें गोल गोल
मानो चंदा सी अनमोल

जब वह चलती झूम झूम
धरती माता को चूम चूम

खुश हो जाती दादी नानी
मुनिया रानी बड़ी सयानी

*****

दूर नही अब चंदा मामा

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

नए भारत का उदय हुआ,
नए परिवर्तन,नए विज्ञान लिए.
अथक परिश्रम, दृढ निश्चय से,
खुले नए रास्ते,अनुसंधान से.

राह मुश्किल,कठिन डगर था,
पर भारत ने यह काम किया.
इस सावन में हमने,
कदम बढ़ाए चाँद पर.

चाँद पर तिरंगा लहराया,
भारत की ये शान है.
चंद्रयान-3 के सफल अवतरण से,
हर्षित हर एक इंसान हैं.

शंखनाद किया भारत ने,
हम कमतर नहीं विज्ञान में.
सर्वप्रथम भारत ने लहराया,
परचम चाँद के दक्षिण भाग में.

विश्वपटल पर स्वर्णिम शब्दों में,
अंकित किया नाम अपना.
गर्वित हैं,हम सब देशवासी,
भारत के सफल अभियान से.

चंद्र तल पर घूमता प्रज्ञान,
जैसे सुना रहा हो तान.
बढ़ा रहा उत्सुकता मन में,
चंदा मामा तुम हो नभ में .

*****

दीपावली

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

हर घर में दीप जली,
हर आँगन सजी रंगोली.
हर चेहरे पर खुशियाँ छाई,
पावन पर्व दीपावली आई.

खील बताशों से सजी थाल,
फुलझड़ियों की लगी कतार.
खुशियों की उठती फुहार,
सजे रंग रोगन से घर-द्वार.

आशाओं के दीप जले,
उम्मींदों के आश खिले.
मेरे और तुम्हारे आँगन में,
खुशियों की रंगोली सजे.

आओ इस दीपावली में,
भाई-चारे के दीप जलाएँ.
चहुँ ओर खिल उठी आशाएँ,
श्रद्धा,विश्वास के दीप जलाएँ.

*****

बहुत कुछ है

रचनाकार- सौरभ सेन

बहुत कुछ है जो
अव्याख्यायित है,
बहुत कुछ है जो
सोचने पे विवश करता है,
बहुत कुछ है जो
जानकर भी अजाना है,
मै कभी-कभी यह सोचता हूं
कि मै ये सब क्यों सोचता हूं,
एक व्याकुलता है अधूरे जीने मे,
लहू घुल-घुलकर मिल जाता
है पसीने मे,
फिर मुझको लज्जा आती
स्वयं पर,
क्यों अपनी पीड़ा का अलाप निरंतर,
क्यों अपनी दुर्बलता से मुंह मोड़ना,
क्यों निरर्थक स्थितियों मे
सिर फोड़ना,
प्रभात की नवकिरणें नही
गाती तिमिर का गान,
मेघाच्छादित आवरण
बांटती जग को प्राण,
जैसे वायु नही करता

सबल निर्बल का भेद,
मानव दुष्कृत्यों को वहन कर
धरा को नही खेद,
यह जानकर की आग्नेयगिरि
के मुहाने पर खड़े हम सब,
हाहाकार करने, विभत्सता
को छुपाने के विफल प्रयास
मे जाने क्या बनते जा रहे हैं,
शुष्क हो रहे भावों का
पारस्परिक संकुचन,
संवेदना का विघटन,
मुल्यों का अवमूल्यन,
व्यवस्था का नियोजित पतन,
और बहुत कुछ,
अभी तो आवश्यक है,
प्रभात का स्वागत किया जाए,
समीरण का वंदन किया जाए,
मेघों से जल लेकर वसुधा का
आचमन किया जाए,
अपने निर्णयों पर बार-बार
चिंतन किया जाए.

अव्याख्यायित=जिसकी व्याख्या न की गयी हो,
तिमिर=अंधेरा,
मेघाच्छादित= बादलों से ढका हुआ,
आग्नेयगिरि=ज्वालामुखी,
संकुचन=सिकुड़ना,
विघटन=टूटना,
अवमूल्यन=गिरावट,
समीरण=हवाओं का चलना

*****

दुविधा

रचनाकार- गुंजन सिंह ' क़ासिर '

कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?
दिलबर,प्रियतम,मनमीत लिखूँ ?
चारों ओर के हाहाकारों में,
कैसे प्रेमसंगीत लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

खेतों में बारूदी गोले,
खलिहानों में बिखरे शोले.
खून भरे हैं नदी और नाले,
कटते - मरते इंसाँ भोले.
तुम ही कहो लाशों के बीच मैं,
कैसे मीठी - सी प्रीत लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

चहुँ ओर है बिखरी लाशें,
कातर, सहमी - उखड़ी साँसें.
हिंसा सब कुछ लील रही है,
जैसे शकुनि के जादुई पाँसें.

ऐसे जंगलराज में कैसे
दिल पर दिल की जीत लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

बेटी बिकती कारण तंगी है,
कहीं पिता ही शीलभंगी है.
कहीं नहीं है सुरक्षित कन्या,
हरसूँ लटकी तलवार नंगी है.
इसे रगों में आई गर्मी लिखूँ,
या रिश्तों में आई शीत लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

अपनों से मुख मोड़े जाते,
सभी रिश्ते क्यों तोड़े जाते ?
जिनका अमृत - लहू पिया है,
वृद्धाश्रम में छोड़े जाते !
इसे बदलता हृदय लिखूँ,
या आधुनिकता की रीत लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

नेताओं में नीति नहीं है,
जाति - जाति में प्रीति नहीं है.
क्यूँ यह बहकावे में भूले,
यह भारत की रीति नहीं है.
पुष्प सुवासित इस बगिया में
कैसे पनपी ये भीत, लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

रिश्तों में सच्चाई नहीं है,
परहित अब अच्छाई नहीं है.

एक ही माई के लाल हैं लेकिन,
हिन्दू - मुस्लिम भाई नहीं है.
अखिल विश्व के सम्मुख कैसे
हुई है माटी पलीत, लिखूँ ?
कैसे मैं कोई गीत लिखूँ ?

आओ एक संकल्प करें हम,
एकल राष्ट्रचरित्र वरें हम.
एक देश के लिये जीयें और
एक देश के लिये मरें हम.
भारत माँ हो मन - मन्दिर में,
मैं ये संकल्प पुनीत लिखूँ.

आओ ! मैं एक गीत लिखूँ.
आओ ! मैं एक गीत लिखूँ.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 प				2 न		3 भ	4		5
				6					
7		8 लु	9					10	
		11				12 स			13 ग
				14 ब					
	15 अ		16				17 भो		
18 प					19 अ	20			
		21 गि						22 चो	23
24	25 रो				26 ल		27		
	28			29 जूं					

बाएँ से दाएँ

1. पानी भरने वाली 3. शंका 6. जुबान लड़ाने/जवाब देने वाला 7. लार टपकाने वाला 11. कहीं 12. लगातार 14. पागल 15, अजीब 17. बेधार, धारहीन 18. बांस का गोल पात्र 19. इंतजार करो 21 चमगादड़ 22. पंछी फंसाने वाला चिपचिपा डंडी 24. अन्न नापने का पात्र 26. शिशुवती 28. धुप 29. जूं

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 नि	म्गा		2 स	व	3 कें	र	हा		
च			क		दी			4 बो	5 ज
6 ट	7 म	ड़	उ	8 ल		9 भी	10 म	रा	व
	जा			11 च	व	थि	या		ई
12 झो	र	13 गा		कु		या		14 का	या
र		ड़		15 र	ही		16	ब	
	17 ब	ही	18 र	हा		19 अ	ग	र	20 हा
21 स	ग		ति			गो			ढू
22 के	रा		या		23 स	र	दं	24 ग	
25 ला	य		26 य	मु	ना			27 रु	ख

ऊपर से नीचे

1. डरपोक 2. वादाखिलाफी करने वाला 3. शंकाप्रद 5. सह जाति का 8. लूकाछिपी 10. गली 13. गाय 14. जल. जलना 15. बेवजह, बेमतलब 16. कमरबंध 17. सुबह (हिंदी) 18. गमछा 19. मुरझाया हुआ 20. सीप 22 . चुराने वाला (हिंदी) 23. पहन 25. रोगग्रस्त 27. तबेला